AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

CRACK REET 2022-23 SERIES

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा आयोजित

REET 2022-23

5 वर्षों के पेपर्स का विश्लेषण चार्ट का समावेश

सामाजिक अध्ययन

LEVEL-2
(कक्षा 6 से 8 के लिए)

- REET के नवीनतम् पाठ्यक्रमानुसार सम्पूर्ण थ्योरी
- NCERT एवं RBSE की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित थ्योरी
- 5 वर्षों के विषयवार सॉल्व्ड पेपर्स (2021, 2017, 2015, 2012 एवं 2011) का समावेश
- 500+ महत्वपूर्ण प्रश्नों का अध्यायवार संकलन

Best Text book!

इस पुस्तक की थ्योरी REET के पाठ्यक्रम एवं विगत् वर्षों में पूछे गये प्रश्नों पर आधारित है।

इस पुस्तक का गहन अध्ययन करने से आप REET सामाजिक अध्ययन के प्रश्नों को आसानी से हल कर सकते हैं।

Code	Price	Pages
CB851	₹ 299	376

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा आयोजित

REET
2022-23

सामाजिक अध्ययन

LEVEL-2

(कक्षा 6 से 8 के लिए)

Prepared by:

Examcart Experts

AGRAWAL GROUP OF PUBLICATIONS

EduCart | Agrawal Publications | AGRAWAL EXAMCART

Book Name	**REET सामाजिक अध्ययन Paper-2 (कक्षा 6-8)**
Editor Name	**Rahul Agarwal**
Edition	**Latest**
Published by	**Agrawal Group Of Publications (AGP)**

© All Rights reserved.
ADDRESS (Head office)	**28/115 Jyoti Block, Sanjay Place, Agra, U.P. 282002**
CONTACT	**quickreply@agpgroup.in** We reply super fast
BUY BOOK	**www.examcart.in** Cash on delivery available
WHATSAPP (Head office)	**8937099777**
PRINTED BY	**Schoolcart**
DESKTOP PUBLISHING	**Agrawal Group Of Publications (AGP)**
ISBN	**978-93-5561-252-6**
© COPYRIGHT	**Agrawal Group Of Publications (AGP)**

Disclaimer: This teaching material has been published pursuant to an undertaking given by the publisher that the content does not in any way whatsoever violate any existing copyright or intellectual property right. Extreme care is put into validating the veracity of the content in this book. However, if there is any error found, please do report to us on the below email and we will re-check; and if needed rectify the error immediately for the next print.

ATTENTION

No part of this publication may be re-produced, sold or distributed in any form or medium (electronic, printed, pdf, photocopying, web or otherwise) on Amazon, Flipkart, Snapdeal without the explicit contractual agreement with the publisher. Anyone caught doing so will be punishable by Indian law.

इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक के साथ स्पष्ट संविदात्मक समझौते के बिना अमेज़न, फ्लिपकार्ट, स्नैपडील पर किसी भी रूप या माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक, मुद्रित, पीडीएफ, फोटोकॉपी, वेब या अन्यथा) में फिर से उत्पादित, बेचा या वितरित नहीं किया जा सकता है। जो कोई भी ऐसा करता हुआ पकड़ा जाएगा, वह भारतीय कानून द्वारा दंडनीय होगा।

AGP contributes Rupee One on every book purchased by you to the **Friends of Tribals Society** Organization for better education of tribal children.

11 जनवरी, 2021 का नवीनतम् पाठ्यक्रम (Syllabus)

कक्षा 6 से 8

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET)–2021 माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर पाठ्यक्रम

सामाजिक अध्ययन

❋ **भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं समाज**

सिन्धु घाटी सभ्यता, वैदिक संस्कृति, जैन व बौद्ध धर्म, महाजनपदकाल।

❋ **मौर्य तथा गुप्त साम्राज्य एवं गुप्तोत्तर काल**

राजनीतिक इतिहास और प्रशासन, भारतीय संस्कृति के प्रति योगदान, भारत 600-1000 ईसवी वृहत्तर भारत।

❋ **मध्यकाल एवं आधुनिक काल**

भक्ति और सूफी आन्दोलन, मुगल राजपूत संबंध; मुगल प्रशासन, भारतीय राज्यों के प्रति ब्रिटिश नीति, 1857 का विद्रोह, भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश प्रभाव, पुनर्जागरण एवं सामाजिक सुधार, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन (1885-1947)।

❋ **भारतीय संविधान एवं लोकतंत्र**

भारतीय संविधान का निर्माण व विशेषताएँ, उद्देशिका, मूल अधिकार एवं मूल कर्त्तव्य, सामाजिक न्याय, बाल अधिकार व बाल संरक्षण, लोकतंत्र में निर्वाचन व मतदाता जागरूकता।

❋ **सरकार : गठन एवं कार्य**

संसदय राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं मत्रिपरिषद् उच्चतम न्यायालय, राज्य सरकार, पंचायती राज एवं नगरीय
स्व-शासन (राजस्थान के विशेष संदर्भ में), जिला प्रशासन व न्याय व्यवस्था।

❋ **पृथ्वी एवं हमारा पर्यावरण**

अक्षांश, देशान्तर, पृथ्वी की गतियाँ, वायुदाब एवं पवनें, चक्रवात एवं प्रति चक्रवात, सूर्य एवं चन्द्रग्रहण, पृथ्वी के मुख्य जलवायु कटिबन्ध, जैवमंडल, पर्यावरणीय समस्याएँ एवं समाधान।

❋ **भारत का भूगोल एवं संसाधन**

भू-आकृति, प्रदेश, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, वन्य जीवन, बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएँ, मृदा, कृषि फसलें, उद्योग, खनिज, परिवहन, जनसंख्या, मानव संसाधन, विकास के आर्थिक एवं सामाजिक कार्यक्रम।

❋ **राजस्थान का भूगोल एवं संसाधन**

भौतिक प्रदेश, जलवायु एवं अपवाह प्रणाली, झीलें, मृदा जल-संरक्षण एवं संग्रहण, कृषि फसलें, खनिज एवं ऊर्जा संसाधन, राजस्थान की प्रमुख नहरें एवं नदी घाटी परियोजनाएँ, परिवहन, उद्योग एवं जनसंख्या, पर्यटन स्थल, वन एवं वन्य जीवन।

❋ **राजस्थान का इतिहास**

प्राचीन सभ्यताएँ एवं जनपद, राजस्थान के प्रमुख राजवंशों का इतिहास, 1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान, राजस्थान में प्रजामण डल जनजातीय व किसान आंदोलन, राजस्थान का एकीकरण, राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व।

❋ **राजस्थान की कला व संस्कृति**

राजस्थान की विरासत (दुर्ग, महल, स्मारक) राजस्थान के मेले, त्योहार एवं लोक कलाएँ, राजस्थान की चित्रकला, राजस्थान के लोक नृत्य एवं लोक नाट्य, लोक देवता, लोक संत, लोक संगीत एवं संगीत वाद्य यंत्र, राजस्थान की हस्तकला एवं स्थापत्य कला, राजस्थान की वेशभूषा एवं आभूषण, राजस्थान की भाषा एवं साहित्य।

❋ **बीमा एवं बैंकिंग प्रणाली**

बीमा एवं बैंक के प्रकार, भारतीय रिजर्व बैंक और उसके कार्य, सहकारिता एवं उपभोक्ता जागरूकता।

❋ **शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे-I**

सामाजिक विज्ञान/सामाजिक अध्ययन की संकल्पना एवं प्रकृति; कक्षा-कक्ष की प्रक्रियाएँ, क्रियाकलाप एवं विमर्श; सामाजिक विज्ञान/सामाजिक अध्ययन के अध्यापन की समस्याएँ; समालोचनात्मक चिन्तन का विकासय।

❋ **शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे-II**

पृच्छा/आनुभविक साक्ष्य, शिक्षण अधिगम सामग्री एवं सहायक सामग्री, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी प्रायोजना कार्य, सीखने के प्रतिफल, मूल्यांकन।

REET (6 to 8) के पिछले वर्षों के हल प्रश्न-पत्रों का विश्लेषण चार्ट

सामाजिक अध्ययन

क्र. सं.	अध्याय का नाम	2021	2017	2015	2012	2011
1.	प्राचीन भारत का इतिहास	4	7	7	7	9
2.	मध्यकालीन भारत का इतिहास	1	3	3	4	9
3.	आधुनिक भारत का इतिहास	4	3	5	3	7
4.	भारतीय संविधान तथा लोकतंत्र	14	10	11	8	9
5.	भारत का भूगोल	5	10	5	4	6
6.	विश्व का भूगोल एवं पर्यावरण	5	6	10	11	5
7.	भारतीय अर्थव्यवस्था	1	–	–	1	1
8.	राजस्थान का भूगोल एवं संसाधन	3	4	5	4	4
9.	राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति	11	7	4	4	5
10.	राजस्थान का राजनैतिक एवं प्रशासनिक ढाँचा	9	–	–	4	1
11.	शिक्षाशास्त्र	3	10	10	10	4
	कुल	60	60	60	60	60

विषय-सूची

अध्याय		पृष्ठ सं.
1.	भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं समाज	1-30
2.	मौर्य, गुप्त तथा गुप्तोत्तर काल	31-48
3.	मध्यकाल एवं आधुनिक काल	49-115
4.	भारतीय संविधान एवं लोकतंत्र	116-139
5.	सरकार : गठन एवं कार्य	140-163
6.	पृथ्वी एवं हमारा पर्यावरण	164-174
7.	भारत का भूगोल एवं संसाधन	175-213
8.	राजस्थान का भूगोल एवं संसाधन	214-266
9.	राजस्थान का इतिहास	267-298
10.	राजस्थान की कला एवं संस्कृति	299-340
11.	बीमा एवं बैंकिंग प्रणाली	341-351
12.	अध्यापन संबंधी मुद्दे	352-358

विषयवार सॉल्व्ड पेपर्स

1.	राजस्थान शिक्षक पात्रता (6-8) परीक्षा, 2021 हल–प्रश्न पत्र	1-9
2.	राजस्थान शिक्षक पात्रता (6-8) परीक्षा, 2017 हल–प्रश्न पत्र	10-13
3.	राजस्थान शिक्षक पात्रता (6-8) परीक्षा, 2015 हल–प्रश्न पत्र	14-17
4.	राजस्थान शिक्षक पात्रता (6-8) परीक्षा, 2012 हल–प्रश्न पत्र	18-26
5.	राजस्थान शिक्षक पात्रता (6-8) परीक्षा, 2011 हल–प्रश्न पत्र	27-34

अध्याय

3

मध्यकाल एवं आधुनिक काल

1. मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोत (Sources of Medieval India)

(I) साहित्यिक स्रोत (Literary Sources)

लेखक	पुस्तक
हसन निजामी	ताज–उल–मासिर
अलबरूनी	तहकीक–ए–हिन्द
मिन्हाज–उस–सिराज	तबाकत–ए–नासिरी
अमीर खुसरो	नूह सिपेहर, किरान–उस–सादेन, खजाय– उल–फुतुह, मिफ्ताह–उल–फुतुह, तुगलक– नामा
जियाउद्दीन बरनी	तरीख–ए–फिरोजशाही, फतवा–ए–जहाँदारी
फिरोज़शाह तुगलक	फुतहात–ए–फीरोज़शाही
इसमी	फुतूह–उस–सलातीन
अमीर तैमूर लंग	मलफूजात–ए–तिमूरी (आत्मकथा)
याहिया बिन अहमद	तारीख–ए–मुबारकशाही
शेख रिजकुल्ला	वाकियात–ए–मुश्ताकी और तारीख–ए– मुश्ताकी
अमीर हसन सिज्जी	फबाद–उल फआद

(II) विदेशी यात्रियों द्वारा विवरण (Details by Foreigner Travellers)

- **(i) इब्नबतूता (1333 ई.) :** यह मोरक्को का यात्री था, जो मोहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में भारत में रहा। इसकी रचना **रेहाला** थी।
- **(ii) अब्दुल रज्जाक (ईरानी राजदूत) :** यह देवराय-II के शासन काल में भारत आया।
- **(iii) मार्कोपोलो (इटली) :** 13वीं शताब्दी में भारत आया।
- **(iv) निकोलो कोण्टी (इटली का पर्यटक) :** इसने 1420 ई. में दकन की यात्रा की।
- **(v) डोमिंगोज पायज (पुर्तगाली यात्री) :** यह विजयनगर के शासक कृष्णदेव राय के समय भारत आया।
- **(vi) बारबोसा (पुर्तगाली यात्री) :** इसने विजयनगर के शासन व्यवस्था का विवरण दिया।
- **(vii) नुनीज :** यह पुर्तगाली घोड़े का व्यापारी था, जो विजयनगर दरबार में रहा।

(III) स्मारक (Monuments)

- **(i) शेरशाह का मकबरा :** सासाराम बिहार
- **(ii) ऐबक का मकबरा :** लाहौर

2. भारत पर अरब एवं तुर्क आक्रमण (Arab & Turkish Invasion on India)

(I) अरबों का आक्रमण (Arab Invasion)

- सर्वप्रथम अरबों ने 636 ई. में बम्बई के निकट थान्ना को खलीफा उमर के समय जीतने की असफल कोशिश की।
- इसके पश्चात् भड़ौच, देवलखाड़ी तथा मकरान पर आक्रमण हुए।
- 8वीं सदी के प्रथम दशक में 'इब्न–अल–अरीहल' विहट्री ने मकरान पर अस्थायी कब्जा कर लिया। जिससे सिंध पर आक्रमण का द्वार खुल गया।
- सिंध के शासक दाहिर तथा उसके पुत्र जय सिंह ने इराकी शासक द्वारा भेजे गए बैडुल्लाह तथा बुडेल को उन्होंने पराजित कर मृत्यु के घाट पहुँचा दिया।
- अरब खलीफा **अल वाज़िद** के आदेश पर **मुहम्मद बिन कासिम** ने 712 ई. मकरान के रास्ते, स्थल मार्ग से सिंध पर प्रहार किया। यह हमला सर्वप्रथम देवल (कराँची) पर हुआ जिसमें देवल का पतन हुआ।
- उसके बाद मोहम्मद बिन कासिम ने 712 ई. में चाचा के बेटे **दाहिर** पर हमला कर मुलतान तक के इलाके पर विजय प्राप्त की। दाहिर राबौर के युद्ध में मारा गया। उसकी राजधानी **अरोर** थी।
- सिंध पर कासिम के आक्रमण का प्रमुख उद्देश्य इस्लाम का प्रचार, भारत की आर्थिक सम्पन्नता एवं साम्राज्य के फैलाव की लालसा थी।

(II) तुर्कों का आक्रमण (Turkish Invasion)

भारत भूमि में अंदर तक प्रवेश पाने का श्रेय गजनवी वंश के सुल्तान महमूद को जाता है, किन्तु भारत में राज्य स्थापित करने का श्रेय शंसबनी–वंश के मुहम्मद गौरी को प्राप्त है।

(i) महमूद गजनवी (998-1030 ई. का आक्रमण) (Invasion of Mehmud Ghaznavi)

- यमीनी वंश जिसे **गजनवी** वंश के नाम से पुकारा जाता था, वह ईरान के शासकों की एक शाखा थी।
- अल्पतगीन ने इस वंश का एक स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। बाद में उसके दामाद सुबुक्तगीन ने गद्दी सम्भाली। सुबुक्तगीन के समय से गजनी और हिन्दूशाही राज्य का लंबा संघर्ष आरंभ हुआ जो सुल्तान महमूद के समय तक चलता रहा और जिसका आखिरी परिणाम हिन्दूशाही राज्य का नष्ट

होना हुआ।

- सुबुक्तबीन की मृत्यु के बाद 998 ई. में **महमूद, गजनी गद्दी बैठा और 1030 ई. तक शासन करता रहा।** उसने 1000 ई. से लेकर 1027 ई. तक भारत पर 17 बार आक्रमण किया।
- उसका प्रमुख उद्देश्य भारत की सम्पत्ति को लूटना और उस धन से अपने गजनी साम्राज्य को मजबूती प्रदान करना था।
- प्रथम आक्रमण 1000 ई. में हुआ।
- महमूद का दूसरा आक्रमण 1001 ई. में हिन्दूशाही राजा **जयपाल** के विरुद्ध था। पेशावर के युद्ध में **जयपाल** हार गया और उसने आत्मदाह कर लिया। (जयपाल का शासन काबुल व पंजाब क्षेत्र में था और वैहन्द उसकी राजधानी थी)।
- 1009 ई. में महमूद ने जयपाल के पुत्र आनन्दपाल को हरा दिया। **1014 ई. में उसने थानेश्वर को लूटा। महमूद 1018 ई. में मथुरा व कन्नौज पर आक्रमण के लिए आया।** यहाँ से उसने आक्रमण कर सम्पत्ति लूटी।
- 1025 ई. में महमूद ने **सोमनाथ (गुजरात)** पर आक्रमण कर भव्य शिव मंदिर को लूटा और मंदिर को पूर्णतया नष्ट कर दिया। इस समय यहाँ का शासक भीम-I था।
- महमूद का अंतिम अभियान 1027 ई. में जाटों के विरुद्ध था। उसकी मृत्यु 1030 ई. में हुई।
- महमूद के संरक्षण में **अलबरूनी, फिरदौसी, उत्बी एवं फर्रुखी** आदि विद्वान थे।
- अलबरूनी की रचना **किताब–उल–हिन्द (तारीख–ए–हिन्द)** है। यह अरबी भाषा में लिखी है। अलबरूनी ने दो संस्कृत पुस्तकों का अरबी में अनुवाद किया–सांख्य (कपिल मुनि) एवं महाभाष्य (पतंजलि)।
- उतबी के अनुसार महमूद गजनवी के आक्रमण का उद्देश्य **जिहाद** था। जिसका मूल उद्देश्य इस्लाम का प्रसार और **बुतपरस्ती** (मूर्ति पूजा) को समाप्त करना था।
- महमूद गजनवी सुल्तान की उपाधि ग्रहण करने वाला पहला शासक था।
- महमूद गजनवी ने सेना में **तिलक** और **सेवंद राय** जैसे हिन्दू उच्च पदों पर थे।

(ii) शिहाबुद्दीन उर्फ मुईजुद्दीन मुहम्मद गौरी का आक्रमण (Invasion of Shihabhuddin Alias Muizuddin Mohmmad Ghori)

- गौरी वंश का उदय 12वीं शताब्दी के बीच हुआ। यह तुर्कों का शंसबनी वंश था जो पूर्वी ईरान से आकर गोर प्रदेश में पूर्णतः बस गया था।
- मुहम्मद गौरी ने 12वीं शताब्दी में भारत पर आक्रमण किए और यहाँ पर अपने राज्य की स्थापना की।
- मुहम्मद गौरी का प्रथम आक्रमण 1175 ई. में **मुल्तान** पर हुआ। यह आक्रमण गोमल दर्रे से होकर किया था। इसके बाद उसने उच्छ को भी अपने आधीन कर लिया।
- 1178 ई. में गौरी ने गुजरात पर आक्रमण किया, लेकिन मूलराज द्वितीय या भीम द्वितीय ने आबू पहाड़ के पास गौरी को हरा दिया। यह भारत में गौरी की पहली हार थी।
- 1179 ई. में गौरी ने पेशावर को जीता, 1185 ई. में सियालकोट को जीता और 1186 ई. में उसने संपूर्ण पंजाब को जीतकर गजनवी का राजवंश समाप्त कर दिया।
  - **तराइन का प्रथम युद्ध :** यह युद्ध 1191 ई. भटिण्डा के निकट तराइन में हुआ जिसमें पृथ्वीराज तृतीय ने मुहम्मद गौरी को हरा दिया।
  - **तराइन का द्वितीय युद्ध :** यह युद्ध 1192 ई. में हुआ जिसमें मुहम्मद गौरी विजयी रहा और पृथ्वीराज तृतीय को कैद कर लिया गया और बाद में मृत्यु दण्ड दे दिया गया।
  - **चन्दावर का युद्ध :** यह युद्ध 1194 ई. में हुआ जिसमें गौरी ने कन्नौज के शासक जयचन्द को पराजित कर उसे मार डाला।
- 1193 ई. में गौरी के गुलाम कुतुबद्दीन ऐबक ने मेरठ और दिल्ली को अधीन बनाया। 1193 ई. में दिल्ली भारत में गौरी के राज्य की राजधानी बन गई।
- ऐबक ने 1194 ई. में अजमेर को जीता और वहाँ पर हिन्दू एवं जैन मंदिरों को नष्ट करके उनके अवशेषों से दिल्ली में कुव्वात–उल–इस्लाम मस्जिद का निर्माण करवाया। बाद में 1196 ई. में अजमेर में संस्कृत विश्वविद्यालय के स्थान पर 'अढ़ाई दिन का झोंपड़ा' नामक मस्जिद बनवाई।
- 1205 ई. में गौरी का अंतिम मुकाबला खोखरों से हुआ।
- मुहम्मद गौरी जब वापस गजनी जा रहा था तो दमयक नामक स्थान पर 15 मार्च, 1206 ई. को उसकी हत्या कर दी गई।
- 1206 ई. में गौरी की मृत्यु के बाद ऐबक ने भारत में गुलाम वंश की नींव रखी।
- मोहम्मद गौरी के समय प्रचलित सिक्कों पर एक तरफ कलमा खुदा होता था तथा दूसरी तरफ लक्ष्मी की आकृति अंकित रहती थी।

3. दिल्ली सल्तनत [1206-1526] ई. (Delhi Sultanate)

- 320 वर्षों में दिल्ली पर मुस्लिम सुल्तानों के पाँच अलग–अलग वंशों ने शासन किया–
  - गुलाम वंश या इलबारी वंश [1206-1290] ई.
  - खिलजी वंश [1290-1320] ई.
  - तुगलक वंश [1320-1444] ई.
  - सैयद वंश [1414-1451] ई.
  - लोदी वंश [1451-1526] ई.

(I) दिल्ली सल्तनत के वंश (Dynasties of Delhi Sultanats)

(i) गुलाम वंश या इलबारी वंश [1206-1290] ई. (Slave/ Ilbari Dynasty)

दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत सर्वप्रथम गुलाम वंश की स्थापना हुई। गुलाम वंश (या मामलुक वंश) की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा हुई।

(A) कुतुबुद्दीन ऐबक [1206-1210] ई. (Qutubuddin Aibak)

- ऐबक को भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक माना जाता है।
- ऐबक का राज्याभिषेक जून 1206 में हुआ। उसने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।
- 1208 ई. में गोरी के भतीजे गयासुद्दीन महमूद ने ऐबक को दास मुक्ति पत्र देकर उसे सुल्तान की उपाधि प्राप्त कराई।
- ऐबक ने न तो अपने नाम का खुतबा पढ़वाया और न ही अपने नाम के सिक्के चलवाये।
- वह लाखों में दान दिया करता था इसलिए उसे **लाखबक्श** कहा जाता था।
- ऐबक को **'हजरते आला'** (न्यायपूर्ण राज) तथा मिनहाज उस–सिराज ने इसे **'हातिम द्वितीय'** कहा है।
- ऐबक के दरबार में **हसन निज़ामी** एवं **फक्र–ए–मुदब्बिर** रहते थे।
- ऐबक ने सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर दिल्ली में **कुतुबमीनार का निर्माण करवाया जिसे इल्तुतमिश ने पूरा किया।**
- उसने दिल्ली में **कुव्वत–उल–इस्लाम** और अजमेर में **अढ़ाई दिन का झोपड़ा** नामक मस्जिदों का निर्माण करवाया।
- 1210 में **चौगान (पोलो)** खेलते हुए घोड़े से गिरकर ऐबक की मृत्यु लाहौर में हुई।
- कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद उसके सरदारों ने उसके पुत्र **आरामशाह** को लाहौर की गद्दी पर बैठा दिया, लेकिन इल्तुतमिश ने उसके पुत्र को अपदस्थ करके सिंहासन पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

(B) इल्तुतमिश [1211-1236] ई. (Iltutmish)

- इल्तुतमिश ऐबक का गुलाम एवं दामाद दोनों था।
- इल्तुतमिश शम्शी वंश का था एवं **इल्बरी तुर्क** था।
- वस्तुतः इल्तुतमिश दिल्ली का पहला सुल्तान था। उसने सुल्तान के पद की स्वीकृति गौर के किसी शासक से नहीं बल्कि खलीफा से प्राप्त की।
- उसने दिल्ली की गद्दी के दावेदार ताजुद्दीन यल्दौज और नासिरुद्दीन कुबाचा को समाप्त किया।
- उसने दिल्ली को अपनी राजधानी बनवाया और अपने नाम के सिक्के चलाए। इस तरह उसे दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है।
- उसने चालीस गुलाम सरदारों के गुट अर्थात् **तुर्कान–ए–चिहलगानी** के संगठन की स्थापना की।
- इल्तुतमिश की दूरदर्शिता के कारण तुर्कराज्य, मंगोल के आक्रमण से बचा रहा।
- उसने **इक्ता व्यवस्था** लागू की और 1226 ई. में बंगाल को जीतकर उसे दिल्ली सल्तनत का इक्ता (सूबा) बनाया।
- इल्तुतमिश ने 1226 में ही रणथम्भौर पर विजय प्राप्त की और परमारों की राजधानी मंदौर (मंदसौर) पर अपना अधिकार स्थापित किया।
- उसने शुद्ध अरबी सिक्के चलाए। चाँदी का **टंका** और ताँबे का **जीतल** उसी ने आरम्भ किया।
- इल्तुतमिश की सेना **इश्म–ए–कल्ब** या **कल्ब–ए–सुल्तानी** कहलाती थी।
- इल्तुतमिश ने **कुतुबमीनार** के निर्माण कार्य को पूरा करवाया। उसे **मकबरा निर्माण शैली का जन्मदाता** भी कहा जाता है। उसने दिल्ली में स्वयं का मकबरा भी बनवाया। उसने बदायूँ में **हौज–ए–खास (शम्सी ईदगाह)** का निर्माण करवाया।
- मिन्हाज–उस–सिराज, इल्तुतमिश का दरबारी लेखक था।
- 1236 ई. बामियान के विरुद्ध अभियान पर, इल्तुतमिश बीमार हो गया जिसके कारण उसे दिल्ली वापस आना पड़ा जहाँ अप्रैल, 1236 में उसकी मृत्यु हो गई और दिल्ली में उसी के द्वारा निर्मित **सुल्तानगढ़ी** के मकबरे में उसके शव को दफनाया गया।
- तुर्क सरदारों ने सुल्तान से शासन के अधिकार छीनकर **नायब** या **नायब–ए–मामलिकात** को सौंप दिए। यह पद **एतगीन** को दिया गया ।
- 1241 ई. में जब मंगोलों ने पंजाब पर आक्रमण किया तब तुर्की सरदारों ने बगावत कर बहरामशाह को बन्दी बना लिया और 1242 ई. में उसकी हत्या कर डाली।

(C) रजिया [1236-1240] ई. (Razia)

- इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद रुकनुद्दीन फिरोजशाह अपनी माँ शाह तुर्कान के सहयोग से गद्दी पर बैठा। शाह तुर्कान के अत्याचारों से परेशान होकर जन समूह द्वारा उसे अपदस्थ किया गया और रजिया को सुल्तान बनाया गया।
- दिल्ली सल्तनत के इतिहास में रजिया एकमात्र मुस्लिम महिला शासिका बनी। वह प्रथम तुर्क महिला शासिका भी थी।
- रजिया ने पर्दा त्याग कर पुरुषों की भाँति कोट व कुलाह (टोपी) पहनना शुरू कर दिया।
- रजिया ने **एतगीन** को बदायूँ का इक्तादार एवं **अल्तूनिया** को तबरहिन्द (भटिण्डा) का इक्तादार के पद पर नियुक्त किया।
- अल्तूनिया ने 1240 ई. में सरहिन्द विद्रोह कर दिया। अंततः रजिया ने अल्तूनिया से विवाह कर लिया। 13 अक्टूबर, 1240 ई. को कैथल के निकट कुछ डाकुओं ने रजिया की हत्या कर दी।

- रजिया की असफलता का मुख्य कारण तुर्की गुलामों की महत्त्वाकांक्षाएँ थीं।

(D) मुइज्जुद्दीन बहरामशाह [1240-1242] ई. (Muizuddin Bahramshah)

रजिया को तबरहिन्द प्रस्थान करने के बाद तुर्क–सरदारों ने इल्तुतमिश के तीसरे पुत्र बहरामशाह को सिंहासन पर बैठा दिया।

(E) अलाउद्दीन मसूदशाह [1242-1246] ई. (Alauddin Masuds-hah)

- मसूदशाह, इल्तुतमिश के पुत्र सुल्तान फिरोज़शाह का पुत्र था। इसके शासन में समस्त शक्तियाँ नायब के पास थीं।
- बलबन ने अमीर–ए–हाजिब का पद प्राप्त करने के पश्चात् अपनी शक्ति बढ़ानी शुरू कर दी।
- जून 1246 ई. में बलबन ने मसूदशाह को सिंहासन से हटा दिया। मसूदशाह की मृत्यु कारागार में हुई।

(F) नासिरुद्दीन महमूद [1246-1265] ई. (Nasiruddin Mehmud

- नासिरुद्दीन महमूद 10 जून, 1246 ई. को 16 वर्ष की अवस्था में सिंहासन पर बैठा। उसके सुल्तान बनने के समय राज्य शक्ति के लिए जो संघर्ष सुल्तान और उसके तुर्की सरदारों के बीच चल रहा था, वह समाप्त हो गया।
- नासिरुद्दीन के शासनकाल में समस्त शक्ति बलबन के हाथों में थी। 1249 में उसने बलबन को **उलुग खाँ** की उपाधि दी और नायब–ए–मामलिकात का पद देकर कानूनी रूप से शासन के संपूर्ण अधिकार बलबन को सौंप दिए।
- 1265 ई. में नासिरुद्दीन की मृत्यु होने पर बलबन ने स्वयं को सुल्तान घोषित किया तथा उसका उत्तराधिकारी बना।

(G) गियासुद्दीन बलबन [1265-1287] ई. (Ghiyasuddin Balban)

- बलबन इल्तुतमिश की भाँति इल्बरी तुर्क था। उसने 20 वर्ष तक वजीर की हैसियत से काम किया तथा 20 वर्ष तक सुल्तान के रूप में शासन किया।
- रजिया के समय बलबन **अमीर–ए–शिकार** के पद पर था।
- बहारामशाह के समय वह **अमीर–ए–आखुर** (अश्वशाला का प्रधान) बना।
- बलबन के राजत्व सिद्धांत की दो मुख्य विशेषताएँ थीं–प्रथम, सुल्तान का पद ईश्वर के द्वारा दिया हुआ होता है, और द्वितीय, सुलतान का निरंकुश होना आवश्यक है।
- बलबन ने चालीस तुर्क सरदारों के गुट **'तुर्कान–ए–चिहालगानी'** की समाप्ति की।
- बलबन ने कई ईरानी परंपराएँ जैसे **सिजदा** (भूमि पर लेटकर अभिवादन) एवं पैबोस (सुल्तान के चरणों को चूमना) प्रारंभ करवाई।
- बलबन ने **'रक्त व लौह की नीति'** का पालन किया।
- उसने ही ईरानी त्योहार **नौरोज** भी आरंभ किया।
- वह स्वयं को फिरदौस के शाहनामा में वर्णित अफरासियाब वंश का बताता था।
- बलबन ने एक पृथक सैन्य विभाग **दीवान–ए–अर्ज** की स्थापना की।
- बलबन ने **जिल्ल–ए–इलाही** (ईश्वर का प्रतिबिम्ब) की उपाधि धारण की थी।
- बलबन ने स्थापत्य के क्षेत्र में दिल्ली में **लाल महल** तथा अपना **'बलबन का मकबरा'** बनवाया। यह सल्तनतकालीन पहला ऐसा मकबरा है जिसमें शुद्ध इस्लामी शैली वाले **'मेहराब'** का प्रयोग किया गया।

(H) कैकुबाद और शम्सुद्दीन क्यूमर्स [1287-1290] ई. (Qaiqubad and Shamsuddin Kayumars)

- बलबन ने अपनी मृत्यु से पहले अपने बड़े पुत्र मुहम्मद के पुत्र कैखुसरव को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया, किन्तु तुर्की सरदारों ने उसे मुल्तान का प्रान्तीय शासक बना दिया।
- दिल्ली के कोतवाल फखरूद्दीन मुहम्मद ने एक षड्यंत्र के तहत बलबन के दूसरे पुत्र बुगराखाँ के पुत्र कैकुबाद को सुल्तान बना दिया।
- कुछ समय बाद कैकुबाद लकवाग्रस्त हो गया और तुर्क–सरदारों ने उसके अबोध पुत्र क्यूमर्स को सिंहासन पर बैठा दिया।
- 1290 ई. में जलालुद्दीन खिलजी ने शम्सुद्दीन क्यूमर्स की हत्या कर दी और एक नए वंश की स्थापना की। जिसका नाम था खिलजी वंश।
- गुलाम वंश का अंतिम शासक **शम्सुद्दीन क्यूमर्स** था।

(ii) खिलजी वंश [1290-1320] ई. (Khilji Dynasty)

भारत आने से पूर्व खिलजी जाति अफगानिस्तान में हेलमन्द नदी की घाटी के प्रदेश में रहती थी। दिल्ली के सिंहासन पर खिलजी वंश का आधिपत्य हो जाने से भारत में तुर्कों की श्रेष्ठता समाप्त हो गई। इसके साथ ही शासन में भारतीय और गैर तुर्क मुसलमानों का प्रभाव बढ़ गया।

(A) जलालुद्दीन फिरोजशाह खिलजी [1290-1296] ई. (Jalaluddin Firozshah Khilji)

- जलालुद्दीन, खिलजी वंश का संस्थापक था। उसने किलोखरी (कूलागढ़ी) को अपनी राजधानी बनाया था।
- सुल्तान बनने के समय जलालुद्दीन **70 वर्ष** का था। वह दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था जिसने अपने विचारों को स्पष्ट रूप से रखा कि राज्य का आधार प्रजा का समर्थन होना चाहिए। वह हिन्दुओं के प्रति उदार तथा सहिष्णु था। उसका मानना था कि भारत की

अधिकांश जनता हिन्दू है। अतः यहाँ सही अर्थों में कोई 'इस्लामी राज्य' नहीं हो सकता।

- इसके शासनकाल में तीन प्रमुख विद्रोह हुए –
  (a) मलिक छज्जू का विद्रोह
  (b) ताजुद्दीन कुची का षड्यंत्र
  (c) सीदी मौला का षड्यंत्र (जिसे बाद में फाँसी दे दी गई)
- जलालुद्दीन के समय की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना अलाउद्दीन का देवगिरि का आक्रमण था। रामचन्द्र देव देवगिरि का शासक था।
- अमीर खुसरो और हसन देहलवी दोनों ही जलालुद्दीन के दरबार में रहते थे।
- 20 जुलाई, 1296 को अलाउद्दीन के इशारे पर इख्तियारुद्दीन हूद द्वारा छलपूर्वक जलालुद्दीन का वध कर दिया गया।
- जलालुद्दीन खिलजी ने 'दीवान–ए–वकूफ' नामक व्यय विभाग की स्थापना की।
- जलालुद्दीन खिलजी ने अपनी पुत्री का विवाह चंगेज खाँ के वंशज **उलूग खाँ** के साथ करके मंगोलों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाया। इसके शासन में 4000 मंगोल **'नवीन मुसलमान'** के रूप में दिल्ली के पास **'मुगरलपुर'** में बस गये।

(B) अलाउद्दीन खिलजी [1296-1316] ई. (Alauddin Khilji)

- अलाउद्दीन के बचपन का नाम अली गुर्शस्प था।
- सुल्तान बनने से पूर्व अलाउद्दीन अमीर–ए–तुजुक के पद पर था।
- 22 अक्टूबर, 1296 को अलाउद्दीन ने दिल्ली में प्रवेश किया जहाँ बलबन के लाल महल में उसने अपना राज्याभिषेक कराया और दिल्ली का सुल्तान बना तथा **सिकन्दर–ए–सानी** की उपाधि ग्रहण की।

(a) साम्राज्य विस्तार (Expansion of Empire)

- अलाउद्दीन की आकांक्षाएँ साम्राज्यवादी थीं। उत्तर भारत के राज्यों के प्रति उसकी नीति राज्य का विस्तृत विस्तार करने की थी, जबकि दक्षिण भारत में वह राज्यों से अपनी अधीनता स्वीकार करवाकर और वार्षिक कर लेकर ही संतुष्ट था।

(b) विजय अभियान (Conquests/Expeditions)

- **उत्तर भारत :** गुजरात → रणथम्भौर → चितौड़ → मालवा → धार → चन्देरी → शिवाना → जालौर।
- **दक्षिण भारत :** देवगिरि → वारंगल → द्वारसमुद्र → मालाबार।

मलिक मोहम्मद जायसी की रचना पद्मावत के अनुसार अलाउद्दीन के वर्ष 1303 के चितौड़ अभियान का कारण यहाँ के शासक राणा रतन सिंह की पत्नी पद्मिनी को प्राप्त करना था।

अलाउद्दीन खिलजी की विजयें (Victories of Alauddin Khilji)

क्र. सं.	नाम	वर्ष	अलाउद्दीन का सेनापति	पराजित शासक	विशेषताएँ
उत्तर भारत की विजय (Conquests in North India)					
1.	गुजरात विजय	1298 ई.	उलूग खाँ एवं नुसरत खाँ	बघेल राजा कर्ण	राजा कर्ण ने पुत्री देवल देवी को लेकर देवगिरि में शरण ली। पत्नी कमला देवी से अलाउद्दीन ने विवाह किया। यहीं मलिक काफूर नामक हिजड़े को 1000 दीनार में खरीदा, इस कारण यह **'हजार दीनारी'** कहलाया।
2.	जैसलमेर विजय	1299 ई.	अलाउद्दीन	दूदा एवं तिलक सिंह	–
3.	रणथम्भौर विजय	1301 ई.	अलाउद्दीन	हम्मीर देव	सेनापति नुसरत खाँ की मृत्यु।
4.	चित्तौड़ विजय	1303 ई.	अलाउद्दीन	राणा रतन सिंह	उसने चित्तौड़ का नाम अपने पुत्र खिज्र खाँ के नाम पर **खिज्राबाद** रखा। अलाउद्दीन ने राणा रतन सिंह की सुन्दर पत्नी को प्राप्त करने के लिए आक्रमण किया, लेकिन जौहर कर लेने से प्राप्त न हो सकी।

क्र. सं.	नाम	वर्ष	अलाउद्दीन का सेनापति	पराजित शासक	विशेषताएँ
5.	मालवा विजय	1305 ई.	आईन–उल–मुल्क	महलक देव	–
6.	जालौर विजय	1304 ई.	कमालुद्दीन गुर्ग	कान्हण देव	–
दक्षिण भारत की विजय (Conquests in South India)					
7.	देवगिरि विजय	1296 ई.	मलिक काफूर	रामचन्द्र देव	यहाँ से प्राप्त हुई राजा कर्ण की पुत्री देवल देवी का विवाह अलाउद्दीन ने अपने पुत्र खिज्र खाँ से किया। उसने रामचन्द्र देव से मित्रता की तथा **राय रायन** की उपाधि प्रदान की और आगे के अभियानों में मदद ली।
8.	तेलंगाना विजय	1309 ई.	मलिक काफूर	प्रताप रुद्र देव	प्रताप रुद्र देव ने मलिक काफूर को यहीं पर विश्व प्रसिद्ध **कोहिनूर हीरा** भेंट किया।
9.	होयसल विजय	1301 ई.	मलिक काफूर	वीर बल्लाल तृतीय	इसकी राजधानी **द्वारसमुद्र** थी।
10.	पाण्ड्य	1311 ई.	मलिक काफूर	वीर पाण्ड्य/	दक्षिण के इस राज्य ने अलाउद्दीन की
				सुन्दर पाण्ड्य	अधीनता स्वीकार नहीं की।
11.	देवगिरि पर द्वितीय विजय	1312 ई.	मलिक काफूर	शंकर देव	देवगिरि के अधिकांश भाग को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

मलिक काफूर (Malik Kafur)

अलाउद्दीन खिलजी ने गुजरात अभियान (1298 ई.) के दौरान **मलिक काफूर** नामक हिजड़े को 1000 दीनार में खरीदा था। इसी कारण इसे **'हजार दीनारी'** कहा जाता है। अलाउद्दीन के दक्षिण भारत की विजय का प्रमुख श्रेय उसके नायब मलिक काफूर को ही जाता है। उसने 1307 ई. में सर्वप्रथम देवगिरि पर आक्रमण कर वहाँ के शासक रामचन्द्र देव को हरा दिया। इसके बाद काफूर ने तेलंगाना पर आक्रमण किया। वहाँ के शासक प्रतापरुद्र देव ने आत्मसमर्पण कर मलिक काफूर को कोहिनूर का हीरा सौंपा जिसे मलिक ने अलाउद्दीन को सौंपा।

(c) अलाउद्दीन का राजत्व सिद्धान्त (Alauddin's Theory of Kin-gship) : अलाउद्दीन ने धर्म और धार्मिक वर्ग को शासन में हस्तक्षेप नहीं करने दिया। उसने खलीफा से अपने सुल्तान के पद की स्वीकृति लेने की आवश्यकता नहीं समझी। इस प्रकार उसने शासन में न तो इस्लाम के सिद्धांतों का सहारा लिया, न उलेमा वर्ग की सलाह ली और न ही खलीफा के नाम का सहारा लिया। अलाउद्दीन पूर्णतः निरंकुश राजतंत्र में विश्वास करता था।

अलाउद्दीन का मन्त्रिपरिषद् (Ministry of Alauddin)

दीवाने वजारात	:	वजीर (मुख्यमंत्री)
दीवाने इंशा	:	शाही आदेशों को पालन करवाना
दीवाने आरिज	:	सैन्य मंत्री
दीवाने रसातल	:	विदेश विभाग

(d) प्रशासनिक व्यवस्था (Administrative System)

- अलाउद्दीन पूर्णतः व्यक्ति की योग्यता पर बल देता था।
- उसने गुप्तचर विभाग को संगठित किया। इस विभाग का मुख्य अधिकारी **वरीद–ए–मुमालिक** था।

(e) राजस्व (कर) एवं लगान व्यवस्था (Taxes & Revenue System)

- अलाउद्दीन ने लगान (खराज) पैदावार का 1/2 भाग निर्धारित किया। वह पहला सुल्तान था जिसने भूमि को नापकर लगान वसूल करना आरंभ किया। इसके लिए बिस्वा को एक इकाई माना गया। वह लगान को गल्ले के रूप में लेना पसंद करता था।
- अलाउद्दीन ने दो नए कर लगाए–मकान कर **(घरई)** एवं चराई कर **(चरई)** ।
- अपनी व्यवस्था को लागू करने के लिए अलाउद्दीन ने एक अहम् विभाग दीवान–ए–मुस्तखराज स्थापित किया।
- खालसा भूमि (सुल्तान की भूमि) : इस भूमि के तहत लगान राज्य द्वारा वसूला जाता था।

(f) सैनिक व्यवस्था (Military Administration)

- अलाउद्दीन ने केन्द्र में एक बड़ी और स्थायी सेना रखी जिसे वह नकद वेतन देता था। **ऐसा करने वाला वह दिल्ली का पहला सुल्तान था।**
- केन्द्र के अनुभवी सेना नायकों को कोतवाल भी कहा जाता था।
- सेना की इकाइयों का विभाजन हजार, सौ और दस पर आधारित था जो खानों, मलिकों, अमीरों और सिपहसलारों के अंतर्गत थे।
- दस हजार की सैनिक टुकड़ियों को तुमन कहा जाता था।

- अलाउद्दीन ने **सैनिकों का हुलिया** लिखने और **घोड़ों को दागने** की नवीन प्रथा चलाई।

(g) बाजार व्यवस्था (Market Administration)

- सैनिक एक निश्चित वेतन पर अपनी आजीविका चला सकें, इस उद्देश्य से उसने सभी वस्तुओं के मूल्य निश्चित कीजिए। इसे बाजार नियन्त्रण प्रणाली के नाम से जाना गया।
- अलाउद्दीन ने प्रत्येक वस्तु के लिए अलग–अलग बाजार निश्चित किए– गल्ले के लिए मण्डी, कपड़े के लिए सराय–ए–आदिल, घोड़ा, गुलाम व मवेशी बाजार एवं सामान्य बाजार।
- सभी व्यापारियों को शहना–ए–मण्डी के दफ्तर में अपने को पंजीकृत कराना पड़ता था। केवल पंजीकृत व्यापारी ही किसानों से गल्ला खरीद सकते थे।
- सट्टेबाजी, चोरबाजारी, कानून को भंग करने वालों को कठोर दंड मिलता था।

बाजार के नियन्त्रण के लिए अधिकारी (Officers for Market Control)

शहना–ए–मण्डी	:	बाजार अधीक्षक
दीवान–ए–रियासत	:	बाजार पर नियंत्रण रखना
सराय अद्ल	:	न्याय के लिए
बरीद–ए–मण्डी	:	बाजार निरीक्षक
मुन्हैयान	:	गुप्तचर

(h) अन्य तथ्य (Other Facts)

- अलाउद्दीन ने कुतुबमीनार के निकट **अलाई दरवाजा** (कुश्क– ए–सीरी), **सीरी नामक शहर, हौज़–ए–अलाई तालाब** तथा **हजार खम्भा महल** बनवाया था।
- उसने डाक व्यवस्था लागू की थी।
- उसका अंतिम अधिनियम परवाना नवीस (परमिट देने वाले अधिकारी) की नियुक्ति थी।
- अलाउद्दीन ने खम्स (युद्ध में लूट का हिस्सा) के 4/5 भाग पर राज्य का नियंत्रण एवं 1/5भाग पर सैनिकों का नियंत्रण कर दिया।
- दिल्ली सल्तनत में सर्वप्रथम **राशन प्रणाली** की शुरुआत अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल से ही हुई।
- अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में **अमीर खुसरो, हसन दहलवी** निवास करते थे।

(C) कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी [1316-1320] ई. (Qutubuddin Mubarak Shah Khilzi)

- **इसने स्वयं को खलीफा घोषित किया। ऐसा करने वाला वह सल्तनत का पहला सुल्तान था।**
- उसे नग्न स्त्री–पुरुष की संगत पन्सद थी।
- मुबारक शाह के बाद नासिरुद्दीन खुसरवशाह (15 अप्रैल से 7 सितंबर, 1320 ई.) तक शासक बना। वह प्रथम भारतीय मुसलमान (जो हिन्दू से मुसलमान बना था) था जो दिल्ली का शासक बना।

(iii) तुगलक वंश [1320-1412] ई. (Tughlaq Dynasty)

(A) गियासुद्दीन तुगलक [1320-1325] ई. (Ghiyasuddin Tughlaq)

- गियासुद्दीन तुगलक ने तुगलक वंश की स्थापना की थी। तुगलक किसी वंश का नाम नहीं था। गियासुद्दीन का नाम गाजी तुगलक अथवा गाजीबेग तुगलक था। यही कारण है कि उसके उत्तराधिकारियों को भी तुगलक पुकारा जाने लगा।
- गियासुद्दीन ने उदारता की नीति अपनाई जिसे बरनी ने रस्मोनियम अथवा मध्यम पंथी नीति कहा है।
- उसने **सिंचाई व्यवस्था दुरुस्त करवाई** और **नहरों का निर्माण** करवाया। इससे किसानों और राज्य की आर्थिक नीति में सुधार हुआ।
- उसकी **डाक व्यवस्था श्रेष्ठ** थी। उसने न्याय व्यवस्था में सुधार किए।
- उसने **तुगलकाबाद नामक एक शहर** की स्थापना की थी।
- गियासुद्दीन ने सरकारी कर्मचारियों को राजस्व वसूली में हिस्सा न देकर उन्हें कर मुक्त जागीरें दीं।
- चिश्ती संत निजामुद्दीन औलिया के साथ उसके सम्बन्ध कटुतापूर्ण थे। जब गियासुद्दीन बंगाल अभियान से लौट रहा था, तो उसने दिल्ली आने से पहले ही औलिया को दिल्ली छोड़कर चले जाने को कहा था–**हनूज–ए–दिल्ली दूरस्थ (अर्थात्, दिल्ली अभी दूर है)** गियासुद्दीन जब अफगानपुर नामक गाँव में विश्राम कर रहा था, तो लकड़ी के महल की छत गिर जाने से उसकी मृत्यु हो गई। इब्नबतूता के अनुसार गियासुद्दीन तुगलक की मृत्यु का कारण मोहम्मद बिन तुगलक का षड्यंत्र था। उसे उसके द्वारा ही बनवाई गई कब्र में दफनाया गया जो कि तुगलकाबाद में थी।

(B) मोहम्मद बिन तुगलक [1325-1351] ई. (Mohammad Bin Tughlaq)

- मोहम्मद बिन तुगलक का मूल नाम **जूनाखाँ** था तथा उसने **उलूगखाँ** की उपाधि ग्रहण की थी। वह गियासुद्दीन का पुत्र था।
- उसके शासनकाल में 1333 ई. में मोरक्को का यात्री **इब्नबतूता** भारत आया था, जिसे दिल्ली का काजी नियुक्त किया गया। 1342 ई. में इब्नबतूता को अपना दूत बनाकर **चीन** भेजा।
- उसने अपने सिक्कों पर अल सुल्तान **जिल्ली इलाह (सुल्तान ईश्वर की छाया है)** अंकित कराया।

- उसके शासनकाल में साम्राज्य 23 प्रान्तों में बँटा हुआ था। कश्मीर और आधुनिक बलूचिस्तान को छोड़कर सारा हिन्दुस्तान दिल्ली सल्तनत के नियंत्रण में था।
- मोहम्मद बिन तुगलक सल्तनतकालीन सभी सुल्तानों में सर्वाधिक विद्वान था। वह **खगोलशास्त्र, दर्शन, गणित, चिकित्सा विज्ञान, तर्कशास्त्र** आदि में दक्ष था।
- वह दिल्ली का प्रथम सुल्तान था जिसने योग्यता के आधार पर पद देना आरंभ किया और भारतीय मुसलमानों एवं हिन्दुओं को भी सम्मानित पद प्रदान किए।
- उसके काल में एकमात्र मंगोल आक्रमण (1328-29 ई.) में अलाउद्दीन तार्माशीरीन के नेतृत्व में हुआ था।

(a) मुहम्मद बिन तुगलक की पाँच विवादास्पद योजनाएँ (Five Controversial Strategies of Mohammad Bin Tughlaq)

- **राजधानी परिवर्तन (Capital Transfer)**
  सुल्तान का सबसे विवादास्पद निर्णय राजधानी परिवर्तन का था जिसके तहत राजधानी को दिल्ली से देवगिरि (दौलताबाद) स्थानान्तरित किया।
  - देवगिरि दक्षिण भारत में मुसलमानों के शासन विस्तार का आधार बन सकता था।
  - वह दक्षिण भारत में प्रभावशाली ढंग से शासन हेतु देवगिरि को दूसरी राजधानी बनाना चाहता था।
  - अनेक पदाधिकारियों, सूफी संतों तथा प्रधान लोगों को देवगिरि जाने का आदेश दिया गया, लेकिन शेष लोगों हेतु कोई योजना नहीं थी।
  - सुल्तान के देवगिरि में होने के बावजूद सिक्के दिल्ली में ही ढाले जाते थे।
  - बाद में इसे त्याग दिया गया, क्योंकि यहाँ उत्तर भारत पर नियन्त्रण रखना सम्भव नहीं था।
  - परन्तु इससे उत्तर तथा दक्षिण भारत के बीच सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक विचारों का आदान–प्रदान हुआ।
- **सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन (Issue of Token Currency)**
  - सुल्तान की दूसरी परियोजना थी प्रतीक मुद्रा का प्रचलन।
  - पूर्व में चीन में कुबलई खाँ तथा मंगोल शासक ने भी इसका प्रयोग किया था।
  - सुल्तान ने चाँदी केरी टंके के बराबर काँसे की मुद्रा चलाने का निर्णय लिया था।
  - परन्तु सरकार की यह परियोजना भी विफल हो गयी, क्योंकि बाजार में नकली सिक्कों के आने से नये सिक्कों का भारी अवमूल्यन हो गया।
- **खुरासान अभियान (Khurasan Expedition)**
  - सुल्तान की तीसरी परियोजना थी खुरासान अभियान।
  - यह 'त्रिमैत्री संगठन' सुल्तान तरमाशरीन तथा मिस्र के सुल्तान का परिणाम था।
  - लेकिन मध्य एशिया में राजनीतिक परिवर्तन के कारण यह अभियान अधूरा रह गया तथा इस हेतु संगठित विशाल सेना के कारण उसे बड़ी आर्थिक हानि का सामना करना पड़ा।
- **कराचिल अभियान (Karachil Expedition**
  - चौथी योजना में कराचिल अभियान के तहत सुल्तान ने खुसरो मलिक के नेतृत्व में एक विशाल सेना कुमायूँ–गढ़वाल क्षेत्र में स्थित कराचिल को जीतने के लिए भेजी।
  - इब्नबतूता के अनुसार अंततः केवल तीन अधिकारी ही वापस आ सके।
- **दोआब क्षेत्र में कर वृद्धि (Tax Increase in Doab Region)**
  - पाँचवीं परियोजना के तहत सुल्तान ने 'दोआब क्षेत्र' में कर वृद्धि कर दी। दुर्भायवश इसी समय अकाल पड़ गया तथा अधिकारियों द्वारा जबरन वसूली के कारण उस क्षेत्र में विद्रोह हो गया तथा परियोजना असफल रही।
  - सुल्तान ने दिल्ली छोड़कर 'स्वर्गद्वारी नामक शिविर में 2.5 वर्ष तक निवास किया।'

(b) मोहम्मद बिन तुगलक के काल में प्रमुख विद्रोह (Major Revolts During the Regin of Mohammad Bin Tug-hlaq)

- गुलबर्गा के निकट सागर के जागीरदार वहाबुद्दीन गुर्सास्प का विद्रोह।
- मुल्तान के सूबेदार बहरान आईबा उर्फ किश्लू खाँ का विद्रोह।
- 1327-28 में बंगाल का विद्रोह।
- सुनम और समाना, कड़ा, बीदर, अवध के विद्रोह।
- 1336 में विजयनगर का विद्रोह।
- 1347 में देवगिरि में विद्रोह एवं बहमनी राज्य की नींव।

- उसने निजामुद्दीन औलिया की कब्र पर मकबरे का निर्माण कराया था। उसने तुगलकाबाद के पास आदिलाबाद नामक दुर्ग बनवाया।
- उसने सतपलाह बाँध एवं बिजली महल का भी निर्माण करवाया था।
- एक विद्रोह के दमन के दौरान, थट्ठा (सिंध) में मोहम्मद बिन तुगलक बीमार हो गया और 20 मार्च, 1351 ई. को

उसकी मृत्यु हो गई। बदायूँनी के अनुसार **''सुल्तान को उसकी प्रजा से और प्रजा को अपने सुल्तान से मुक्ति मिल गई।''**

- सुल्तान हिन्दुओं के प्रति उदारवादी था तथा **होली** और **दीपावली** जैसे त्योहारों में स्वयं भाग लेता था।
- सुल्तान ने अपने दरबार में जैन विद्वान **प्रभुसूरि** और **राजशेखर** का स्वागत किया।

(C) फिरोजशाह तुगलक [1351-1388] ई. (Firozshah Tughlaq)

- जिस समय मोहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु हुई तब फिरोज उसके साथ था। 20 मार्च, 1351 ई. फिरोज सुल्तान बना। फिरोज, मोहम्मद बिन तुगलक का चचेरा भाई था।
- फिरोज ने इस्लामी कानूनों के आधार पर केवल 4 कर लगाये—**खराज** (लगान), **खम्स** (युद्ध में लूटे गए धन का 1/5 भाग), **जजिया** (हिन्दुओं पर धार्मिक कर) और **जकात** (आय का 2½% जो मुसलमानों से लिया जाता था और उन्हीं के हित में व्यय किया जाता था) उसने 24 कष्टदायक करों को समाप्त किया।
- फिरोज ने **'हक्क–ए–शर्ब'** नामक सिंचाई कर लिया जो उपज का 1/10 भाग होता था।
- फिरोज ने **तकावी ऋण** माफ कर दिया।
- उसके समय लगान पैदावार का 1/5 से 1/3 भाग था।
- उसने अपने राज में **शशगनी** नामक सिक्का चलाया।
- अफीफ के अनुसार सुल्तान ने अद्धा एवं बिख नामक ताँबा और चाँदी से बना **निर्मित** सिक्का चलाया।
- फिरोज ने पाँच बड़ी नहरों का निर्माण कराया। इसमें यमुना नदी से हिसार तक 150 मील लंबी नहर थी।
- उसने सिंचाई और यात्रियों की सुविधा के लिए 150 कुएँ खुदवाये।
- फिरोज ने फतेहाबाद, हिसार, फिरोजपुर और फिरोजाबाद नगर बसाये।
- उसे दिल्ली में फिरोजशाह कोटला कहलाने वाला नगर बहुत पसंद था।
- उसने ही मोहम्मद बिन तुगलक (जूना खाँ) की याद में जौनपुर नगर की स्थापना की।
- फिरोज ने **ताश घड़ियाल** एवं एक **जलघड़ी** का निर्माण कराया था।
- उसने अशोक के दो स्तम्भों को दिल्ली मँगाया। इनमें से एक **मेरठ** और दूसरा **टोपरा (पंजाब)** से लाया गया था।
- फिरोज ने कुतुबमीनार की चौथी मंजिल के स्थान पर दो और मंजिलों का निर्माण कराया। इस प्रकार कुतुबमीनार अब **पाँच मंजिला** बन गई है।
- उसने **दीवान–ए–खैरात** विभाग स्थापित किया जो मुसलमान अनाथ स्त्रियों एवं विधवाओं को आर्थिक सहायता देता था।
- उसने दिल्ली के निकट एक खैराती अस्पताल **दार–उल–शफा** स्थापित किया।
- फिरोज ने **दीवान–ए–इस्तिहाक** की स्थापना की जो मृत सैनिकों के आश्रितों को मदद देने से सम्बन्धित था।
- उसने गुलामों के लिए पृथक विभाग **दीवान–ए–बदगान** बनाया।
- फिरोज विद्वानों का सम्मान करता था। उसके दरबार में बरनी एवं शम्से सिराज अफीफ जैसे—विद्वान निवास करते थे।
- उसने ज्वालामुखी मंदिर के पुस्तकालय से प्राप्त 138 ग्रन्थों में से कुछ का फारसी में अनुवाद करवाया, जिसमें से एक का नाम दलायले फिरोजशाही था जो नक्षत्र विज्ञान से सम्बन्धित था।

प्रमुख पुस्तकें व लेखक (Main Books & Writers)

पुस्तक	लेखक
फतवा–ए–जहाँदारी	बरनी
तारीख–ए–फिरोजशाही	बरनी
तारीख–ए–फिरोजशाही	शम्स ए सिराज अफीफ
फतुहाल–ए–फिरोजशाही	फिरोजशाह तुगलक (आत्म कथा)

- फिरोज ने राज्य की शासन व्यवस्था में इस्लाम के कानूनों और उलेमा वर्ग को प्रधानता दी।
- फिरोज् सूफी संत बाबा फरीद का अनुयायी था।
- वह बहुसंख्यक हिन्दुओं के प्रति कठोर था।
- फिरोज ने खलीफा से दो बार अपने सुल्तान के पद की स्वीकृति ली और अपने को खलीफा का नायब पुकारा।
- फिरोज तुगलक ने धार्मिक प्रशंसा प्राप्त करने के लिए उड़ीशा (ओडिशा) का **जगन्नाथ मंदिर** तथा नगरकोट का **ज्वालामुखी मंदिर** को तुड़वाया।
- आधुनिक इतिहासकार **एलफिन्सटन** फिरोज को **सल्तनत युग का अकबर** के नाम से सम्बोधित किया है।
- इसने आकाशीय बिजली में ध्वस्त हुई **कुतुबमीनार** की **5वीं मंजिल का निर्माण दोबारा करवाया।**
- इसने **शशगनी** (**जीतल**) तथा **चाँदी** एवं ताँबे के मिश्रण से निर्मित सिक्के भारी मात्रा में जारी किए, जिन्हें **'अद्धा'** या **'विख'** कहा जाता था।
- फिरोज की मृत्यु सितंबर, 1388 ई. में हुई।

(D) नासिरुद्दीन महमूद तुगलक [1394-1412] ई. (Nasiruddin Mohmmad Tughlaq)

- यह तुगलक वंश का अंतिम शासक था। उसका शासन दिल्ली तक ही सीमित था। इसके शासनकाल में मंगोल तैमूर लंग ने 1398 ई. में भारत पर आक्रमण किया। नासिरुद्दीन की मृत्यु 1412 ई. हुई जिसके बाद तुगलक वंश का शासन पूर्णतः समाप्त हो गया।

- 1412 ई. में दौलत खाँ लोदी सुल्तान बना, परन्तु खिज्र खाँ ने दिल्ली पर आक्रमण किया और उसे परास्त कर स्वयं 1414 ई. में दिल्ली सिंहासन पर बैठकर एक नवीन राजवंश सैयद वंश की स्थापना की।

(iv) सैयद वंश [1414-1451] ई. (Sayyid Dynasty)

- सैयद वंश का संस्थापक खिज्रखाँ (1414–1421 ई.) था। उसने सुल्तान की उपाधि ग्रहण नहीं की बल्कि रैयत–ए–आला की उपाधि से ही संतुष्ट था। वह तैमूर के पुत्र शाहरुख को निरंतर भेंट और राजस्व भेजता था। उसने कई वर्षों तक शाहरुख के नाम का खुतबा भी पढ़ा। उसकी मृत्यु 20 मई, 1421 ई. को दिल्ली में हुई।
- खिज्रखाँ ने अपने पुत्र मुबारकशाह (1421–1434 ई.) को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया, जिसने शाह की उपाधि धारण की। उसने अपने नाम के सिक्के चलाये। उसने यमुना के किनारे मुबारकाबाद बसाया। उसने तत्कालीन विद्वान याहिया सरहिन्दी को संरक्षण प्रदान किया जिसने उस समय के इतिहास तारीख–ए–मुबारकशाही को लिखा। मुबारकशाह सैयद शासकों में योग्यतम शासक था।
- इस वंश का अंतिम शासक अलाउद्दीन आलमशाह (1445–1451 ई.) था। बहलोल लोदी ने 1451 ई. में अलाउद्दीन आलमशाह को अपदस्थ कर दिल्ली पर लोदी वंश की स्थापना की।
- सैयद वंश का शासन केवल 37 वर्ष का ही रहा।

(v) लोदी वंश [1451-1526] ई. (Lodhi Dynasty)

- बहलोल लोदी ने दिल्ली में लोदी वंश की स्थापना की। मध्यकालीन भारत में प्रथम अफगान राज्य की स्थापना लोदियों द्वारा ही हुई।

(A) बहलोल लोदी [1451-1489] ई. (Bahlol Lodhi)

- दिल्ली की गद्दी पर बैठने वाला प्रथम अफगान शासक बहलोल लोदी था। वह बहलोलशाह गाजी के नाम से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा।
- वह अफगानों की एक महत्त्वपूर्ण शाखा शाहूखेल से सम्बन्ध रखता था।
- उसकी महत्त्वपूर्ण सफलता जौनपुर राज्य को दिल्ली सल्तनत में शामिल करना था।
- बहलोल ने **बहलोली सिक्के** चलवाए जो अकबर के पहले तक उत्तर भारत में विनिमय का मुख्य साधन बना रहा।
- वह अमीरों को **मकसद–ए–अली** पुकारता था।
- उसका अंतिम आक्रमण ग्वालियर पर हुआ। ग्वालियर से वापस आते हुए जलाली के निकट जुलाई, 1489 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

(B) सिकन्दर लोदी [1489-1517] ई. (Sikandar Lodhi)

- बहलोल की मृत्यु के बाद उसका पुत्र निजाम खाँ, सुल्तान सिकन्दरशाह के नाम से 17 जुलाई, 1489 ई. को दिल्ली का शासक बना।
- उसने आगरा नामक नवीन नगर 1504 ई. में बसाया जहाँ पर बादलगढ़ का किला का निर्माण कराया। 1506 ई. में आगरा, सिकन्दर लोदी की राजधानी बनी।
- सिकन्दर लोदी **गुलरुखी** के उपनाम से फारसी में कविताएँ लिखता था। उसके समय में गायन विद्या के एक श्रेष्ठ ग्रंथ **लज्जत–ए–सिकन्दरशाही** की रचना भी हुई।
- उसने एक **आयुर्वेदिक ग्रंथ** का फारसी में अनुवाद कराया जिसका नाम **फरंहगे सिकन्दरी** रखा गया।
- उसने नाप के लिए पैमाना **'गज–ए–सिकन्दरी'** प्रारंभ किया जो 30 इंच का होता था।
- सिकन्दर ने अनाज पर जकात लेना बंद करवाया।
- उसने ब्राह्मणों से जजिया लेना पुनः शुरू किया।
- उसने नगरकोट के ज्वालामुखी की मूर्ति को तोड़कर उसके टुकड़ों को माँस तोलने के लिए कसाइयों को दे दिया। उसने **मुहर्रम में ताजिये निकालना भी बंद** कर दिया था और **मुस्लिम स्त्रियों को पीरों और संतों की मजारों पर जाने से रोक दिया।**
- सिकन्दर लोदी की मृत्यु गले की बीमारी के कारण 21 नवम्बर, 1517 ई. को आगरा में हुई ।

(C) इब्राहिम लोदी [1517-1526] ई. (Ibrahim Lodhi)

- इब्राहिम लोदी, सिकन्दर लोदी का पुत्र था, जो लोदी वंश का अंतिम शासक था।
- प्रमुख अफगान सरदार दौलता खाँ लोदी (पंजाब का सूबेदार) और इब्राहिम लोदी का चाचा आलम खाँ ने इब्राहिम की सत्ता को समाप्त करने के उद्देश्य से काबुल के शासक बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया।
- 12 अप्रैल, 1526 ई. को बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच **पानीपत का प्रथम युद्ध** हुआ जिसमें इब्राहिम की पराजय हुई और वह युद्ध स्थल पर मारा गया। **युद्धभूमि में मारा जाने वाला वह दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान था।**
- इब्राहिम लोदी की मृत्यु से लोदी वंश एवं दिल्ली सल्तनत पूर्णतः समाप्त हुआ और भारत में नई सत्ता की स्थापना हुई। जिसका नाम मुगल सत्ता था।

Note :

अमीर खुसरो : एक नजर में

अमीर खुसरो का जन्म 1253 ई. में उत्तर प्रदेश के एटा जिले के पटियाली नामक स्थान पर हुआ था। उसका पूरा नाम था – **अबुल हसन यामिनुद्दीन खुसरो**। उसने कुल 9 सुल्तानों का शासनकाल देखा। वह **निजामुद्दीन औलिया** का शिष्य था। अमीर खुसरो ने खड़ी बोली के विकास में अहम भूमिका निभाई। उसने फारसी काव्य शैली सबक–ए–हिन्दी या हिन्दुस्तानी शैली को जन्म दिया। वह स्वयं को **तोता–ए–हिंद** या **तूतिए–हिंद** कहता था। उसे यह उपाधि अलाउद्दीन खिलजी ने दी थी। अमीर खुसरो ने भारतीय वीणा और ईरानी तम्बूरे को मिलाकर सितार बनाया। उसने **तबला, शतरंज** का भी आविष्कार किया।

(II) सल्तनतकालीन शासन व्यवस्था (Sultanate Age Administration)

(i) केन्द्रीय शासन (Central Administration)

- केन्द्रीय शासन का प्रधान सुल्तान होता था। उत्तराधिकारी का कोई निश्चित नियम नहीं था।

सल्तनतकालीन शब्दावली

- **इक्ता**–हस्तान्तरणीय लगान अधिन्यास।
- **अमीर–ए–दाद**–सुल्तान की अनुपस्थिति में दीवान–ए–मजलिस का अध्यक्ष।
- **अमीरान–ए–कुमन**–दस हजार सैनिकों का अधिकारी।
- **अमीरान–ए–सद**–सौ सैनिकों का अधिकारी।
- **अमीरान–ए–हजारा**–एक हजार सैनिकों का अधिकारी।
- **अमीर–ए–बहर**–नौकाओं का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी।
- **आमिल**–साधारणतया ग्रामों में भूमिकर वसूल करने वाला अधिकारी।
- **इदरार**–विद्वानों तथा धार्मिक लोगों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता।
- **उश्र**–मुसलमानों की भूमि पर लिया जाने वाले लगान।
- **कारकुन**–भूमि कर का हिसाब रखने वाला।
- **कोतवाल**–नगर की देखभाल करने वाला अधिकारी।
- **खासा खेल**–शाही महल से सम्बन्धित सेना।
- **खुम्स**–युद्ध लूट।
- **ख्वाजा**–लेखपाल।
- **चौधरी**–परगना का मुख्य अधिकारी।
- **जकात**–केवल मुसलमानों से वस्तुओं पर लिया जाने वाला कर।
- **जिम्मी**–इस्लाम स्वीकार न करने तथा अपनी सुरक्षा के बदले जजिया देने वाले।
- **जीतल**–ताँबे का सिक्का।
- **टंका**–चाँदी का सिक्का।
- **दबीर**–शाही पत्र व्यवहार के विभाग का अधिकारी।
- **पायक**–पैदल सैनिक।
- **फवाजिल**–अधिशेष भू–राजस्व।
- **बलाहार**–साधारण किसान।
- **मसाहत**–भूमि की पैमाइश।
- **मुतसरिफ**–गाँवों में किसानों से भूमिकर वसूल करने वाले अधिकारी।
- **मुशरिफ**–महालेखाकार।
- **मुस्तौफी**–महालेखापरीक्षक।
- **वक्फ**–वह धन सम्पत्ति/भूमि जो धार्मिक कार्यों के लिए सुरक्षित कर दी जाती थी।
- **सदका**–एक प्रकार का दान।
- **सरखेल**–दस सवारों का सरदार।

प्रमुख अधिकारी एवं उनके कार्य (Main Officers & Their Functions)

अधिकारी		कार्य
वजीर (प्रधानमंत्री)	:	राजस्व विभाग (दीवान–ए–वजारत) का प्रधान
आरिज–ए–मुमालिक	:	सेना विभाग (दीवान–ए–अर्ज) का प्रधान
दबीर–ए–खास (अमीर मुंशी)	:	शाही पत्र–व्यवहार विभाग (दीवान–ए–इंशा) का प्रधान
दीवाने रसालत	:	विदेश वार्ता और कूटनीतिक सम्बन्धों की देखभाल करने वाला अधिकारी
सद्र–उस–सुदूर	:	धर्म विभाग का प्रधान
काजी–उल–कजात	:	न्याय विभाग का प्रधान
बरीद–ए–मुमालिक	:	गुप्तचर विभाग का प्रधान
अमीर–ए–आखुर	:	अश्वशाला का प्रमुख
मुंसिफ–ए–मुमालिक	:	महालेखाकार
अमीर–ए–मजलिस	:	शाही उत्सवों का प्रबन्धकर्ता
खाजिन	:	आय का संग्रहकर्ता

प्रमुख विभाग एवं उनके कार्य (Main Departments & Their Functions)

विभाग		कार्य
दीवान–ए–वजारत	:	वित्त विभाग
दीवान–ए–अर्ज	:	सैन्य विभाग
दीवान–ए–मुस्तखराज	:	राजस्व विभाग
दीवान–ए–इंशा	:	पत्राचार विभाग
दीवान–ए–रसालत	:	विदेश विभाग
दीवान–ए–खैरात	:	दान विभाग
दीवान–ए–अमीर कोही	:	कृषि विभाग
दीवान–ए–बंदगान	:	दासों का विभाग
दीवान–ए–इश्तिहाक	:	पेंशन विभाग
दीवान–ए–वकूफ	:	व्यय विभाग

(ii) कर व्यवस्था (Tax System)

दिल्ली सुल्तानों के समय कुछ विशेष कर इस प्रकार थे–

- **उश्र :** मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर
- **खराज :** गैर मुसलमानों पर भूमि कर
- **खम्स :** लूट में प्राप्त धन। इसके 1/5भाग पर सुल्तान का अधिकार एवं 4/5 भाग पर सैनिकों एवं अन्य अधिकारियों पर अधिकार होता था, लेकिन फिरोजशाह तुगलक को छोड़कर सभी सुल्तानों ने 4/5 भाग स्वयं अपने लिए रखा ।
- **जकात :** मुसलमानों पर धार्मिक कर
- **जजिया :** गैर–मुसलमानों (जिम्मी) पर धार्मिक कर

सेना की दशमलव प्रणाली (Decimal System of Military)

सरखेल	:	10 घुड़सवारों का प्रधान
सिपहसालार	:	10 सरेखेलों का प्रधान
अमीर	:	10 सिपहसालारों का प्रधान
मलिक	:	10 अमीरों का प्रधान
खान	:	10 मलिकों का प्रधान
सुल्तान	:	सभी खानों का प्रधान

(iii) इक्ताओं का शासन (Administration of Iqtas)

- प्रान्तों को इक्ता के नाम से पुकारा जाता था। इक्ताओं को शिकों में विभाजित किया गया जिसका प्रमुख एक सैनिक अधिकारी शिकदार होता था।
- शिकों को परगना में विभाजित किया जाता था, जिसका मुख्य अधिकारी आमिल होता था।
- शासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थी, जहाँ पर (खुत भूस्वामी) और (मुकद्दम मुखिया) मुख्य अधिकारी थे।
- प्रांतीय या सूबे के स्तर के अधिकारियों को वली मुक्ता, अमीर या मलिक पुकारा जाता था।
- अलाउद्दीन खिलजी के समय **दीवान–ए–वजारत** ने इक्ताओं की आय पर अपना नियंत्रण रखा और अंततः इक्ता प्रथा को पूरी तरह से समाप्त किया। फिरोज तुगलक ने इक्ता प्रथा की दोबारा शुरुआत की थी।

(iv) कारखाना (Workshops)

- दिल्ली सुल्तानों ने विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन के लिए अनेक कारखाने खोले थे। इन कारखानों में बनने वाली वस्तुएँ अमीरों और अन्य धनवान व्यक्तियों को बेची जाती थी जिससे सुल्तान की आय में वृद्धि होती थी। अफीक के अनुसार उनके पास दो तरह के कारखाने थे।
  (i) **रातिबी :** इनमें काम करने वाले व्यक्तियों को निश्चित वेतन दिया जाता था।
  (ii) **गैर–रातिबी :** यहाँ काम के अनुसार धन दिया जाता था।
- प्रत्येक कारखाने की देखभाल के लिए **मुतसर्रिफ** नामक एक अधिकारी होता था और सभी मुतसर्रिफों के ऊपर एक प्रधान मुसर्रिफ होता था।
- सल्तनत काल में बारूद की सहायता से गोला फेंकने वाली मशीन को **मंगली** तथा **अरदि** कहा जाता था।
- सल्तनत कालीन कानून **शरीयत, कुरान** एवं **हदीस** पर आधारित था।

4. प्रान्तीय राज्य (Provincial States)

मोहम्मद बिन तुगलक की असफल योजनाओं और प्रशासनिक विफलता के कारण साम्राज्य का पतन होने लगा। इसके परिणामस्वरूप भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्वतंत्र प्रांतीय राज्यों का उदय हुआ। इनमें उत्तर भारत में जौनपुर, मालवा, कश्मीर, मारवाड़ आदि एवं दक्षिण भारत में माबर, खानदेश, बहमनी एवं विजयनगर प्रमुख थे।

(I) कश्मीर (Kashmir)

- कश्मीर में हिन्दू राज्य की स्थापना सूहादेव ने 1301 ई. में की। यहाँ हिन्दूशाही वंश का शासक था।
- शाहमीर, शम्सुद्दीन के नाम से कश्मीर का प्रथम मुस्लिम शासक बना और इन्द्राकोट में शाहमीर राज्य की स्थापना की। कालांतर में जहाँ सिकंदरशाह नामक शासक हुआ, जिसके काल में तैमूर का भारत पर आक्रमण हुआ (1398 ई.)। उसने मार्तण्ड मंदिर सहित अनेक हिन्दू मंदिर और मूर्तियों का विनाश किया। उसे बुतशिकन की उपाधि से नवाजा गया था।
- 1420 ई. में सिकंदरशाह का पुत्र शाही खाँ, जैन–उल–अबीदीन के नाम से सिंहासन पर बैठा। उसे बुधशाह व महान सुल्तान भी कहा जाता था। वह धार्मिक दृष्टि से अत्यधिक सहिष्णु था। उसने महाभारत और राजतरंगिणी का फारसी में अनुवाद कराया था। वह कुतुब उपनाम से फारसी में कविताएँ लिखता था और उसने शिकायतनामा ग्रन्थ की रचना की। 1470 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। कश्मीर के लोगों ने उसे वुडशाह की उपाधि दी। उसकी उदार नीतियों के कारण उसे कश्मीर का अकबर और मूल्य नियंत्रण व्यवस्था के कारण कश्मीर का अलाउद्दीन खिलजी कहा जाता है।
- दिल्ली सल्तनत के किसी भी सुल्तान ने कश्मीर पर अधिकार नहीं किया। बाद में अकबर ने उसे अपने राज्य में शामिल किया।

(II) जौनपुर (Jaunpur)

- जौनपुर नगर को फिरोज तुगलक ने 1359 ई. में बसाया था।
- जौनपुर में स्वतंत्र सत्ता का संस्थापक मलिक सरवर था, जिसे फिरोजशाह तुगलक के पुत्र सुल्तान महमूद ने मलिक–उस–शर्क की उपाधि दी थी। उसके पद के कारण उसका वंश शर्की वंश कहलाया।
- शर्की शासकों में सबसे उल्लेखनीय शासक इब्राहिम शाह था, जिसने **'सिराज–ए–हिन्द'** की उपाधि प्राप्त की।
- अटाला मस्जिद जो जौनपुर ढंग की शिल्प विद्या के दैदीप्यमान नमूने के रूप में खड़ी है, इब्राहिम शाह के काल में पूरी हुई। झँझरी मस्जिद का भी निर्माण इब्राहिम शाह ने ही करवाया था।
- उसने जौनपुर को एक सुन्दर नगर बनाया और उसके समय स्थापत्य कला में एक नयी शैली जौनपुर या शर्की शैली का जन्म हुआ। इस काल में जौनपुर को पूरब का शिराज कहा जाने लगा।
- शर्की वंश का अंतिम शासक हुसैनशाह शर्की था, जिसे बहलोल लोदी ने 1579 ई. में पराजित किया और 1484 ई. में जौनपुर को अपने अधीन कर लिया।
- महाकाव्य पद्मावत का रचयिता मलिक मुहम्मद जायसी जौनपुर का ही निवासी था।

(III) बंगाल (Bengal)

- बंगाल को दिल्ली सल्तनत में सम्मिलित करने का श्रेय इख्तियारुद्दीन मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी को था।
- मोहम्मद तुगलक के समय 1338 ई. में बंगाल दिल्ली से स्वतंत्र हो गया। चार साल बाद इलियास खाँ नामक एक अमीर ने लखनौती और सोनारगाँव पर कब्जा कर लिया और सुल्तान शम्सुद्दीन इलियास खाँ की उपाधि धारण कर बंगाल पर आक्रमण कर उसकी राजधानी पंडुआ पर कब्जा कर लिया। बाद में दोनों में संधि हो गई।

- इलियास खाँ के राजवंश का सबसे प्रसिद्ध सुल्तान गियासुद्दीन आजमशाह (1389–1409 ई.) था। यह अपनी न्यायप्रियता के लिए जाना जाता था और प्रसिद्ध फारसी कवि हाजिफ शीरजी से उसका संपर्क था।
- बंगाल के अमीरों ने 1498 ई. में अलाउद्दीन हुसैनशाह को बंगाल का शासक बनाया। चैतन्य महाप्रभु, अलाउद्दीन के समकालीन थे। उसने सतदीरे नामक आंदोलन की शुरुआत की। उसके बाद उसका पुत्र नसीबखाँ, नासिरुद्दीन नुसरतशाह की उपाधि से सिंहासन पर बैठा। उसने गौड़ में बड़ा सोना एवं कदम रसूल मस्जिद बनवायी।
- इस वंश का अंतिम शासक गियासुद्दीन महमूदशाह था जिसे शेरशाह ने हराकर संपूर्ण बंगाल पर आधिपत्य स्थापित कर लिया।

(IV) गुजरात (Gujrat)

- गुजरात को दिल्ली सल्तनत में मिलाने का कार्य अलाउद्दीन खिलजी ने राजा कर्ण (रायकरन) को 1297 ई. में परास्त करके किया।
- मुहम्मद तुगलक ने जफरखाँ को गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया, जिसने 1407 ई. में अपने को गुजरात का स्वतंत्र शासक बना लिया। जफरखाँ को मुजफ्फरशाह की उपाधि दी गई थी।
- मुजफ्फरशाह की मृत्यु के बाद उसका पौत्र अहमदशाह सुल्तान बना। उसने नव स्थापित अहमदाबाद को अपनी राजधानी बनाया। उसने अहमदाबाद में एक जामा मस्जिद का निर्माण कराया।
- महमूद बेगड़ा (1458–1511 ई.) अपने वंश का महानतम शासक था। उसने चम्पानेर एवं गिरनार के किलों को जीता इसलिए उसे बेगड़ा कहा जाने लगा। उसने मुस्तफाबाद नगर की स्थापना की और सिद्धपुर मंदिर का विनाश किया। गुजरात में पहली बार हिंदुओं पर जजिया कर इसी ने लगाया।
- 1572 ई. में मुगल बादशाह अकबर ने गुजरात को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

(V) मालवा का युद्ध (Battle of Malwa)

- अलाउद्दीन खिलजी ने मालवा को दिल्ली सल्तनत का हिस्सा बनाया था। तैमूर के आक्रमण के बाद, दिलावर खाँ गोरी ने मालवा के स्वतंत्रता की घोषणा की।
- दिलावर खाँ का पुत्र होशंगशाह अगला शासक बना जिसने नर्मदा नदी के किनारे होशंगाबाद शहर बसाया था। उसने मांडू को अपनी राजधानी बनाया।
- महमूदशाह (1436–1469 ई.) ने मालवा में खिलजी वंश की नींव डाली। **मेवाड़ के राणा कुम्भा से हुए युद्ध में दोनों शासकों ने अपनी–अपनी विजय का दावा किया। राणा कुम्भा ने चितौड़ में विजय स्तम्भ बनवाया और महमूद खिलजी ने माण्डू में सात मंजिलों वाला स्तम्भ स्थापित किया।**
- अकबर ने मालवा को मुगल साम्राज्य में शामिल किया।

महल/भवन	निर्माणकर्ता
बाजबहादुर महल,	सुल्तान नासिरुद्दीन शाह
रूपमती का महल	बाज बहादुर
कुश्कमहल	महमूद खिलजी
जहाजमहल	गियासुद्दीन खिलजी
हिंडोला भवन (दरबार हाल)	हुशंगशाह

(VI) मेवाड़ (आधुनिक उदयपुर) (Mewar)

- अलाउद्दीन खिलजी ने 1303 ई. मेवाड़ को जीतकर दिल्ली सल्तनत में मिलाया था। उस समय मेवाड़ का शासक राणा रतन सिंह, गुहिलौत राजपूत वंश का था।
- गुहिलौत वंश की एक शाखा सिसोदिया वंश के हम्मीरदेव ने मेवाड़ राज्य की पुनः स्थापना की।
- इस राजवंश का एक महान शासक राणा कुम्भा था। उसने मालवा के विरुद्ध सफलता प्राप्त करने के उपलक्ष्य में 1448 ई. में चितौड़ में कीर्ति स्तम्भ बनवाया जिसे हिन्दू देवशास्त्र का चित्रित कोश कहा गया है। उसने जसदेव कृत गीतगोविन्द पर रसिकप्रिया नामक टीका लिखी।
- 1527 ई. में खानवा के युद्ध में बाबर ने राणा साँगा को हराया एवं 1576 में अकबर ने हल्दी घाटी की लड़ाई में महाराणा प्रताप को पराजित किया।
- अंत में जहाँगीर के समय मेवाड़ ने मुगल आधिपत्य को स्वीकार कर लिया।

(VII) खानदेश (Khandesh)

- खानदेश के स्वतंत्र राज्य की स्थापना मलिक राजा फारूकी ने की। उसकी राजधानी बुरहानपुर थी और असीरगढ़ का किला एक शक्तिशाली सैन्य अड्डा था।
- अकबर ने 1601 ई. में खानदेश को मुगल साम्राज्य में शामिल कर लिया।

5. विजय नगर साम्राज्य (Vijay Nagar Empire)

भारत के दक्षिणी पश्चिमी तट पर 1336 ई. में विजयनगर राज्य (वर्तमान नाम हम्पी) की स्थापना **हरिहर और बुक्का** नामक दो भाइयों द्वारा हुई थी। मुहम्मद तुगलक ने जब कम्पिली को विजय किया तब हरिहर एवं बुक्का को पकड़कर दिल्ली लाया और उन्हें मुसलमान बना दिया, लेकिन जब कम्पिली में विद्रोह हुआ तो हरिहर एवं बुक्का को दक्षिण की सुरक्षा के लिए दक्षिण भेजा गया। वहाँ पर **संत विद्यारण्य** के प्रभाव में आकर वे पुनः हिन्दू बन गए। 1336 ई. में हरिहर ने **हम्पी (हस्तिनावती)** राज्य की नींव डाली। उसी वर्ष तुंगभद्रा नदी के तट पर विजयनगर साम्राज्य बसाया।

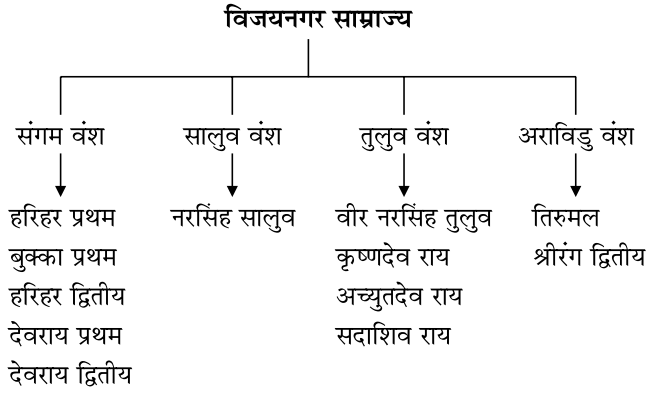

चित्र

(I) विजयनगर साम्राज्य के वंश (Dynasties of Vijaynagar Empire)

(i) संगम वंश (Sangam Dynasty)

(A) हरिहर प्रथम [1336-1356] ई. (Harihara I)

- यह संगम वंश का प्रथम शासक था। इसकी पहली राजधानी **अनेगोण्डी** थी। सात वर्ष पश्चात् उसने विजयनगर को अपनी राजधानी बनाया।
- उसने होयसल को जीतकर विजयनगर में मिलाया, तथा मदुरा के मुसलमानी राज्य को पराजित किया।

(B) बुक्का प्रथम [1356-1377] ई. (Bukka I)

- उसने मदुरा के अस्तित्व को पूर्णतः मिटाकर विजयनगर साम्राज्य में शामिल कर लिया।
- उसने **वेद–मार्ग प्रतिष्ठापक** की उपाधि ग्रहण की थी।
- बुक्का-I ने **चीन में एक दूत मंडल** भेजा तथा उसने तेलुगू साहित्य को प्रोत्साहित किया।
- उसने विद्यानगर का नाम विजयनगर रखा और कृष्णा नदी को विजयनगर एवं बहमनी राज्य की सीमा माना।

(C) हरिहर द्वितीय [1377-1404] ई. (Harihara II)

- इसने **महाराजाधिराज** तथा **राजपरमेश्वरम्** की उपाधि प्राप्त की थी।
- यह शिव के विरूपाक्ष रूप का उपासक था।

(D) देवराय प्रथम [1404-1422] ई. (Devrai–I)

- उसने हरविलास तथा प्रसिद्ध तेलुगू कवि श्रीनाथ को संरक्षण दिया।
- इसके काल में इटली का यात्री **निकोलो कोण्टी (1420 ई.)** ने विजयनगर की यात्रा की।
- इसने **तुर्की तीरंदाजों** को सेना में शामिल किया।
- इसी के शासनकाल में बहमनी शासक फिरोज बहमनी ने विजयनगर पर हमला किया।

(E) देवराय द्वितीय [1422-1446] ई. (Devrai-II)

- यह संगम वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था। इसने कोण्डबिन्दु पर विजय प्राप्त करके अपने साम्राज्य में शामिल किया।
- देवराय-II साहित्य का महान संरक्षक और स्वयं संस्कृत का विद्वान था। उसने दो संस्कृत ग्रंथों **महानाटक सुधानिधि** और **बादरायण के ब्रह्मसूत्र** पर टीका की रचना की।
- उसके समय फारसी यात्री **अब्दुर्रज्जाक** ने विजयनगर की यात्रा की थी।
- संगम वंश का अंतिम शासक **विरूपाक्ष द्वितीय** था, जिसे सालुव नरसिंह ने मारकर सालुव वंश की स्थापना की।
- इसे **इम्मादि देवराय** भी कहा जाता है।
- प्रसिद्ध तेलगू कवि **श्रीनाथ** कुछ समय तक देवराय-II के दरबार में रहे थे।
- एक अभिलेख में देवराय-II को **गजबेतकर (हाथियों का शिकारी)** के नाम से भी सम्बोधित किया गया है।

(ii) सालुव वंश (Saluva Dynasty)

- नरसिंह सालुव अपने वंश का एकमात्र शासक हुआ।

(iii) तुलुव वंश (Tuluva Dynasty)

- तुलुव वंश का संस्थापक वीर नरसिंह तुलुव था।

(A) कृष्णदेवराय [1509-1529] ई. (Krishnadeva Rai)

- कृष्णदेवराय तुलुव वंश का सबसे महान शासक था। बाबरनामा में विजयनगर के शासक कृष्णदेवराय का उल्लेख हुआ है।

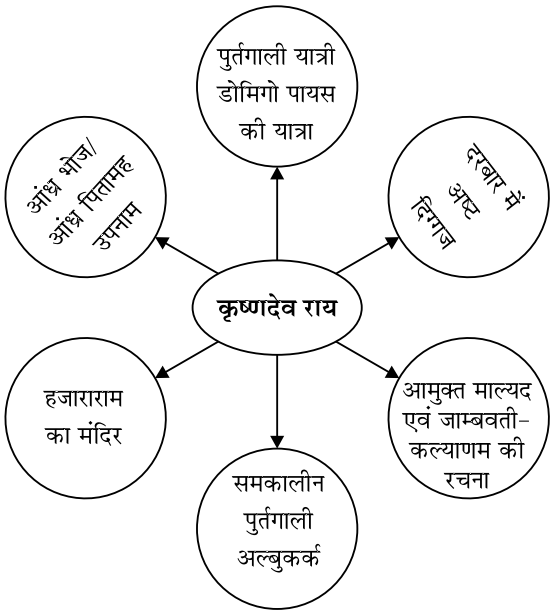

चित्र

- उसने अपने प्रसिद्ध तेलुगू ग्रंथ आमुक्तमाल्याद में अपनी प्रशासनिक नीतियों की विवेचना की है।
- उसने विजयनगर के पास **नागलपुर** नाम का नया शहर बसाया।
- उसके समय में पुर्तगाली यात्री **डोमिंगो पायस, डुआर्ट, बारवोसा** ने विजयनगर की यात्रा की।
- कृष्णदेव राय के शासनकाल को **'तेलुगु साहित्य का स्वर्ण काल'** कहा जाता है।
- वह महान विद्वान, विद्या प्रेमी था जिसके कारण वह **अभिनव भोज, आन्ध्र भोज** के नाम से प्रसिद्ध था। उसके दरबार में **अष्टदिग्गज** (तेलुगु साहित्य के आठ सर्वश्रेष्ठ कवि) रहते थे जिनमें अल्लसीन पेद्दन सर्वप्रमुख थे जो **संस्कृत** एवं **तेलुगु** दोनों ही भाषाओं के ज्ञाता थे।

(B) अच्युतदेव राय [1529-1542] ई. (Achyutdeva Rai)

- उसने महामण्डलेश्वर नामक नये अधिकारी की नियुक्ति की थी।
- इसी के समय में पुर्तगाली यात्री नूनिज ने विजयनगर की यात्रा की थी।

- इसी के शासनकाल में पुर्तगालियों ने तूतीकोरन के मोती क्षेत्र पर विजय प्राप्त कर ली।

(C) सदाशिव राय [1542-1572] ई. (Sadashiva Rai)

- यह विजयनगर का नाममात्र का शासक था। वास्तविक शक्ति आरवीडु वंशीय मंत्री रामराय के हाथों में थी।
- तालीकोटा के युद्ध के समय विजयनगर का शासक सदाशिवराय था, लेकिन युद्ध का नेतृत्वकर्त्ता रामराय था।
- विजयनगर विरोधी महासंघ में अहमदनगर, बीजापुर, गोलकोण्डा और बीदर शामिल थे। (इसमें बरार शामिल नहीं था) इसका संचालक अली आदिलशाह था।
- 23 जनवरी, 1565 ई. में संयुक्त सेनाओं ने **तालीकोटा के युद्ध (बन्नी हट्टी या राक्षण तगड़ी का युद्ध)** में विजयनगर की सेना को हराया और इस तरह विजयनगर साम्राज्य का अंत हुआ।
- इस युद्ध के बाद रामराय के भाई तिरूमाल ने **वेनुगोंडा** को अपनी राजधानी बनाकर विजयनगर के अस्तित्व को कायम रखा।

(iv) अरावीडु वंश (Aruvidu Dynasty)

- तिरूमल ने 1570 ई. में सदाशिव को हटाकर अरावीडु वंश की स्थापना की।
- अरावीडु शासक वेंकट-II के शासनकाल में ही **वॉडेयार** ने 1612 ई. में मैसूर राज्य की स्थापना की थी।
- इस वंश का अंतिम शासक श्रीरंग-III था। धीरे–धीरे विजयनगर साम्राज्य नष्ट हो गया।

(II) विजयनगर की शासन व्यवस्था (Administration of Vijay Nagar Empire)

(i) नायकार व्यवस्था : इसके अनुसार राजा अपने जागीरदारों को निश्चित भूमि जिसे अमरन कहते थे, देता था। इन भूमियों के स्वामियों को अमर–नायक का नाम मिला था। वे राजा को प्रतिवर्ष एक निश्चित राशि देते थे और युद्ध में राजा की मदद करते थे।

(ii) आयगार व्यवस्था : इस व्यवस्था के अंतर्गत कुछ गाँवों को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में संगठित किया गया और इसके प्रशासन के लिए 12 व्यक्तियों को नियुक्त किया गया, इन्हें आयगार पुकारा गया। इनका मुख्य कार्य अपने शासन क्षेत्र में शांति और व्यवस्था कायम रखना था।

(III) प्रशासन क्षेत्र (Administration)

मण्डल (प्रांत) → कोट्टम या वलनाडु (जिला) → नाडु → मेलाग्राम (50 ग्रामों का समूह) → ऊर (ग्राम)

- किसानों को पैदावार का 1/5 भाग लगान के रूप में देना पड़ता था।
- सेना के लिए पृथक् विभाग था जिसका अधिकारी दण्डनायक या सेनापति कहलाता था।
- विजयनगरकालीन सेनानायकों को **नायक** कहा जाता था। वे नायक मूलतः भू–सामंत थे, जिन्हें राजा वेतन के स्थान पर अथवा उनकी अधीनस्थ सेना के रख–रखाव के लिए विशेष भूखण्ड दे देता था जो **अमरम्** कहलाता था।
- विजयनगर का सर्वाधिक प्रसिद्ध सिक्का स्वर्ण का **वराह** था, जिसे विदेशी यात्रियों ने **हूण, परदास** या **पगोडा** के रूप में उल्लेखित किया है। चाँदी के छोटे सिक्के तार कहलाते थे।
- **शेट्टी या चेट्टी :** यह विजयनगर राज्य के व्यापारी वर्ग में प्रमुख समुदाय था।
- **वीर पांचाल :** ये दस्तकार वर्ग था।
- **वेश बाग :** दासों के खरीदे–बेचे जाने की प्रक्रिया को वेश बाग कहा जाता था।,
- **विट्ठलस्वामी का मंदिर** एवं कृष्णदेवराय द्वारा बनवाया गया **हजार स्तम्भों वाला मंदिर** हिन्दू स्थापत्य कला के अद्वितीय नमूने हैं।
- विजयनगर हिन्दुओं का यह प्रथम साम्राज्य था जहाँ संयुक्त शासन प्रणाली थी।
- मध्य वर्ग में **शेट्टी** या **चेट्टी** नामक एक बड़ा समूह था, जिसके हाथों में अधिकांश व्यापार केन्द्रीभूत था।
- विजयनगर में मनुष्य के क्रय–विक्रय को **'वेस वर्ग'** कहा जाता था।
- ग्राम के कतिपय विशिष्ट लोगों को उनकी विशिष्ट सेवाओं के बदले लगभग मुफ्त भूमि दी जाती थी, जिसे **'उबालि'** कहा जाता था।
- युद्ध में शौर्य प्रदर्शन करने पर युद्ध में अनुचित रूप से मृत लोगों के परिवार को जो भूमि दी जाती थी, उसको **'रक्तकोडगे'** कहा जाता था।
- राजा के मौखिक आदेशों को **'कर्णिकम'** लिपिबद्ध करता था।
- विजयनगर काल में युवराज के अल्पायु होने पर प्रति शासक की नियुक्ति ही विजयनगर के पतन का एक महत्त्वपूर्ण कारण सिद्ध हुई।
- सेपेल ने अपनी पुस्तक **'द फॉरगाटन एम्पायर'** में विजयनगर साम्राज्य का इतिहास लिखने वाले प्रथम इतिहासकार थे।

प्रमुख विदेशी यात्री (Main Foreign Travellers)

यात्री	देश	शासक
निकोलो कोण्टी (1420 ई.)	इटली	देवराय-I
अब्दुर्रज्जाक (1442 ई.)	फारस	देवराय-II
नूनिज (1405 ई.)	पुर्तगाल	अच्युतदेवराय
डोमिंगो पायस (1515 ई.)	पुर्तगाल	कृष्णदेवराय
बारबोसा (1515 ई.)	पुर्तगाल	कृष्णदेवराय

6. बहमनी राज्य (Bahmani Empire)

- बहमनी राज्य की स्थापना 1347 ई. में हसन गंगू द्वारा की गई थी। वह अबुल हसन मुजफ्फर अलाउद्दीन बहमनशाह के नाम से सिंहासन पर बैठा। अलाउद्दीन का उत्थान गंगू नामक ब्राह्मण की सेवा में रहते हुए हुआ। उसने गुलबर्गा बनाया और **उसका नाम अहमदाबाद रखा।** उसने हिन्दुओं से जजिया न लेने का आदेश दिया। उसने अपने राज्य को चार सूबों (तर्फों) में विभाजित किया। गुलबर्गा, दौलताबाद, बरार एवं बीदर उसकी प्रान्तीय राजधानियाँ थीं।

- बहमनशाह के बाद उसका पुत्र मुहम्मदशाह प्रथम (1358–1375 ई.) गद्दी पर बैठा। उसने वारंगल और विजयनगर के हिन्दु राजाओं से युद्ध किया। इसी काल में बारूद का प्रयोग **पहली बार हुआ।**

(I) प्रमुख बहमनी शासक (Main Bahmani Rulers)

- प्रमुख बहमनी शासक निम्न हैं–
  - मुहम्मदशाह प्रथम (1358–1375) ई.
  - अलाउद्दीन मुजाहिद (1375–1378) ई.
  - मुहम्मद द्वितीय (1378–1397 ई.)
  - ताजुद्दीन फिरोजशाह (1397–1422) ई.
  - अहमदशाह (1422–1436) ई.
  - अलाउद्दीन अहमदशाह (1436–1458) ई.
  - मुहम्मदशाह III (1463–1482) ई.
- ताजुद्दीन फिरोजशाह ने फिरोजशाह नामक एक शहर बसाया और चोल और दभौल बंदरगाहों की उन्नति की।
- अहमदशाह ने 1425 ई. में बीदर को अपनी राजधानी बनाया और उसी राजधानी को मुहम्मदाबाद का नाम दिया गया।
- अलाउद्दीन अहमदशाह के शासनकाल में महमूद गवाँ को राज्य की सेवा में शामिल किया गया।
- हुमायूँ ने तीन वर्ष तक शासन किया। वह बहुत क्रूर था। उसे दक्कन का नीरो के नाम से भी जाना जाता था।
- मुहम्मद-III के शासनकाल में रूसी यात्री निकितिन ने बहमनी राज्य की यात्रा की थी। इसी काल में महमूद गवाँ प्रधानमंत्री (वजीर) बना और उसे ख्वाजा जहाँ की उपाधि मिली।
- इसी प्रकार बहमनी साम्राज्य में कुल 18 शासक हुए जिन्होंने 175 वर्ष तक शासन किया।

(II) बहमनी राज्य का शासन (Administration of Bahmani Empire)

- बहमनी राज्य चार तर्फों (प्रांत) में विभाजित किया गया था–दौलताबाद, बरार, बीदर और गुलबर्गा (इसमें बीजापुर सम्मिलित था)।
- प्रत्येक अरतफ का प्रमुख तर्फदार होता था।
- महमूद गवाँ के मंत्रित्व काल में प्रांतों की संख्या चार से बढ़ाकर आठ कर दी गई।
- सुल्तान की सहायता हेतु मंत्री एवं अधिकारी होते थे।

वकील–उल–सल्तनत	प्रधानमंत्री
अमीर–ए–जुमला	वित्त मंत्री
वजीर–ए–अशरफ	विदेश मंत्री
वजीर–ए–कुल	सभी मंत्रियों के कार्यों का निरीक्षण
पेशवा	वकील–ए–सल्तनत
कोतवाल	पुलिस अधिकारी
नाजिर	अर्थ विभाग से सम्बन्धित
सद्रे–ए–जहाँ	न्याय एवं धर्म विभाग का अध्यक्ष
अमीर–उस–उमरा	राज्य का सेनापति

- सुल्तान के अंगरक्षक खास–खेल कहलाते थे।
- शिहाबुद्दीन अहमद ने मंसबदारी प्रथा की शुरुआत की जिसमें सैनिक अधिकारियों को उनके मनसब के अनुसार जागीरें दी गईं।

(III) बहमनी राज्य का पतन (Fall of Bahmani Empire)

- बहमनी राज्य का अंतिम शासक खलीमुल्ला था जिसकी मृत्यु 1538 ई. में हुई और उसके पश्चात् बहमनी राज्य पाँच स्वतंत्र राज्यों में विभाजित किया गया।

राज्य	वर्ष (ई.)	संस्थापक	वंश
बीजापुर	1489	यूसुफ	आदिलशाह आदिलशाही
अहमदनगर	1490	मलिक अहमद	निजामशाही
बरार	1490	इमादशाह	इमादशाही
गोलकुण्डा	1512	कुल कुतुबशाह	कुतुबशाही
बीदर	1526	अमीर अली बरीद	बरीदशाही

- 1547 ई. में अहमदनगर ने बरार को अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- बीजापुर ने बीदर को 1618-19 में अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया।
- शाहजहाँ ने 1636 ई. में अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में शामिल कर लिया
- औरंगजेब ने 1686 ई. में बीजापुर और 1687 ई. में गोलकुण्डा को अपने साम्राज्य में शामिल किया।

7. मुगल साम्राज्य मुगलकालीन इतिहास के स्रोत (Mughal Age Sources of History)

(I) साहित्यिक स्रोत (Literary Sources)

लेखक	पुस्तक
बाबर	तुजुक–ए–बाबरी (तुर्की भाषा) (आत्मकथा)
गुलबदन बेगम	हुमायूँनामा
अबुल फजल	आइन–ए–अकबरी, अकबरनामा
अब्बास खाँ शेरवानी	तारीख–ए–शेरशाही
निजामुद्दीन अहमद	तबाकत–ए–अकबरी
जहाँगीर (आत्मकथा)	तुजुक–ए–जहाँगीरी
मुतमिद खाँ	नामा–ए–जहाँगीरी
ख्वाजा कामगार	मासीर–ए–जहाँगीरी

लेखक	पुस्तक
अब्दुल हमीद	पादशाहनामा
इनायत खाँ	शाहजहाँनामा
बदायूँनी	मुंतख्ब–उत–तवारीख
मिर्जा मोहम्मद कजीम	आलमगीर नामा
मुस्तैद खाँ	मासीर–ए–आलमगिरी
वक्फी खाँ	मुन्तखाब–उल–लुबाब

(II) विदेशी विवरण (Foreign Details)

- **ग्राण्ट डफ :** मराठों का इतिहास
- **कर्नल टॉड :** राजपूतों का इतिहास
- **विलियम हाकिन्स :** 1608–13 ई. के बीच जहाँगीर के दरबार में रहा।
- **सर टामस रो :** (1616–19 ई.) जहाँगीर के दरबार में रहा ।
- **फ्रांसिस्को (डच डाक्टर) :** जहाँगीर के दरबार में रहा।
- **बर्नियर (फ्रैन्च डाक्टर), ट्रैवेनियर (फैन्च जौहरी) एवं मनूची :** शाहजहाँ के दरबार में आए।

(III) स्मारक (Monuments)

- **बाबर का मकबरा :** काबुल
- **हुमायूँ का मकबरा :** नई दिल्ली
- **जहाँगीर का मकबरा :** लाहौर
- **शाहजहाँ का मकबरा :** आगरा

8. मुगल वंश के शासक (Mughal Dynasty)

(I) बाबर [1526-1530] ई. (Babur)

- मुगल साम्राज्य के संस्थापक **जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर** का जन्म 14 फरवरी, 1483 को फरगना में हुआ। वह पितृ वंश की तरफ से तैमूर का वंशज एवं मातृ वंश की तरफ से चंगेज खाँ का वंशज था।
- बाबर 1494 ई. में 11 वर्ष की आयु में फरगना की गद्दी पर बैठा। भारत पर आक्रमण से पहले बाबर ने काबुल, बुखारा, खुरासान और समरकन्द पर विजय प्राप्त की थी।
- बाबर ने 1504 ई. में काबुल जीतने के बाद **पादशाह** की उपाधि ग्रहण की।

(i) बाबर का भारत पर आक्रमण (Babur's Invasion on India)

- बाबर ने अपने प्रथम आक्रमण (1519 ई.) में बाजौर और भेरा को जीता और वापस लौटा गया। बाबर खैबर दर्रे से होकर आया था।
- दूसरा आक्रमण भी 1519 ई. में युसुफजई कबीले के विरुद्ध हुआ और वह **पेशावर** से वापस लौट गया।
- तीसरा आक्रमण 1520 ई. में हुआ और सियालकोट उसके अधिकार में आ गया।
- बाबर ने अपने चौथे आक्रमण (1524 ई.) में पंजाब के अधिकांश भाग पर कब्जा कर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।

(ii) बाबर द्वारा लड़े गए प्रमुख युद्ध (Battles Fought by Babur)

- **पानीपत का प्रथम युद्ध (21 अप्रैल, 1526 ई.) :** यह युद्ध बाबर एवं इब्राहिम लोदी के बीच हुआ था। बाबर ने इस युद्ध में तुगलुमा युद्ध पद्धति व तोपखाने (इस युद्ध में पहली बार तोपों का प्रयोग हुआ) का प्रयोग किया। **उस्ताद अली कुली** एवं **मुस्तफा,** दोनों ही बाबर के तोपची थे। इन्होंने तोपों को सजाने की उस्मानी विधि (रूमी विधि) का प्रयोग किया।
- **खानवा का युद्ध (16 मार्च, 1527 ई.) :** यह युद्ध बाबर और मेवाड़ के शासक राणा सांगा के मध्य हुआ। युद्ध जीतने के बाद बाबर ने **'गाजी'** की उपाधि प्राप्त की।
- **चन्देरी का युद्ध (29 जनवरी, 1528 ई.) :** यह युद्ध बाबर और मेदिनीराय के मध्य हुआ जिसमें मेदिनीराय मारा गया। उसने इस युद्ध में **जेहाद** घोषित किया।
- **घाघरा का युद्ध (6 अप्रैल, 1529 ई.) :** इस युद्ध में बाबर ने घाघरा के तट (बिहार) पर अफगानों को हराया। यह बाबर द्वारा लड़ी गई अंतिम लड़ाई थी।

- बाबर ने पद्य में एक नवीन शैली में **मुबइयान** को लिखा जो मुस्लिम कानून की पुस्तक है।
- बाबर की आत्मकथा **'तुजुक–ए–बाबरी'** तुर्की भाषा में थी जिसे अकबर ने अब्दुर्रहीम खानेखाना के द्वारा फारसी भाषा में रूपान्तरण कराया था। इसमें भारत में पाँच मुसलमान राज्य–दिल्ली, गुजरात, बहमनी, मालवा और बंगाल और दो काफिर राज्य–विजयनगर तथा मेवाड़ का वर्णन भी है।
- उसने आगरा में ज्यामितीय विधि पर नूरे अफगान नामक बाग लगवाया जिसे आरामबाग कहा जाता है।
- 26 दिसम्बर, 1530 ई. को बाबर की मृत्यु आगरा में हुई। पहले उसे आगरा के **आरामबाग** में, किन्तु बाद में उसे **काबुल** में बाग ए–बाबर में दफना दिया गया।
- बाबर ने मरने से पहले हुमायूँ को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था।

(II) हुमायूँ [1530-1556] ई. (Humayun)

- बाबर के सबसे बड़े पुत्र हुमायूँ का जन्म 6 मार्च, 1508 ई. को काबुल में हुआ। उसकी माँ माहम सुल्ताना थी।

- हुमायूँ ने 30 दिसंबर, 1530 ई. को 23 वर्ष की आयु में आगरा की गद्दी सम्भाली।

(i) हुमायूँ द्वारा लड़े गए युद्ध (Battles Fought by Humayun)

- **कालिंजर पर आक्रमण (1531 ई.) :** हुमायूँ ने कालिंजर के शासक प्रतापरुद्रदेव पर अपना सबसे पहला आक्रमण किया, लेकिन वह असफल रहा।
- **दौराहा (दोहरिया का युद्ध) और चुनार का प्रथम घेरा (1532 ई.) :** यह युद्ध हुमायूँ और अफगान महमूद लोदी के मध्य हुआ, जिसमें महमूद लोदी पराजित हुआ। इसके बाद हुमायूँ ने चुनारगढ़ का घेरा डाला और शेरशाह के हाथों से छीनने का प्रयास किया।
- **बहादुरशाह से संघर्ष (1535-36 ई.) :** हुमायूँ ने गुजरात के शासक को हराकर माण्डू और चम्पानेर का दुर्ग जीता।
- **चौसा का युद्ध (26 जून, 1539 ई.) :** यह युद्ध हुमायूँ और शेर खाँ के बीच चौसा नामक स्थान पर हुआ। चौसा कर्मनाशा नदी पर स्थित था। इस युद्ध में हुमायूँ पराजित हुआ। युद्ध जीतने के बाद शेरखाँ ने शेरशाह की उपाधि प्राप्त की। इस युद्ध में हुमायूँ बड़ी मुश्किल से निजाम नामक एक भिश्ती की सहायता से गंगा पार कर सका।
- **कन्नौज या बिलग्राम का युद्ध (17 मार्च, 1540 ई.) :** इस युद्ध में शेरशाह ने हुमायूँ को पराजित कर आगरा और दिल्ली पर अधिकार स्थापित कर लिया और हुमायूँ भारत छोड़कर सिन्ध चला गया।

(ii) हुमायूँ का निष्कासित जीवन (1540–55 ई.) (Humayun in Exile)

15 वर्ष के निष्कासित जीवन के दौरान हुमायूँ ने हिन्दाल के गुरु मीर अली अकबर की पुत्री हमीदाबानो बेगम से 1541 ई. में विवाह किया जिसने कालान्तर में अकबर को जन्म दिया।

(iii) भारत की पुनः विजय और मृत्यु (1555–56 ई.) (Reconquest & Death)

- 15 मई, 1555 को मच्छीवारा के युद्ध में मुगलों की विजय हुई और उन्होंने पंजाब को जीत लिया।
- 22 जून, 1555 को सरहिन्द के युद्ध में मुगलों ने सिकन्दर सूर को पराजित किया। इसके बाद हुमायूँ ने दिल्ली, आगरा सम्भल आदि क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया।
- 23 जुलाई, 1555 को हुमायूँ एक बार फिर दिल्ली का बादशाह बना।
- हुमायूँ की मृत्यु **दीनपनाह के पुस्तकालय** की सीढ़ियों से गिरकर, 27 जनवरी, 1556 ई. को हुई । उसने अकबर को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। दिल्ली में **दीनपनाह** नामक नगर की स्थापना हुमायूँ ने ही की थी।
- हुमायूँ की विधवा हाजी बेगम ने हुमायूँ का दिल्ली में मकबरा बनवाया। इस मकबरे को **'ताजमहल का पूर्वगामी'** कहा जाता है।
- हुमायूँ ज्योतिष में विश्वास करता था इसलिए सप्ताह में सातों दिन सात रंग के अलग–अलग वस्त्र पहनता था।

शेरशाह सूरी (शेर खाँ) [1540-1545] ई. (Shershah Suri)

- शेरशाह ने उत्तर–भारत में सूर वंश के द्वितीय अफगान साम्राज्य की स्थापना की। **(पहला अफगान साम्राज्य लोदी वंश का था।)**
- शेरशाह का जन्म 1472 ई. (डॉ. कानूनगो के अनुसार 1486 ई.) में हुआ था। उसके बचपन का नाम फरीद था। 1497 से 1518 ई. तक निरंतर 21 वर्ष तक फरीद ने अपने पिता की जागीर की देखभाल की और शासन का अनुभव प्राप्त किया। **बहारखाँ लोहानी** ने **फरीद** को शेर को मारने के उपलक्ष्य में लक्ष्य शेरखाँ की उपाधि दी।
- शेर खाँ ने **हजरत–ए–आला** की उपाधि धारण की और दक्षिण बिहार का वास्तविक शासक बना।
- 1530 ई. में शेरशाह ने चुनार के किलेदार ताज खाँ की विधवा पत्नी लाड मलिका से विवाह कर चुनार के किले पर अपना अधिकार किया।
- 1539 ई. में **चौसा के युद्ध** में हुमायूँ को पराजित करने के बाद शेरखाँ ने शेरशाह सुल्तान–ए–आदिल की उपाधि ग्रहण की और सुल्तान बना।
- 22 मई, 1545 ई. को **कालिंजर पर आक्रमण** के समय, उसका आग्नेयास्त्र चलाने के दौरान तोपखाना फट जाने से शेरशाह की मृत्यु हो गई।

(I) केन्द्रीय प्रशासन (Central Administration)–शेरशाह स्वयं शासन का प्रधान था। उसके अंतर्गत निम्न विभाग थे–

दीवाने–वजारत : वित्त विभाग, मुख्य अधिकारी : वजीर।

दीवाने–आरिज : सैन्य विभाग, मुख्य अधिकारी : आरिजे मुमालिक।

दीवाने–रसालत : विदेश मंत्री की भाँति कार्य

दीवाने–इंशा : सुल्तान के आदेशों को लिखना, प्रधान : दबीरे मुमालिक।

दीवाने–काजा : सुल्तान के बाद मुख्य न्यायाधीश।

दीवाने–बरीद : गुप्तचर विभाग।

(II) प्रान्तीय प्रशासन (Provincial Administration)

- **सूबा :** शेरशाह ने संपूर्ण सूबे को सरकारों में बांटकर प्रत्येक को एक सैनिक अधिकारी की देख–रेख में छोड़ दिया। उनकी सहायता के लिए सूबे में एक असैनिक अधिकारी **अमीन–ए–बंगाल** भी नियुक्त किया गया।
- **सरकार (जिला) :** प्रत्येक सरकार में दो प्रमुख अधिकारी थे, जिन्हें शिकदार–ए–शिकदारां (सैनिक अधिकारी) और मुन्सिफ–ए–मुन्सिफां (न्याय अधिकारी) कहा जाता था।
- **परगना :** प्रत्येक सरकार कई परगनों में विभाजित था। प्रत्येक परगने में एक शिकदार (सैनिक अधिकारी), एक मुन्सिफ (दीवानी मुकदमों का निर्णय करना), एक फोतेदार (खजाँची) और दो कानकुन (क्लर्क, जो हिसाब किताब लिखते, करते थे।) वे होते थे।

(III) प्रान्तीय एवं स्थानीय प्रशासन (Provincial & Local Administration)

(i) अर्थव्यवस्था (Economy)

- **कबूलियत** एवं **पट्टा प्रथा** की शुरुआत शेरशाह ने की थी।
- उसने भूमिकर निर्धारण के लिए **राई** (फसलदारों की सूची) को लागू करवाया।
- किसानों को संलग्न अधिकारियों के वेतन के लिए सरकार को **जरीबना** और **महासीलाना** नामक कर देना होता था, जो पैदावार का 2½ % से 5% तक होते थे।
- उसने भूमि के माप के लिए **सिकन्दरी गज** (31 अंगुल या 32 इंच) एवं **सन की डंडी** का प्रयोग करवाया।
- शेरशाह ने लगान निर्धारण के लिए तीन प्रकार की प्रणालियाँ अपनाईं (i) गल्लाबक्शी (बटाई), (ii) नश्क (मुक्ताई) अथवा कनकूत, (iii) जब्ती (जमई) ।
- किसानों से पैदावार का 1/3 भाग लगान के रूप में वसूला जाता था।

(ii) मुद्रा (Currency)

- शेरशाह ने घिसे–पिटे पुराने तथा पूर्ववर्ती शासकों के द्वारा चलाये गए सिक्कों का चलन बंद कर दिया।
- उसकी मुद्रा व्यवस्था बहुत श्रेष्ठ थी। उसने चाँदी के रुपये (180 ग्रेन), ताँबे के सिक्के दाम (380 ग्रेन) चलाए। शेरशाह के समय सोने के सिक्के (167 ग्रेन) अशर्फी कहलाते थे।
- उसके समय 23 टकसालें थीं। उसके सिक्कों पर उसका नाम फारसी के साथ–साथ नागरी लिपि में अंकित होता था।

(iii) सड़कें एवं सराय (Roads & Inn)

- शेरशाह ने करीब 1700 सरायों का निर्माण कराया, जिसकी देखभाल शिकदार करता था।
- उसने कई नई सड़कों का निर्माण करवाया और पुरानी सड़कों की मरम्मत करवाई—
  - (i) बंगाल में सोनारगांव से आगरा, दिल्ली होते हुए लाहौर तक। यह सड़क सड़क–ए–आजम कहलाती थी। इसे अब ग्राण्ड ट्रंक रोड कहते हैं।
  - (ii) आगरा से बुरहानपुर तक।
  - (iii) आगरा से चित्तौड़ तक।
  - (iv) लाहौर से मुल्तान तक।

(iv) भवन एवं इमारतें (Buildings & Monuments)

शेरशाह ने **रोहतासगढ़ किला,** दिल्ली का **पुराना किला** (दीनपनाह को तुड़वाकर) एवं उसके अंदर **किला–ए–कुहना, सासाराम (बिहार) में स्वयं का मकबरा बनवाया,** कन्नौज नगर को बर्बाद कर **शेरसूर नगर** बसाया और **पाटलिपुत्र को पटना** के नाम से पुनः स्थापित किया।

(v) अन्य तथ्य

- मलिक मोहम्मद जायसी शेरशाहसूरी कालीन थे।
- शेरशाह का समकालीन इतिहासकार हसन अली खाँ था जिसने तवारीख–ए–दौलते–शेरशाही की रचना की थी।

(III) अकबर [1556-1606] ई. (Akbar)

- अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 ई. को **अमरकोट** के **राजा वीरसाल के महल** में हुआ था। उसकी माता का नाम हमीदा बानो बेगम था। वह तीन वर्ष तक अस्करी के संरक्षण में था। अकबर से हुमायूँ की भेंट पुनः तब हुई जब हुमायूँ ने काबुल और कन्धार पर विजय प्राप्त की। इस समय उसका नाम जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर रखा गया। अकबर ने गजनी और लाहौर के सूबेदार के रूप में कार्य किया।
- हुमायूँ की मृत्यु के अवसर पर वह अपने संरक्षक **बैरम खाँ** के साथ पंजाब में सिकन्दर सूर से युद्ध कर रहा था। अकबर का राज्याभिषेक पंजाब में गुरदासपुर जिले के समीप कलानौर नामक

स्थान पर 14 फरवरी, 1556 ई. को बैरमखाँ की देख–रेख में मिर्जा अबुल कासिम ने किया। इस समय अकबर की आयु मात्र 13 वर्ष थी।

- बैरम खाँ के संरक्षण में अकबर (1556–60 ई.)
- अकबर ने बैरम खाँ को अपना **वकील (वजीर)** नियुक्त किया और उसे **खान–ए–खाना** की उपाधि दी। अकबर की प्रारंभिक कठिनाइयों का हल निकालने और भारत में मुगल साम्राज्य की सुरक्षा करने का श्रेय बैरमखाँ को ही था।

(i) पानीपत का दूसरा युद्ध [5 नवम्बर, 1556] ई. (Second Battle of Panipat)

- पानीपत का दूसरा युद्ध वास्तव में अकबर के संरक्षक **बैरमखाँ** और मोहम्मद आदिलशाह शूर के वजीर **हेमू** के मध्य हुआ, जिसमें हेमू की पराजय और मृत्यु हो गई।
- लेकिन 1560 ई. में बैरमखाँ का पतन हो गया। अकबर ने उसे मक्का चले जाने को कहा। मक्का जाते वक्त पाटन (गुजरात) नामक स्थान पर **मुबारक खाँ** नामक एक अफगान ने बैरम खाँ की हत्या कर दी।

(ii) पर्दा शासन [1560-1564] ई. (Peticot Rule)

- बैरम खाँ की मृत्यु के बाद, अकबर पर शाही हरम का प्रभाव रहा, जिसमें माहम अनगा का प्रभाव सर्वाधिक था। लेकिन आधमखाँ (माहम अनगा का पुत्र) को मृत्युदण्ड (1562 ई.) और माहम अनगा की मृत्यु (1562 ई.) के बाद अकबर ने स्वयं को अपने निकटस्थ सम्बन्धियों के प्रभाव से आजाद कर लिया।

  1562 ई. – दास प्रथा का अंत

  1563 ई. – तीर्थकर का अंत।

  1564 ई. – जजिया कर का अंत।

(iii) हल्दी घाटी का युद्ध [18 जून, 1576] ई. (Battle of Haldi Ghati)

- यह युद्ध राणा प्रताप और मुगल (नेतृत्व राजा **मान सिंह** एवं **आसफ खाँ**) के मध्य हल्दीघाटी में हुआ इस युद्ध में राणा प्रताप पराजित हुआ (राणा प्रताप की मृत्यु 1599 ई. में हुई)।
- अकबर की मृत्यु 25 अक्टूबर, 1605 ई. में हुई। उसे बौद्ध प्रभाव से निर्मित सिकन्दरा (आगरा) के मकबरे में दफनाया गया। अकबर की मृत्यु के समय उसका एकमात्र जीवित पुत्र सलीम था।

(iv) अकबर की राजपूत नीति (Rajput Policy of Akbar)

अकबर की राजपूत नीति दमन और समझौते की थी। उसने राजपूतों के साथ वैवाहिक सम्बन्धों की शुरुआत की। अकबर ने आमेर के राजा भारमल की पुत्री **हरखा भाई** से विवाह किया, जिससे उत्पन्न पुत्र का नाम सलीम था।

(v) अकबर के दरबार के नौ रत्न (Nine Gems of Akbar)

- **बीरबल :** अकबर ने उसे राजा एवं कविप्रिय की उपाधि दी।
- **टोडरमल :** वह अकबर का वित्तमंत्री था। उसने भूमि माप के आधार पर लगान की पद्धति का विकास किया।
- **मानसिंह :** वह अकबर का सेनापति था।
- **तानसेन :** वह अकबर के दरबार का प्रसिद्ध गायक था। वह ग्वालियर से सम्बन्धित था। (उसका मकबरा भी ग्वालियर में है।) अकबर ने तानसेन को कण्डामरवाणी की उपाधि दी।
- **मुल्ला दो प्याजा :** प्याज से अधिक प्रेम होने के कारण इसे मुल्ला दो प्याजा कहा जाता था।
- **हकीम हुमाम :** वह शाही विद्यालय का प्रमुख था।
- **फैजी :** वह अबुल फजल का बड़ा भाई था। उसने लीलावती (गणित की पुस्तक) का फारसी भाषा में अनुवाद किया था।
- **अब्दुर्रहीम खानेखाना :** वह बैरम खाँ का पुत्र था।
- **अबुल फजल :** उसने अकबरनामा की (फारसी) की रचना की, जिसका तीसरा भाग आइने अकबरी कहलाता है। यह अकबर के शासनकाल का सरकारी गजट माना जाता है। 1602 ई. में सलीम के इशारे पर ओरछा के राजा वीर सिंह बुन्देला ने अबुल फजल की हत्या कर दी।

(vi) अकबर की धार्मिक नीति (Religious Policy of Akbar)

अकबर की धार्मिक नीति का उद्देश्य सार्वभौमिक सहिष्णुता से परिपूर्ण था।

(A) इबादतखाना (प्रार्थना भवन) (1575 ई.) : अकबर ने फतेहपुर सीकरी में दार्शनिक एवं धार्मिक विषयों पर वाद–विवाद के लिए इबादतखाना स्थापित करवाया। पहले यह केवल इस्लाम धर्म के लोगों के लिए खुला था, लेकिन 1578 ई. से सभी धर्म के लोग इबादतखाने में जाने लगे।

अकबर ने विभिन्न धर्म के विद्वानों को इबादतखाने में आमंत्रित किया जिनमें प्रमुख थे–

जैन धर्म से–जिनचन्द्र सूरि, हरिविजय सूरी, विजयसेन सूरि, पारसी धर्म से–दस्तूर मेहर जी राणा, ईसाई धर्म से मोंसेरात एवं एकाबीवा और हिन्दू धर्म से पुरुषोत्तम और देवी।

(B) मजहरनामा (घोषणा पत्र) (1579 ई.) : मजहरनामा के द्वारा अकबर ने स्वयं को धर्म के मामलों में सर्वोच्च बना दिया। इसके बाद उसने सुल्तान–ए–आदिल की उपाधि ग्रहण की।

(C) दीन–ए–इलाही (1582 ई.) : अकबर ने सभी धर्मों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए दीन–ए–इलाही (अबुज फजल के अनुसार **तौहीद–ए–इलाही)** की स्थापना की। **बीरबल** (मूल नाम–महेशदास था) इसे स्वीकार करने वाला प्रथम एवं अंतिम हिन्दू था।

(D) सुलह कुल : इसके द्वारा अकबर ने सार्वभौमिक सौहार्द्र व शांति स्थापित करने का प्रयास किया। इस उत्सव की शुरुआत अकबर ने **आगरा** में की थी। अकबर ने जैन गुरु **हरिविजय सूरि** को जगतगुरु व **जिनचन्द्र सूरि** को **युग प्रधान** की उपाधि दी थी।

अकबर का सम्राज्य विस्तार

(Empire Expension of Akbar)

क्र.सं.	प्रदेश	काल	पराजित शासक	मुगल सेनापति
1.	मालवा (राजधानी–सांगरपुर)	1561 ई.	बाजबहादुर	आधम खाँ
2.	चुनार	1561 ई.		आसफ खाँ
3.	गोण्डवाना	1564 ई.	वीरनारायण	आसफ खाँ
4.	राजस्थान			
	(i) आमेर (जयपुर)	1562 ई.	भारमल	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकार की
	(ii) मेड़ता	1562 ई.	जयमल	सर्फुउद्दीन
	(iii) मेवाड़	1568 ई.	उदय सिंह	अकबर
	(हल्दीघाटी युद्ध)	1576 ई.	महाराणा प्रताप	आसफ खाँ एवं मानसिंह
	(iv) रणथम्भौर	1569 ई.	सुजनराय	अकबर एवं भगवान दास
	(v) कालिंजर (बाँदा, उ.प्र.)	1569 ई.	रामचन्द्र	मजनू खाँ
	(vi) मारवाड़	1570 ई.	चन्द्रसेन	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकार की
	(vii) बीकानेर	1570 ई.	राजा कल्याणमल	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकार की
	(viii) जैसलमेर	1570 ई.	हरराय	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकार की
5.	गुजरात (प्रथम युद्ध)	1572 ई.	मुजफ्फर खाँ-III	अकबर
	(द्वितीय युद्ध)	1573 ई.	मुहम्मद हुसैन मिर्जा	अकबर
6.	बिहार एवं बंगाल	1574-76 ई.	दाऊद खाँ	मुनीम खाँ एवं अकबर
7.	काबुल	1581 ई.	हकीम मिर्जा	मानसिंह एवं अकबर
8.	कश्मीर	1586 ई.	याकूब खाँ	भगवान दास एवं कासिम खाँ
9.	सिन्ध	1591 ई.	जानीबेग	अब्दुर्रहीम खानेखाना
10.	उड़ीसा	1590-92 ई.	निसार खाँ	मानसिंह
11.	बलूचिस्तान	1595 ई.	पन्नी अफगान	मीर मासूम
12.	कन्धार	1595 ई.	मुजफ्फर हुसैन	मुगल सरदार शाहबेग को स्वेच्छा से किला सौंप दिया।
13.	दक्षिण भारत			
	(i) खानदेश	1591 ई.	अली खाँ	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकार की
	(ii) अहमदनगर	1600 ई.	बहादुर निजामशाह	खानेखाना एवं शहजादा मुराद
	(iii) असीरगढ़	1601 ई.	मीरन बहादुर	अकबर (यह उसका अंतिम अभियान था)

(E) सामाजिक कार्य (Social Work)

- अकबर ने **तुलादान, पायबोय** एवं **झरोखा दर्शन** जैसी पारसी परंपराओं की शुरुआत की।
- बहारुद्दीन ने फतेहपुर सीकरी का खाका तैयार किया था।
- अकबर ने सती प्रथा को रोकने का प्रयास किया, विधवा विवाह को कानूनी रूप से मान्यता प्राप्त कराई, शराब बिक्री पर रोक लगाई और लड़के, लड़कियों के विवाह की उम्र 16 वर्ष एवं 14 वर्ष निर्धारित की।

(F) मनसबदारी व्यवस्था (Mansabdari System)

अकबर ने 1575 ई. में मनसबदारी व्यवस्था के आधार पर सैन्य संगठन किया। यह व्यवस्था नागरिक व सैन्य व्यवस्था का आधार थी। प्रत्येक सैनिक अधिकारी को **मनसब (पद)** दिया गया। इस व्यवस्था का मुख्य आधार **दशमलव प्रणाली** था। मीर बक्शी मनसबदारों की सूची रखता था। बाद में अकबर ने मनसबदारी व्यवस्था में जात और सवार के पदों को आरंभ किया था।

(G) लगान व्यवस्था (Revenue/Tax System)

- राज्य की आय का प्रमुख साधन लगान (भूमि कर) था। अकबरकालीन लगान व्यवस्था श्रेष्ठतम लगान पद्धति थी।
  - **दहसाला व्यवस्था (1580) :** इसे टोडरमल ने प्रारंभ किया। उसका मुख्य सहायक ख्वाजा शाह मंसूर था।
  - **नश्क प्रणाली (कनकूत प्रणाली) :** इसमें फसल देखकर पैदावार का अंदाजा लगाया जाता था।

- **गल्ला बक्शी (बँटाई) :** फसल का किसान एवं राज्य में बँटवारा।
- **जब्ती अथवा नकदी :** पैमाइश और गल्ले की किस्म के आधार पर लगान तय करना।
- भूमि नापने के लिए 1586-87 ई. में गज–इलाही (41अंगल या 33½ % इंच) का प्रयोग बुलंद किया गया।
- राज्य का हिस्सा कुल पैदावार का भाग होता था।

(H) प्रमुख अनुवाद (Major Translations)

- महाभारत का अनुवाद नकीब खाँ, बदायूँनी, अबुल फजल, फैजी आदि विद्वानों द्वारा **'रज्मनामा'** के नाम से किया।
- बदायूँनी ने **'रामायण'** का अनुवाद किया।
- बदायूँनी ने **अर्थववेद** का अनुवाद प्रारम्भ किया, जिसे हाजी इब्राहिम सरहिन्दी ने समाप्त किया। **लीलावती** का अनुवाद फैजी ने किया, **राजतरंगिणी** का अनुवाद मुहम्मद शाहबादी ने, **कालियादमन** का अबुल फजल ने, **नलदमयन्ती** का फैजी ने किया।
- अबुल फजल ने **पंचतंत्र** का अनुवाद कर उसका नाम अनवर–ए–सादात रखा।

(I) अकबर के दरबार में प्रमुख चित्रकार (Main Painters in the Court of Akbar)

दशवन्त, वसावन, मीर सैयद अली एवं ख्वाजा अब्दुस्समद

(J) स्थापत्य कला

- अकबर ने **आगरा में लाल किला** बनवाया। किले के अंदर **जहाँगीरी महल** तथा **अकबरी महल** का निर्माण भी कराया।
- आगरा से कुछ दूरी पर **फतेहपुर सीकरी** का निर्माण भी करवाया। यहाँ गुजरात जीतने के उपलक्ष्य में विश्व का सबसे बड़ा **बुलंद दरवाजा** का निर्माण करवाया। इसके कुछ प्रमुख भवन हैं–
  - दीवाने आम
  - दीवाने खास
  - शेख सलीम चिश्ती का मकबरा
  - 176 फीट ऊँचा बुलंद दरवाजा
  - जोधाबाई का पंच महल

(K) अन्य तथ्य (Other Facts)

- 1575-76 में संपूर्ण साम्राज्य 12 सूबों में विभाजित किया गया (दक्षिण की विजय के बाद संख्या 15 हो गई) ।
- 1573-74 में गुजरात विजय के बाद मनसबदारी प्रथा की शुरुआत हुई। उसने मुहर नामक एक सोने का सिक्का **शंसब** और ₹ 10 मूल्य के बराबर गोलाकार सिक्का **इलाही** चलाया। चाँदी का सिक्का **जलाली** एवं ताँबे का सिक्का **दाम** कहलाता था।
- 1601 ई. में अकबर ने अपने अंतिम आक्रमण में असीरगढ़ के किले को जीता, बताया जाता है कि अकबर ने असीरगढ़ का किला **'सोने की कुंजियों'** से खोला था।
- अकबर के नवरत्नों में से एक तानसेन (मूल नाम– रामतनु पाण्डेय) को **कण्ठाभरणवाणी विलास** की उपाधि प्रदान की।
- अकबर के समय में **स्वामी हरिदास** एक महान संगीतज्ञ थे। वह वृंदावन (मथुरा) में रहकर भगवान श्रीकृष्ण की उपासना किया करते थे।
- अकबर के विरुद्ध जौनपुर **मुल्लायाज्दी** ने फतवा जारी किया था।
- अकबर की 1605 ई. में अतिसार रोग के कारण मृत्यु हो गई, उसे उसके कहे गये स्थान **सिकन्दरा (आगरा)** में दफनाया गया।

(IV) जहाँगीर [1605-1627] ई. (Jahangir)

- जहाँगीर (सलीम) का जन्म 30 अगस्त, 1569 को हुआ था। उसकी माता आमेर (जयपुर) के राजा भारमल की पुत्री **हरखाबाई मरियम उज्जमानी** थी।
- अकबर सलीम को शेखूबाबा के नाम से पुकारता था।
- जहाँगीर का प्रमुख शिक्षक बैरम खाँ का पुत्र **अब्दुर्रहीम खानेखाना** था।

- जहाँगीर का राज्याभिषेक 3 नवम्बर, 1605 को आगरा के किले में हुआ और उसे नुरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर बादशाह गाजी की उपाधि दी गई।
  - बादशाह बनने के बाद उसने 12 आदेश जारी किए जिसमें मुख्य इस प्रकार हैं–
  - शराब व मादक पदार्थों के निर्माण व बिक्री को वर्जित किया जाये।
  - रविवार (अकबर का जन्म दिवस) एवं बृहस्पतिवार (जहाँगीर के राज्याभिषेक का दिन) को पशु वध बन्द करवाया। दण्डस्वरूप नाक एवं कान काटने की प्रथा का अंत।
  - किसानों की भूमि पर जबरन कब्जा पर रोक।

(i) खुसरो का विद्रोह (Revolt of Khusrao)

1606 में जहाँगीर के बड़े पुत्र खुसरो ने विद्रोह किया और आगरा से भाग निकला। सिख गुरु अर्जुन सिंह ने उसकी सहायता की। **1621 ई. में खुर्रम ने खुसरो को मरवा डाला।** जहाँगीर ने सिख गुरु अर्जुन सिंह को खुसरो की सहायता करने के लिए 1606 में मृत्यु दण्ड दे दिया।

- जहाँगीर ने मेवाड़ के साथ युद्ध कर **1615 ई.** में **मेवाड़** की संधि की, जिसमें मेवाड़ के राणा अमरसिंह ने मुगलों का आधिपत्य स्वीकार किया और मेवाड़ पुनः प्राप्त कर लिया।
- दक्षिण में खुर्रम ने अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में शामिल कर लिया। **1617 ई.** में अहमदनगर और मुगलों में संधि हो गई।
- जहाँगीर के काल में काँगड़ा पर मुगलों ने विजय प्राप्त की।
- जहाँगीर के समय **1622 ई.** कन्धार भारत के हाथ से निकल कर और शाह अब्बास के हाथ में चला गया।
- **1722 में** शाहजहाँ तथा **1626 ई.** में महाबत खाँ ने जहाँगीर के खिलाफ विद्रोह कर दिया था। महाबत खाँ ने जहाँगीर को झेलम नदी के किनारे बंदी बनाया था। नूरजहाँ ने महाबत खाँ के विद्रोह को कुचलने में अहम भूमिका निभाई।

(ii) यूरोप निवासियों का आगमन (Advent of Europeans)

- जहाँगीर के दरबार में सबसे पहले पुर्तगाली आए थे। जहाँगीर ने उन्हें स्वतंत्रता के साथ–साथ अतिरिक्त मदद दी। वह जेसुइट पादरियों खासकर **फादर जेवियर** से बहुत प्रभावित था।
- अंग्रेज भी व्यापारिक सुविधाओं का फायदा उठाना चाहते थे, और **विलियम हाकिन्स, सर टामस रो, विलियम फिंच** एवं **एडवर्ड टेरी,** जहाँगीर के दरबार में आए। जहाँगीर ने हाकिन्स को 400 का मनसब दिया था।
- जहाँगीर ने 1606 ई. में नौरोज (9 दिन का पारसी त्यौहार) धूमधाम से मनाया।
- उसने आगरे के किले से कुछ दूर तक घंटियाँ लगवाईं, जिसमें एक स्वर्ण जंजीर लगी थी। जिससे कोई भी व्यक्ति घंटी बजाकर सीधे बादशाह से संपर्क कर न्याय माँग सकता था। उसे **'न्याय की जंजीर'** का शासक कहा गया है।
- जहाँगीर ने **दो अस्पा तथा सिंह अस्पा** की प्रथा चलाई। दो अस्पा में मनसबदार को अपने सवार पद के दो गुना घोड़े रखने होते थे और सिंह अस्पा में तीन गुना ज्यादा घोड़े होते थे।
- जहाँगीर ने सिखों के पाँचवें **गुरु अर्जुन देव** को शहजादे खुसरो की सहायता करने के लिए फाँसी पर लटका दिया।
- सलीम ने अपनी मलिका **मानबाई** को **शाह बेगम** का पद प्रदान किया था, लेकिन बाद में उसने सलीम की शराब पीने की आदतों से बहुत दुःखी होकर आत्महत्या कर ली।
- महरुन्निसा या नूरजहाँ तेहरान निवासी मिर्जा गयासबेग की पुत्री थी। जहाँगीर ने गयासबेग को **'एत्मादुद्दौला की उपाधि'** दी थी।
- जहाँगीर ने अपने शासनकाल में एक हिन्दू जज **श्रीकान्त** को नियुक्त किया।
- जहाँगीर अस्थमा रोग का मरीज था।

नूरजहाँ
(Nurjahan)

नूरजहाँ के बचपन का नाम **मेहरुन्निसा** था। 1594 में मेहरून्निसा का विवाह अलीकुलीबेग के साथ हुआ। अलीकुलीबेग की मृत्यु के बाद मई 1611 में जहाँगीर ने उससे विवाह किया और उसे नूरमहल व नूरजहाँ की उपाधियाँ दीं। 1613 में नूरजहाँ को पट्टमहिषी या बादशाह बेगम बनाया गया। उसने नूरजहाँ गुट को बनाया। नूरजहाँ का प्रभुत्व शासन में बढ़ता गया जिसके कारण शाहजहाँ ने विद्रोह किया। 1621 ई. में नूरजहाँ ने शेर अफगान (अलीकुलीबेग) से पैदा हुई अपनी पुत्री लाड़ली बेगम का विवाह शहरयार से कर दिया। जहाँगीर की मृत्यु के बाद नूरजहाँ ने शहरयार को बादशाह घोषित कर दिया।

- नूरजहाँ की माँ **अस्मत बेगम** उसकी मुख्य परामर्शदात्री थी और **इत्र की आविष्कारक** भी मानी जाती हैं।
  - जहाँगीर ने अपनी जीवन गाथा **'तुजुके जहाँगीर'** की रचना फारसी भाषा में की।

(iii) चित्रकला और कला का विकास : मुगल काल में चित्रकला का चरमोत्कर्ष जहाँगीर के काल में ही आया। उसके दरबार में **उस्ताद मंसूर** एवं **अबुल हसन** सबसे खास चित्रकार थे। जहाँगीर ने अबुल हसन को **नादिरुज्जमा** एवं उस्ताद मंसूर को **नादिल–उल–असर** की उपाधि दी। जहाँगीर ने हेरात के चित्रकार **आकारिजा** के नेतृत्व में आगरा में एक चित्रशाला की स्थापना की।

- जहाँगीर के शासनकाल में **मुगल चित्रकला अपने चरमोत्कर्ष** पर थी। इसके काल को **'चित्रकला का स्वर्णकाल'** कहा जाता है।

(iv) स्थापत्य कला (Architecture)

- जहाँगीर ने आगरा के निकट सिकन्दरा में **अकबर का मकबरा, लाहौर की मस्जिद** बनवाई।
- जहाँगीर के काल में अंतिम भाग में पूरी तरह संगमरमर की इमारतें बनवाने का तथा दीवारों को फूलदार आकृतियों में सजाने का चलन शुरू हुआ। साज–सज्जा की यह शैली **जड़ाऊ नक्काशी (पिएत्रा दुयूरा)** के नाम से जानी गई।
- नूरजहाँ द्वारा आगरा में बनवाया गया उसके पिता **'एत्मातुद्दौला का मकबरा'** पच्चीकारी और संगमरमर के पत्थर के इस्तेमाल के कारण अद्वितीय है।
- जहाँगीर की मृत्यु 7 नवम्बर, 1627 को भीमवार नामक स्थान पर हुई। उसे लाहौर में दफनाया गया जहाँ बाद में नूरजहाँ ने एक मकबरा बनवाया।

(V) शाहजहाँ [1627-1658] ई. (Shahjahan)

- शाहजहाँ (खुर्रम) का जन्म 5 जनवरी, 1592 ई. को लाहौर में हुआ। उसकी माता मारवाड़ के शासक उदय सिंह की पुत्री **जगतगोसाई थी**। खुर्रम का विवाह 1612 ई. में आसफ खाँ की पुत्री **अर्जुमन्द बानो बेगम** के साथ हुआ जो बाद में मुमताज महल के नाम से प्रसिद्ध हुई।
- 1627 ई. में जब जहाँगीर की मृत्यु हुई तब शाहजहाँ दक्षिण भारत में था। उसके श्वसुर आसफ खाँ और ख्वाजा अबुल हसन ने कूटनीतिक चाल के अन्तर्गत खुसरो के पुत्र दावर बक्श को सिंहासन पर बैठाया। शाहजहाँ के आदेश पर उसके सभी प्रतिद्वंद्वियों और दावर बक्श को समाप्त कर दिया गया।
- 24 फरवरी, 1628 ई. को शाहजहाँ आगरा में अबुल मुजफ्फर शाहबुद्दीन मुहम्मद साहिब **किरन–ए–सानीर** की उपाधि लेकर गद्दी पर बैठा। उसने आसफ खाँ को चाचा और महाबत खाँ को खाने खाना की उपाधि दी।

- इसके काल में 1628–31 ई. में खानेजहाँ लोदी के नेतृत्व में अफगानों का विद्रोह हुआ।
- मुगल बादशाह द्वारा पुर्तगालियों को नमक के व्यापार का एकाधिकार दिया गया, लेकिन उनकी उद्दण्डता के कारण शाहजहाँ ने 1632 ई. में उन्हें चित्रगोंग से खदेड़ दिया।

(i) साम्राज्य विस्तार (Expansion of Empire)

- शाहजहाँ ने दक्षिण भारत में महाबत खाँ के नेतृत्व में अहमदनगर पर 1633 ई. में आक्रमण कर उसे मुगल साम्राज्य में शामिल कर लिया।
- गोलकुण्डा के शासक अब्दुल्ला कुतुबशाह ने 1636 ई. में मुगलों से संधि कर ली। इस संधि के बाद शाहजहाँ ने औरंगजेब को दक्षिण का सूबेदार बनाया और औरंगाबाद को मुगलों की दक्षिण के सूबे की राजधानी बनाया गया। औरंगजेब दक्षिण का सूबेदार पहली बार 1636–44 ई. तक रहा और दूसरी बार 1652–57 ई. में फिर से सूबेदार बना।
- **मीर जुमला** जो हीरे और कीमती पत्थरों का व्यापारी था, अपनी योग्यता से गोलकुण्डा का प्रधानमंत्री बना था। उसने भी मुगलों का संरक्षण मान लिया। मीर जुमला के सहयोग से ही बीजापुर ने औरगंजेब से संधि की थी और 1636 ई. में बीजापुर ने मुगल आधिपत्य स्वीकार कर लिया।

मुमताज महल (Mumtaz Mahal)

- शाहजहाँ की सभी प्रमुख संतानें मुमताज से ही उत्पन्न हुई थीं। उसकी **14** संतानों में से 7 ही जीवित रहीं। इनमें **4 पुत्र** एवं **3 पुत्रियाँ** थीं। ये थे–जहानआरा (1614 ई.), दाराशिकोह (1615 ई.), शाहशुजा (1616 ई.), रोशनआरा (1617 ई.), औरंगजेब (1618 ई.), मुरादबक्श (1624 ई.) और गोहनआरा (1631 ई.।) इनमें से प्रत्येक ने उत्तराधिकार के युद्ध में भाग लिया। जहाँआरा दाराशिकोह के पक्ष में थी, रोशनआरा औरंगजेब के पक्ष में और गोहनआरा मुरादबक्श के पक्ष में थे।
- अर्जुमन्द बानो बेगम (मुमताज महल) की मृत्यु 1633 ई. में प्रसव पीड़ा के दौरान बुरहानपुर में हुई थी। उसी की कब्र पर शाहजहाँ ने आगरा में ताजमहल बनवाया।

(ii) स्थापत्य कला (Architecture)

- शाहजहाँ का काल स्थापत्य कला का स्वर्ण काल कहा जाता है। उसने दिल्ली का लाल किला और जामा मस्जिद, आगरा के किले में मोती मस्जिद, दीवाने आम, दीवाने खास और ताजमहल, लाहौर के किले में दीवाने–आम, मुसमम बुर्ज, शीशमहल, नौलक्खा और ख्वाबगाह बनवाया।
- उसने रावी नहर लाहौर तक बनवायी और 3 नहर–ए–साहिब को ठीक करवाकर उसे **60 मील** लंबा कराया और उसका नाम नहर–ए–शाह रखा।
- आगरा की **जामा मस्जिद** शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा ने बनवाई थी।
- ताजमहल का निर्माण करने वाला मुख्य कलाकार उस्ताद अहमद लाहौरी था जिसे शाहजहाँ ने नादिर–उज–असर की उपाधि दी थी।
- संसार का सबसे प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा शाहजहाँ के ही पास था।
- शाहजहाँ के शासनकाल को **स्थापत्य कला का स्वर्णकाल तथा निर्माताओं का राजकुमार** कहा जाता है।

(iii) साहित्यिक कार्य (Literary Works)

- **गंगाधर** और **जगन्नाथ पंडित (गंगा लहरी के लेखक)** शाहजहाँ के राजकवि थे।
- **आचार्य सरस्वती** और **सुन्दरदास** (सुन्दर श्रृंगार और सिंहासन बत्तीसी के लेखक) को राजकीय संरक्षण प्राप्त था।
- अब्दुल हमीद लाहौरी ने **पादशाहनामा** लिखा और इनायत खाँ की रचना की।
- दारा शिकोह संस्कृत, अरबी एवं फारसी का विद्वान था। उसने कई पुस्तकों का फारसी में अनुवाद करवाया। मुंशी बनवारीदास ने प्रबोध चन्द्रोदय एवं इब्न हरिकरन ने रामायण का अनुवाद किया।
- दारा शिकोह ने **भागवत गीता, योगवशिष्ठ, रामायण** का फारसी में अनुवाद कराया।
- दारा शिकोह ने **52 उपनिषदों का** अनुवाद **सिर्र–ए–अकबर** के नाम से किया।

(iv) उत्तराधिकार का युद्ध और शाहजहाँ का अंत (Wars of Succession & End of Shahjahan)

- पुनः शाहजहाँ के पुत्रों में उत्तराधिकारी के लिए युद्ध हुआ इनमें से औरंगजेब विजयी रहा।

  ये युद्ध थे–

  - **बहादुरपुर का युद्ध (14 फरवरी, 1658 ई.)** : इस युद्ध में शाहशुजा शाही सेना से हार गया।
  - **धरमत का युद्ध :** औरंगजेब और मुराद की सेनाओं ने शाही सेना को पराजित किया।
  - **सामूगढ़ का युद्ध, (8 जून, 1658 ई.) :** औरंगजेब और मुराद की सेनाओं ने दारा को हरा दिया। इस युद्ध के बाद शाहजहाँ कैदी बना लिया गया। कैद में 8 वर्ष रहने के बाद 1666 ई. में शाहजहाँ की मृत्यु हो गई।
  - **खजवा का युद्ध :** औरंगजेब ने शाहशुजा को पराजित किया।
  - **देवराई का युद्ध :** औरगंजेब ने अजमेर के समीप देवराई के दर्रे में दारा को परास्त कर कैद कर लिया और 30 अगस्त, 1659 को उसका कत्ल कर दिया।

(v) अन्य तथ्य (Other Facts)

- फ्रेंच यात्री बर्नियर एवं इटली का यात्री **मनूची** ने शाहजहाँ के शासन का उल्लेख किया है।
- शाहजहाँ का रत्न जड़ित सिंहासन **तख्ते ताउस** था, जिसमें कोहिनूर हीरा जड़ा था।
- शाहजहाँ ने दारा को **शाहुबलन्द इकबाल** की उपाधि दी थी।
- शाहजहाँ ने लाल खाँ को गुनसमुन्दर (गुण समुद्र) की उपाधि दी थी।
- शाहजहाँ ने **सिजदा** और **पायबोस** की प्रथा को समाप्त कर उसके स्थान पर चहार तस्लीम की प्रथा शुरू करवाई।

(VI) औरंगजेब [1658-1707] ई. (Aurangzeb)

- औरंगजेब का जन्म 3 नवम्बर, 1618 ई. को **उज्जैन के निकट दोहद** नामक स्थान पर हुआ था। 18 मई, 1637 ई. को औरंगजेब का विवाह **रबिया बीबी (दिलरासबानो बेगम)** से हुआ था।
- उसका राज्याभिषेक दो बार हुआ–**पहला राज्याभिषेक 31 जुलाई, 1658 ई. को आगरा में हुआ** और **दूसरा दिल्ली में 15 जून, 1659 ई.** को हुआ। वह अब्दुल मुज्जफर मुहीउद्दीन मुहम्मद औरंगजेब **बहादुर आलमगीर पादशाह गाजी** की उपाधि ग्रहण कर मुगल सिंहासन पर बैठा।
- जनता के आर्थिक कष्टों के निवारण के लिए शहदारी (आंतरिक पारगमन शुल्क) और पानदारी (व्यापारिक चुंगियों) आदि करों को समाप्त कर दिया।
- औरंगजेब ने कुरान को अपने शासन का आधार बनाया, और उसने देश को **दार–उल–हर्ब** के स्थान पर **दार–उल–इस्लाम** में बदलना चाहा।
- उसने अपने सिक्कों पर **कलमा खुदवाना, नौरोज का आयोजन,** सार्वजनिक संगीत समारोह, भांग उत्पादन, शराब पीने तथा जुआ खेलने पर रोक लगा दी।
- औरंगजेब ने 1663 ई. में सती प्रथा पर प्रतिबन्ध लगा दिया, हिन्दुओं पर तीर्थयात्रा कर लगाया और 1668 ई. में हिन्दू त्योहारों को मनाए जाने पर रोक लगा दी।
- औरंगजेब ने अपने शासन के **11 वें वर्ष झरोखा दर्शन और 12 वें वर्ष तुलादान प्रथा को भी समाप्त कर दिया।** उसने 1679 ई. में **जजिया कर पुनः लगा दिया,** लेकिन 1704 ई. में दक्कन से यह कर हटा दिया गया।
- उसके काल में सर्वाधिक रुपये की ढलाई हुई एवं अपने अंतिम काल में ढाले गए सिक्कों पर मीर अब्दुल बाकी शाहबई द्वारा रचित एक पद्य अंकित करवाया।
- औरंगजेब जिंदा पीर एवं शाही दरवेश भी कहा जाता है।
- **औरंगजेब ने सर्वाधिक हिन्दू अधिकारियों की नियुक्ति की थी** और उसी के समय मुगल प्रांतों की संख्या सबसे ज्यादा **21** थी।

(i) औरंगजेब के समय प्रमुख विद्रोह (Main Revolts During the Reign of Aurangzeb)

- अफगान विद्रोह, 1667 ई.
- जाट विद्रोह, 1669 ई.
- सतनामी विद्रोह, 1672 ई.
- बुन्देला विद्रोह, 1661 ई.
- शाहजादा अकबर का विद्रोह, 1681 ई.
- अंग्रेजों का विद्रोह , 1686 ई.
- राजपूतों का विद्रोह, 1679–1709 ई.
- सिख विद्रोह, 1675 ई.

(ii) औरंगजेब की दक्कन नीति (Deccan Policy of Aurgangzeb)

- औरंगजेब शाहजहाँ के काल में दो बार दक्षिण का सूबेदार रह चुका था। 1682 ई. में अपने पुत्र शहजादा अकबर का पीछा करते हुए, वह दक्षिण भारत पहुँचा और फिर कभी उत्तर भारत लौट कर नहीं आ सका। यही दक्षिण भारत औरंगजेब का कब्रिस्तान सिद्ध हुआ।
- उसने 1685 ई. में बीजापुर और 1687 ई. में गोलकुण्डा को मुगल साम्राज्य में शामिल कर लिया था।

(iii) अन्य तथ्य (Other Facts)

- औरंगजेब के काल में मथुरा का केशव मंदिर, बनारस का विश्वनाथ मंदिर और पाटन का सोमनाथ मंदिर तोड़ा गया।
- उसने तिलपट के युद्ध में जाटों को परास्त किया और उनके नेतृत्वकर्ता गोकुल को पकड़कर मार डाला।
- औरंगजेब ने दिल्ली के लाल किला में **मोती मस्जिद** को बनवाया था। उसने अपनी पत्नी **राबिया उद्–दौरानी का मकबरा** औरंगाबाद में बनवाया जिसे **बीबी का मकबरा दक्षिण भारत का ताजमहल, काला ताजमहल** भी कहा जाता है। यह मकबरा आजमशाह की देख–रेख में तैयार हुआ था।
- औरंगजेब ने केवल एकमात्र ग्रंथ को संरक्षण प्रदान किया, वह था, फतवा –ए–जहाँदारी। उसने न्याय और कानून पर एक पुस्तक फतवा–ए– आलमगीर की रचना करायी।
- औरंगजेब ने मराठों पर अपने प्रभुत्व की स्थापना का प्रयास किया। राजा जयसिंह और शिवाजी में **1665 ई. में पुरन्दर की संधि** हुई। शिवाजी और उसका पुत्र शंभाजी औरंगजेब से मिलने आगरा गये तो औरंगजेब ने उन्हें वहीं बंदी बना लिया, किन्तु शिवाजी वहाँ से भागने में सफल रहे।
- मारवाड़ के शासक जसवंत सिंह की मृत्यु के बाद राठौरों ने दुर्गादास के नेतृत्व में युद्ध जारी रखा। दुर्गादास राठौरों के युद्ध का जीवन और आत्मा सिद्ध हुआ। टॉड ने दुर्गादास को राठौरों का यूलीसेस कहा है।
- औरंगजेब ने सिखों के **नौवें गुरु तेगबहादुर** की 1675 ई. में हत्या करवा दी।
- औरंगजेब ने **मुहतसिन** नामक अधिकारी नियुक्त किये ताकि वह जान सके कि शरीयत का पालन ठीक प्रकार से हो रहा है।
- औरंगजेब की मृत्यु 4 मार्च, 1707 ई. को हो गई। उसे दौलताबाद के पास शेख–जैम–उल–हक की मजार के समीप दफना दिया गया।
- औरंगजेब का सेनापति जयसिंह एक खगोलशास्त्री था। उसने **जयपुर, दिल्ली, मथुरा, उज्जैन**, तथा **बनारस** में ज्योतिष की वेधशालाएँ बनवायी थीं।

(VII) बहादुरशाह प्रथम (1707–12 ई.) (Bhahadur Shah I)

- बहादुरशाह प्रथम 65 वर्ष की आयु में मुगल सम्राट बना।
- उसने मराठों और राजपूतों के प्रति मैत्रीपूर्ण नीति अपनाई, एवं मराठा नेता शाहू (शम्भाजी का पुत्र) को 1706 ई. में मुगल कैद से आजाद किया।
- जोसुआ केटेलार के नेतृत्व में एक डच प्रतिनिधि मण्डल बहादुरशाह के दरबार में आया।
- इतिहासकार खाफी खाँ ने बहादुरशाह को **'शाह–ए–बेखबर'** कहकर पुकारा है।

(VIII) जहाँदारशाह (1712–13 ई.) (Jahandarshah)

- जहाँदारशाह, जुल्फिकार खाँ की मदद से सिंहासन पर बैठा और उसे अपना वजीर के पद पर नियुक्त किया।
- उसने आमेर के राजा मानसिंह को मिर्जा की उपाधि के साथ मालवा का सूबेदार बनाया तथा मारवाड़ के राजा अजीत सिंह को महाराजा की उपाधि धारण कराकर गुजरात का सूबेदार बनाया।
- जहाँदार ने **जजिया बन्द** कर दिया।
- वह अपनी प्रेमिका **लाल कुँवर** से बहुत प्रभावित था।
- अजीम–उस–शान के पुत्र फर्रुखसियर ने सैय्यद बंधुओं की मदद से 11 फरवरी, 1713 को जहाँदारशाह की हत्या कर दी।
- जहाँदारशाह को लोग लापरवाह या **'लंपट मूर्ख'** कहते थे।

(IX) फर्रुखसियर (1713–19 ई.) (Farrukhsiyar)

- फर्रुखसियर को सैयद बंधुओं–अब्दुल्ला खाँ तथा हुसैन अली के सहयोग से सिंहासन मिला तथा वे **नृपनिर्माता (Kingmaker)** कहलाए।
- राजा के काल में सिख नेता बंदा बहादुर को फाँसी दी गई।
- जानसरमन के नेतृत्व में ईस्ट इडिया कंपनी का एक दल 1717 ई. में भारत आया। उसी दल में एक शल्य चिकित्सक **हैमिल्टन** भी था जिसने बादशाह को स्वास्थ्य लाभ भी करवाया। फर्रुखसियर ने 1717 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए व्यापारिक लाभ का शाही फरमान जारी किया, जिसे कंपनी का मैग्नाकार्टा के नाम से जाना जाता है।
- फर्रुखसियर, सैयद बंधुओं से मुक्त होना चाहता था, लेकिन सैयद बंधुओं ने पेशवा बालाजी विश्वनाथ से दिल्ली संधि करके मराठों की मदद से फर्रुखसियर को अंधा करवाकर उसकी हत्या कर दी।
- सैयद बंधुओं ने रफी–उद–दरजात को मुगल बादशाह बनाया। यह सबसे जिसके शासन काल का समय बहुत कम था। कम अवधि तक (25 फरवरी से 4 जून, 1719 ई. तक) शासन करने वाला मुगल बादशाह था।
- रफी–उद–दरजात की मृत्यु पश्चात् रफीउद्दौला **'शाहजहाँ द्वितीय'** की उपाधि के साथ मुगल बादशाह बना, जिसका शासन 6 जून, 1719 से 17 सितम्बर 1719 ई. तक रहा।
- उसे दुर्बल और कायर होने के कारण **'घृणित कायर'** के नाम से जाना गया।

मुगलों से स्वतंत्र होने वाले राज्य एवं संस्थापक (States Declared Freedom from Mughals & their Founders)

1. अवध	सआदत खाँ
2. हैदराबाद	चिनकिलिच खाँ या निजाम–उल–मुल्क आसफजाह
3. रुहेलखंड	वीर दाऊद एवं अली मुहम्मद खाँ
4. बंगाल	मुर्शिदकुली खाँ
5. कर्नाटक	सादुतुल्ला खाँ
6. भरतपुर	चूरामन एवं बदन सिंह

(X) मोहम्मद शाह (1719–48 ई.) (Mohammad Shah)

- मोहम्मदशाह ने 1720 ई. में जजिया कर को पूर्णतः समाप्त कर दिया।
- मोहम्मदशाह ने निजामुलमुल्क के नेतृत्व में 1722 ई. में सैय्यद बंधुओं की हत्या करवा दी।
- निजामुलमुल्क चिनकिलिज खाँ ने हैदराबाद के स्वतन्त्र आसफजाही वंश की नींव डाली। कर स्थापित किया।
- इसी के काल में अवध (सआदत खाँ) बंगाल (मुर्शीद कुली खाँ), भरतपुर, मथुरा (बदन सिंह), गंगा यमुना दोआब (रूहेल), तथा **फर्रुखाबाद** में **बगंश नवाबों** ने अपनी **स्वतन्त्र सत्ता** की स्थापना कर ली।
- 1739 ई. में नादिरशाह (फारस का शासक) ने भारत पर आक्रमण किया। 13 फरवरी, 1739 को करनाल युद्ध में नादिरशाह ने मोहम्मद शाह को हराया।
- नादिरशाह, अवध के नवाब सआदत खाँ के उकसाने पर भारत आया। जब उसने सआदत खाँ से धन की माँग की तो लाचार होकर सआदत खाँ ने विष खा कर आत्महत्या कर ली।
- नादिरशाह के भारत पर आक्रमण का मुख्य उद्देश्य धन लूटना था। वह जहांगीर का **तख्ते ताउस (मयूर सिंहासन)** एवं कोहिनूर हीरा, फारस ले गया।
- मोहम्मद शाह के विलासपूर्ण आचरण के कारण उसे **'रंगीला शाह'** कहा गया।

(XI) अहमदशाह (1748–54 ई.) (Ahmadshah)

- इसने अवध के सूबेदार सफदरजंग को अपना वजीर नियुक्त किया।
- अहमदशाह के शासन काल में **अहमदशाह अब्दाली** (जिसे **दुर्रे दुर्रानी** अर्थात् **युग का मोती** के नाम से भी जाना जाता था।) का भारत पर आक्रमण हुआ।
- अहमदशाह के समय अब्दाली ने पाँच बार (1748–54 के बीच) आक्रमण किया। इसने कुल मिलाकर सात बार भारत पर आक्रमण किया।

(XII) आलमगीर द्वितीय (1754–59 ई.) (Alamgir-II)

वजीर इमाद की सहायता से अहमदशाह को अपदस्थ कर जहाँदार का पुत्र अजीजुद्दीन, आलमगीर द्वितीय की उपाधि के साथ मुगल बादशाह बना।

(XIII) शाहआलम द्वितीय (1759–1806 ई.) (Shahalam–II)

- शाहआलम के काल में बक्सर का युद्ध (1764 ई.) हुआ, जिसे अंग्रेजों ने हेक्टर मुनरो के नेतृत्व में मुगल सेना, अवध के नवाब शुजाउद्दौला की सेना और बंगाल के अपदस्थ नवाब मीर कासिम की संयुक्त सेनाओं को पूर्ण रूप से हराया।
- इस पराजय के साथ शाहआलम द्वितीय को बंगाल के गवर्नर राबर्ट क्लाइव के साथ इलाहाबाद की संधि करनी पड़ी, जिसके कारण मुगल सम्राट 1765–72 ई. तक अंग्रेजों के संरक्षण में इलाहाबाद में रहा।
- मराठा सरदार महादजी सिंधिया ने 1722 ई. में एक बार फिर शाहआलम द्वितीय को राजधानी दिल्ली के मुगल सिंहासन पर बैठाया।

- शाहआलम-II के शासनकाल में 1761 ई. में **पानीपत की तीसरी लड़ाई** मराठा और अहमदशाह अब्दाली के मध्य हुई।
- शाहआलम-II (इसका मूल नाम आलीगौहर था) के समय **जनरल लेक** ने **दौलतजराव सिंधिया को पराजित कर 1803 ई. में दिल्ली पर आधिपत्य स्थापित कर लिया।**

(XIV) अकबर द्वितीय (1806–37 ई.) (Akbar II)

- यह **अंग्रेजों के संरक्षण में शासक बनने वाला हिन्दुस्तान का प्रथम बादशाह था।**
- उसने **राजाराम मोहन राय** को **राजा** की उपाधि दी थी।
- अकबर द्वितीय ने अपनी पेंशन बँधवाने के लिए **राजा राममोहन राय** को इंग्लैण्ड भेजा, वहीं पर उनकी **ब्रिस्टल (इंग्लैण्ड)** में 1830 ई. में मृत्यु हो गई।

(XV) बहादुरशाह द्वितीय (1837–58 ई.) (Bahadur Shah II)

- यह अंतिम मुगल बादशाह था। प्रसिद्ध **शायर** होने की वजह से इसे **'जफर'** भी कहा गया।
- 1857 के विद्रोह में विद्रोहियों का साथ देने के कारण अंग्रेज सरकार ने उसे गिरफ्तार कर रंगून (म्यांमार) निर्वासित कर दिया, जहाँ 1862 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

9. मुगल प्रशासन (Mughal Administration)

(I) केन्द्रीय शासन (Central Administration)

मुगल शासन व्यवस्था नियंत्रण व संतुलन पर आधारित थी। उसके पश्चात् वकील–ए–मुतलक का पद था।

- मुगल शासक वस्तुतः **चुग्ताई तर्कु** थे।

(II) प्रमुख अधिकारी (Main Officers)

- **मीर बक्शी :** यह सेवा विभाग का प्रधान था। उसके द्वारा सरखत नामक पत्र पर हस्ताक्षर करने के पश्चात् ही सेना का मासिक वेतन निर्धारित होता था।
- **सद्र–उस–सद्र :** वह धार्मिक मामलों में बादशाह का सलाहकार था। उसे शेख–उल–इस्लाम भी कहा जाता था। जब कभी इसे मुख्य काजी का पद प्राप्त हो जाता था तो उसे काजी–उल–कुजात कहा जाता था। वह लगान मुक्त भूमि का भी निरीक्षण करता था। इस भूमि को सयूरगाल या मदद–ए–माश कहा जाता था।
- **मुहतसिब :** लोक आचरण की निरीक्षणकर्ता
- **मीर–ए–सामाँ :** वह बादशाह के परिवार, उसके महल और उसकी व्यक्तिगत और दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति की देखभाल करता था।
- **मीर आतिश :** वह शाही तोपखाने का प्रधान था।
- **दरोगा–ए–डाकचौकी :** इसके अधीन राज्य के गुप्तचर और संवादवाहक थे।
- **मीर मुंशी :** वह शाही पत्रों को लिखता था।
- **मीर बहर :** आंतरिक जलमार्गों एवं नौसेना का अधिकारी।

(III) प्रांतीय प्रशासन (Provincial Administration)

- **सूबेदार :** प्रांतीय शासन का सर्वोच्च अधिकारी।
- **दीवान :** सूबे का वित्त अधिकारी।
- **बक्शी :** सूबे की सेना की देखभाल करना।
- **वाकिया–ए–नवीस :** सूबे के गुप्तचर विभाग का प्रधान।
- **कोतवाल :** सूबे की घटनाओं को नियंत्रित करना।
- **सदर और काजी :** सूबे का न्याय अधिकारी।
- साम्राज्य ☞ सूबा ☞ सरकार (जिला) ☞ परगना ☞ दस्तूदर ☞ ग्राम (मावदा या दीह)

(IV) सरकार (जिले) का शासन (District Administration)

- **फौजदार :** कानून व्यवस्था की देखभाल।
- **अमलगुजार :** लगान वसूल करना।
- **खजानदार :** खजांची।

(V) परगना का शासन (Subdivisional Administration)

- **शिकदार :** सैनिक अधिकारी
- **आमिल :** वित्त अधिकारी
- **फौतदार :** खजांची
- **कानूनगो :** पटवारियों का प्रधान

(VI) नगर का प्रशासन (City Administration)

कोतवाल नगर के शासन का प्रधान होता था।

(VII) गाँव का शासन (Village Administration)

गाँव का मुख्य अधिकारी ग्राम प्रधान होता था जिसे खुत, मुकद्दम या चौधरी कहा जाता था।

(VIII) भूमि के प्रकार (Types of Lands)

- **पोलज :** वह भूमि जिस पर हर वर्ष खेती होती थी।
- **परती :** उर्वरता प्राप्त करने के लिए एक दो वर्ष बिना बोये छोड़ दिया जाता था।
- **चाचर :** इसे तीन–चार वर्ष तक बिना बोये छोड़ दिया जाता था।
- **बंजर :** यह खेती योग्य भूमि नहीं थी।
- **कृषक वर्ग :** कृषकों को तीन वर्ग में बाँटा गया था–
  - **खुदकाश्त :** खेतिहार किसान।
  - **पाहीकाश्त :** बँटाईदार के रूप में काम करने वाले।
  - **मुजारियान :** इनके पास बहुत ही कम भूमि होती थी।

(IX) भूमिकर के आधार पर भूमि का विभाजन (Land Division Based on Land Tax)

- **खालसा भूमि :** यह शाही भूमि थी।
- **जागीर भूमि :** प्रमुख व्यक्तियों को वेतन के रूप में दी जाने वाली भूमि।
- **सयूरगाल (मदद–ए–माश) भूमि :** अनुदान में दी गई लगानमुक्त भूमि। इसे मिल्क भी कहा जाता था।

(X) दहसाला व्यवस्था (Dahsala System)

इस प्रणाली का वास्तविक प्रणेता टोडरमल था। इसके अंतर्गत विभिन्न फसलों के पिछले दस वर्ष के उत्पादन और उसी समय के प्रचलित मूल्यों का औसत निकाल कर, उस औसत का हिस्सा राजस्व के रूप में वसूला जाता था, जो नकद रूप में होता था। इस प्रणाली में भाग हर साल वसूला जाना था जिसे माल–ए–हरसाला कहा जाता था।

(XI) सैन्य व्यवस्था (Military System)

मुगल सेना को **चार श्रेणियों** में विभाजित किया गया था–

- अधीनस्थ राजाओं की सेनाएँ।
- मनसबदारों की सैन्य टुकड़ियाँ।
- अहदी सैनिक (बादशाह के सैनिक)
- दाखिली सैनिक (पूरक सैनिक) ।

10. मराठों का उत्कर्ष (Rise of Marathas)

17वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के विघटन की प्रक्रिया प्रारम्भ होने के साथ कई स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई जिसमें मराठों का विशेष स्थान है।

(I) शिवाजी [1627-1680] ई. (Shivaji)

- शिवाजी का जन्म 20 अप्रैल, 1627 ई. को **पूना** के उत्तर में स्थित जुन्नान नगर के समीप **शिवनेर के दुर्ग** में हुआ था। उनके पिताजी का नाम **शाहजी भौंसले** और माता का नाम **जीजाबाई** था।
- शुरू से ही शिवाजी का उद्देश्य एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना करना था। उनका मूल उद्देश्य दक्षिण भारत में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना करना था।
- शिवाजी के व्यक्तित्व पर सर्वाधिक प्रभाव उनकी माता जीजाबाई और उनके शिक्षक **दादा कोंडदेव** का पड़ा। उनके गुरु का नाम समर्थ **रामदास** था।
- शिवाजी ने गुरिल्ला युद्ध पद्धति का प्रयोग किया उनके फुर्तीले घुड़सवार युद्ध में प्रवीण थे तथा इन्होंने पश्चिमी दक्कन के पठारी पर्वतों पर किला बन्द दुर्गों की श्रृंखला निर्मित की थी।
- 25 जनवरी, 1656 ई. में शिवाजी ने जावली पर विजय प्राप्त की।
- शिवाजी की विस्तारवादी नीति पर रोक लगाने के लिए 1659 ई. में बीजापुर राज्य ने **अफजल खाँ** को भेजा, लेकिन शिवाजी ने 2 नवंबर, 1659 ई. को बाघनख से उसकी हत्या कर दी।
- 1660 ई. में मुगल सूबेदार **शाइस्ता खाँ** को शिवाजी को समाप्त करने के लिए भेजा गया। 15 अप्रैल, 1663 ई. को शिवाजी चुपके से पूना में प्रवेश कर गये और रात को शाइस्ता खाँ पर आक्रमण कर दिया। शाइस्ता खाँ इस आक्रमण से घबराकर भाग गया।
- 1665 ई. में औरंगजेब ने राजा जयसिंह को शिवाजी के विरुद्ध भेजा। जयसिंह ने वज्रगढ़ को जीतकर, शिवाजी को पुरन्दर के किले में घेर लिया। अंततः शिवाजी ने आत्मसमर्पण कर दिया। **22 जून, 1665 ई.** को शिवाजी और जयसिंह के मध्य **पुरन्दर की संधि** हुई, जिसके अनुसार :
  - शिवाजी ने **23 किले** और **4 लाख** हूण की वार्षिक आय की भूमि मुगलों को दी।
  - शिवाजी के पास केवल **12 किले ही** बचे।
  - शिवाजी ने मुगल आधिपत्य स्वीकार कर लिया।
  - शिवाजी ने बीजापुर के विरुद्ध मुगलों को सैनिक सहायता देने का वादा किया।
- 1666 ई. में शिवाजी औरंगजेब से मिलने आगरा गये जहाँ औरंगजेब ने शिवाजी को जयपुर भवन (आगरा) में नजरबंद रखा, लेकिन चतुराई से शिवाजी वहाँ से भागने में सफल हुए।
- 16 जून, 1674 में शिवाजी ने काशी के प्रसिद्ध विद्वान **श्रीगंगाभट्ट** द्वारा अपना राज्याभिषेक करवाया। उन्होंने **छत्रपति की उपाधि** प्राप्त की और **रायगढ़** को अपनी राजधानी बनाया।
- शिवाजी की मृत्यु 14 अप्रैल, 1680 ई. को 53 वर्ष की आयु में हो गई।
- शिवाजी के प्रशासन की विशेषताएँ निम्न थीं–
  - **राजा या छत्रपति :** राजा की संपूर्ण शक्तियाँ शिवाजी में केन्द्रित थीं। वह राज्य के आखिरी कानून निर्माता, प्रशासकीय प्रधान, न्यायाधीश और सेनापति थे। उन्होंने मराठी को शासन की भाषा बनाया और उसकी प्रगति के लिए रघुनाथ पंडित हनुमन्ते के नेतृत्व में एक शब्द कोष राज्य व्यवहार कोष लिखवाया।
  - **अष्टप्रधान :** शासन का वास्तविक संचालन अष्टप्रधान नामक आठ मंत्री करते थे।

पेशवा अथवा मुख्य प्रधान (प्रधानमंत्री)	संपूर्ण राज्य के शासन की देखभाल करना।
अमात्य या मजूमदार	राज्य की आय और व्यय की देखभाल करना।
मंत्री या वाकिया–नवीस	राजा के दैनिक कार्यों को लेखबद्ध करना।
सचिव या शुरू–नवीस	राजा के पत्रों की भाषा एवं शैली को ठीक करना।
सुमन्त या दबीर (विदेश मंत्री)	राजा को संधि या युद्ध के बारे में सलाह देना।
सेनापति या सर–ए–नौबत	सेना की भर्ती, संगठन, शिक्षा, रसद की व्यवस्था करना।
पण्डित राव	विद्वानों एवं धार्मिक कार्यों के लिए दिए जाने वाले अनुदानों का दायित्व निभाना।
न्यायाधीश	राज्य के समस्त दीवानी एवं फौजदारी मामलों को निपटाना।

  - **सैन्य व्यवस्था** : शिवाजी की सेना का मुख्य भाग घुड़सवार और पैदल सेना थी। घुड़सवार दो प्रकार के थे–
    - **बरगीर :** ये शाही घुड़सवार थे, जिन्हें राज्य की ओर से शस्त्र मिलते थे।
    - **सिलेदार :** इन्हें घोड़े एवं शस्त्र स्वयं खरीदने पड़ते थे।
  - **पैदल सेना**
    - **नायक :** 9 सैनिकों या पाइकों का अधिकारी
    - **हवलदार :** दस नायकों का अधिकारी
    - **जुमलादार :** दो या तीन हवलदारों का अधिकारी
    - **एक हजारी :** दस जुमलादारों का अधिकारी

- **सर–ए–नौबल :** संपूर्ण पैदल सेना का प्रधान
- सैनिकों को वेतन नकद दिया जाता था।

❖ **लगान व्यवस्था** : शिवाजी ने अपनी आय का मुख्य साधन चौथ और सरदेशमुखी को बनाया था। ये कर पड़ोसी राज्यों की सीमाओं और नगरों से अथवा अपने प्रभाव क्षेत्र के नागरिकों से वसूले जाते थे। **चौथ उस प्रदेश की वार्षिक आय का एक–चौथाई भाग और सरदेशमुखी उस प्रदेश की आय का दसवा वाँ भाग होता था।**

(II) शिवाजी के बाद शासक (Ruler After Shivaji)

(i) शम्भाजी [1680-1689] ई. (Shambhaji)

शिवाजी की मृत्यु के बाद उनके दो पुत्र–शम्भाजी एवं राजाराम के मध्य उत्तराधिकार का विवाद खड़ा हो गया। शम्भाजी 20 जुलाई, 1680 को सिंहासन पर बैठा। वह अभिमानी, क्रोधी और भोगविलासी था। अपनी मृत्यु से पूर्व शिवाजी ने उसे पन्हाला के किले में कैद कर लिया था। शम्भाजी ने 1681 ई. में औरंगजेब के पुत्र अकबर को शरण दी थी। 21 मार्च, 1689 को औरंगजेब ने शम्भाजी की हत्या करवा दी और रायगढ़ पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।

(ii) राजाराम [1689-1700] ई. (Rajaram)

राजाराम का राज्याभिषेक 1689 में रायगढ़ के किले में हुआ। उसने अपने को शाहू का प्रतिनिधि माना और कभी गद्दी पर नहीं बैठा। इस समय मराठे मुगलों से जूझ रहे थे तथा राजाराम ने सुरक्षा की दृष्टि से रायगढ़ के स्थान पर दक्षिणी क्षेत्र में स्थित जिंजी (कर्नाटक) को अपनी राजधानी बनाया। मुगलों ने रायगढ़ पर अधिकार करके शाहू तथा उसकी माता येसूबाई को कैद कर लिया। शाहू को औरंगजेब ने राजा की उपाधि तथा मनसब प्रदान किया। उसने मराठों को जागीरें दीं, जिसके परिणामस्वरूप मराठा मण्डल या राजसंघ का उदय हुआ। उसकी मृत्यु 1700 ई. में हुई।

(iii) शिवाजी द्वितीय एवं ताराबाई [1700-1707] ई. (Shivaji II & Tarabai)

राजाराम की मृत्यु के पश्चात् उसकी पत्नी ताराबाई ने अपने 4 वर्ष के पुत्र शिवाजी द्वितीय को गद्दी पर बैठाया और मुगलों से संघर्ष जारी रखा तथा ताराबाई उसकी संरक्षिका बनी। ताराबाई ने रायगढ़, सतारा और सिंहगढ़ किलों को मुगलों से जीत लिया।

(iv) शाहू [1707-1749] ई. (Shahu)

औरंगजेब ने 1689 ई. में शम्भाजी के साथ शम्भाजी के बेटे शाहू को भी बन्दी बना लिया था। 18 वर्षों तक बन्दी जीवन बिताने के बाद 1707 ई. में बहादुर शाह प्रथम ने उसे मुक्त कर दिया। शाहू का राज्याभिषेक फरवरी, 1708 में सतारा में हुआ, जिसे उसने अपनी राजधानी बनाया था दक्षिण में कोल्हापुर को आधार बनाकर ताराबाई शासन कर रही थी। इन दोनों के मध्य शत्रुता का अन्त 1731 ई. में वार्ना की सन्धि के द्वारा हुआ। अपनी शक्ति में वृद्धि के लिए शाहू ने 1713 ई. में बालाजी विश्वनाथ को मराठा राज्य का पेशवा नियुक्त किया। शासन की अस्थिरता का फायदा उठाकर बालाजी विश्वनाथ ने पेशवा की शक्ति में पर्याप्त वृद्धि की।

(III) पेशवाओं का शासन (Rule of Peshwas)

पेशवाओं ने महाराष्ट्र को राजनीतिक स्थायित्व और शान्ति प्रदान की। अपनी योग्यता और शक्ति के बल पर उन्नति करते–करते वे स्वयं ही मराठा राज्य के सर्वेसर्वा बन गये।

(i) बालाजी विश्वनाथ [1713-1720] ई. (Balaji Vishwanath) : ये चित्तपावन वंशीय ब्राह्मण थे, जो 1713 ई. में शाहू के पेशवा बने। इन्होंने मुगल शासक फर्रुखसियर को हटाने में सैयद बन्धुओं की मदद की।

(ii) बाजीराव प्रथम [1720-1740] ई./लड़ाकू पेशवा (Bajirao I / Fighter Peshwa) : बाजीराव प्रथम बालाजी विश्वनाथ का पुत्र था, जिसने मराठा परिसंघ की स्थापना की। इसमें होल्कर (इन्दौर), सिंधिया (ग्वालियर), गायकवाड़ (बड़ौदा) तथा भोंसले (नागपुर) शामिल थे। इसने पूना को अपना केन्द्र बनाया। 1728 ई. में बाजीराव प्रथम और निजाम–उल–मुल्क के बीच पालखेड़ा का युद्ध हुआ जिसमें निजाम–उल–मुल्क पराजित हुआ। 20 वर्षों की अल्प–अवधि में ही बाजीराव प्रथम ने मराठा राज्य का चित्र बदल दिया। उसने महाराष्ट्र राज्य को एक साम्राज्य के रूप में बदल दिया जिसका प्रसार उत्तर में भी होने लगा। 1739 ई. में बाजीराव ने पुर्तगीजों से सालसेट एवं बेसीन का क्षेत्र छीन लिया। (बुंदेलखण्ड के राजा छत्रसाल ने इसको 'मस्तानी' नामक नर्तकी उपहार स्वरूप दी थी। इसे लड़ाकू पेशवा भी कहते हैं।)

(iii) बालाजी बाजीराव [1740-1761] ई. (Balaji Bajirao) : यह राजाराम द्वितीया का पेशवा था इसने राज्य की सम्पूर्ण शक्ति अपने हाथ में ले ली तथा पेशवा के पद को वंशानुगत बनाया। इसी के काल में पानीपत का तृतीय युद्ध 14 जनवरी, 1761 ई. में लड़ा गया। इस युद्ध में मराठों का सेनापति बालाजी बाजीराव का चचेरा भाई सदाशिव राव भाऊ था, जबकि दूसरी तरफ अहमद शाह अब्दाली की फौज थी, परन्तु मराठे हार गये।

पानीपत का तृतीय युद्ध (Third Battle of Panipat) (1761)

नोट–पानीपत की हार से मराठों की राजनीतिक प्रतिष्ठा को बड़ा धक्का लगा। वस्तुतः पानीपत की तीसरी लड़ाई ने यह फैसला नहीं किया कि भारत पर कौन राज करेगा। बल्कि यह तय कर दिया कि भारत पर कौन राज नहीं करेगा। अतः इससे भारत में ब्रिटिश सत्ता के उदय का रास्ता साफ हो गया।

(iv) माधव राव प्रथम [1761-1772] ई. (Madhav Rao I) : पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठों की पराजय के बाद माधव राव प्रथम पेशवा बना। उसने हैदराबाद के निजाम और हैदर अली को चौथ देने के लिए बाध्य किया। मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय 1772 ई. में अंग्रेजों के संरक्षण को छोड़कर इलाहाबाद से दिल्ली आ गया और मराठों का संरक्षण स्वीकार कर लिया। 1772 ई. में क्षयरोग से माधव राव प्रथम की मृत्यु हो गयी।

(v) नारायण राव [1772-1773] ई. (Narayan Rao) : माधव राव की मृत्यु के बाद नारायण राव जोकि उसका छोटा भाई था, पेशवा बना, लेकिन 1773 ई. में रघुनाथ राव (चाचा) ने उसकी हत्या कर दी।

(vi) माधव नारायण राव [1774-1796] ई. (Madhav Narayan Rao) : नारायण राव की हत्या के बाद माधव राव नारायण राव पेशवा बना।

(vii) बाजीराव द्वितीय [1796-1818] ई. (Bajirao II) : माधव राव की मृत्यु के पश्चात् राघोवा का पुत्र बाजीराव द्वितीय पेशवा बना। बाजीराव द्वितीय एक अयोग्य एवं स्वार्थी शासक था, जिसका उद्देश्य मराठा अधिकारियों को आपस में लड़ाकर अपना हित साधन था। निम्नलिखित शर्तों पर सहमति व्यक्त की।

- सूरत नगर को पेशवा ने कम्पनी को दे दिया।
- पेशवा ने अपने विदेशी मामले कम्पनी के अधीन कर दिये।
- निजाम से चौथ वसूलने का अधिकार पेशवा ने कम्पनी को दे दिया।
- अंग्रेजों का संरक्षण स्वीकार करते हुये पेशवा ने 60,000 अंग्रेजी सेना को पूना में रखना स्वीकार किया।

(IV) आंग्ल-मराठा युद्ध (Anglo-Maratha War)

वर्ष 1775 से 1818 ई. के मध्य अंग्रेजों तथा मराठों के बीच तीन युद्ध हुए जिनमें मराठा साम्राज पूर्णतः समाप्त हो गया। ये युद्ध निम्न हैं–

(i) प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध [1775-1782] ई. (First Anglo-Maratha War) : प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध का कारण मराठों के आपसी झगड़े तथा अंग्रेजों की महत्वाकांक्षायें थीं। 1775 ई. में रघुनाथ राव तथा अंग्रेजों के मध्य सूरत की सन्धि हुई। 1776 ई. में नाना फड़नवीस ने अंग्रेज कैप्टन कर्नल आप्टन से मार्च में पुरन्दर की सन्धि की।

(ii) द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध [1803-1806] ई. (Second Anglo-Maratha War) : बसीन की सन्धि का प्रतिरोध करते हुए भोंसले एवं सिन्धिया ने अंग्रेजों का विरोध किया। लॉर्ड लेक ने 1803 ई. में भोंसले को पराजित करके उसे देवगाँव की सन्धि करने पर विवश कर दिया। द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध के परिणाम– स्वरूप अंग्रेजों ने मराठा शक्ति पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की तथा मराठा सरदारों को अपने अधीन कर लिया।

(iii) तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध [1817-1818] ई. (Third Anglo-Maratha War) : लॉर्ड हेस्टिंग्स ने पिण्डारियों का दमन करने के लिए नवम्बर, 1817 ई. में सिन्धिया के साथ ग्वालियर की सन्धि की, जिसके फलस्वरूप सिन्धिया को चम्बल नदी के दक्षिण–पश्चिम में स्थित राज्यों से अपना प्रभाव हटाना पड़ा। 1818 ई. में अंग्रेजों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। अंग्रेजों ने पेशवा का पद समाप्त करके, बाजीराव द्वितीय को पेंशन देकर बिठूर में बाजीराव द्वितीय की मृत्यु के साथ ही मराठा साम्राज्य का पतन हो गया।

11. अन्य प्रान्त (Other States)

(I) अवध (Avadh/Oudh)

- अवध को अंग्रेजी और मराठा राज्यों के मध्य होने के कारण बफर राज्य को माना गया।
- **सआदत खाँ बुरहान मुल्क** ने अवध को 1732 ई. में स्वतंत्र घोषित किया था।
- सआदत खाँ के बाद सफदरजंग (अबुल मंसूर खाँ) अवध का नवाब बना और फिर (1754-1775) ई. में इसका पुत्र शुजाउद्दौला अवध का नवाब बना।
- शुजाउद्दौला ने वारेन हेस्टिंग्स के साथ 1773 ई. में बनारस की संधि की।
- 1775 ई. में अवध के नवाब **आसफुद्दौला** ने फैजाबाद की जगह लखनऊ को राजधानी बनाया, जहाँ उसने **इमामबाड़ा** बनवाया।
- **वाजिद अली शाह** अवध का अंतिम नवाब था। इसी के शासनकाल में अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर अंग्रेजों ने इसे 1856 में ब्रिटिश शासन में शामिल कर लिया।

(II) मैसूर (Mysore)

- हैदरअली 1755 ई. में डिण्डीगुल के किले का फौजदार बना तथा 1761 ई. में वह मैसूर का शासक बना।
- हैदरअली ने प्रथम आंग्ल–मैसूर युद्ध (1767-1769 ई.) में अंग्रेजों को पराजित किया। द्वितीय आंग्ल–मैसूर युद्ध में जनरल आयरकूट ने पोर्टोनोवा के युद्ध (1781 ई.) में हैदर को हराया और आखिरकार हैदर की मृत्यु हो गई।
- टीपू एक पढ़ा लिखा योग्य शासक था। उसे अरबी, फारसी, उर्दू एवं कन्नड़ भाषाओं का ज्ञान अर्जित किया हुआ था। उसने नई मुद्रा, नई माप तौल की इकाई और नवीन संवत का प्रचलन करवाया।
- टीपू ने शृंगेरी के जगद्गुरु **शंकराचार्य** के सम्मान में मंदिरों का पुनर्निर्माण कराया। इसने शृंगेरी मंदिर में शारदा देवी की मूर्ति को बनवाने के लिए धन दिया।
- टीपू ने फ्रांसीसी क्रांति से प्रभावित होकर **श्रीरंगपट्टम** में **जैकोबियन क्लब** की स्थापना की, उसका सदस्य बना तथा स्वयं को नागरिक टीपू कहने लगा।
- टीपू ने अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम में फ्रांस और मैसूर के मैत्री का प्रतीक **स्वतन्त्रता का वृक्ष** लगाया। श्रीरंगपट्टनम में टीपू ने **'पादशाह'** की उपाधि प्राप्त की।
- उसने 1796 ई. में एक नौसेना बोर्ड का गठन किया।
- टीपू ने द्वितीय **आंग्ल–मैसूर युद्ध** में अपनी कमान संभाली थी।
- सन् 1790 में **तृतीय आंग्ल–मैसूर युद्ध** में कैप्टन मिडोज ने टीपू को हराया और श्रीरंगपट्टनम की संधि की। इस संधि में यह शामिल था कि टीपू अंग्रेजों को तीन करोड़ रुपये देगा। जब तक यह रकम नहीं दी जाएगी टीपू के दो पुत्र अंग्रेजों के कब्जे में रहेंगे।
- सन् 1799 में **चतुर्थ आंग्ल–मैसूर युद्ध** में टीपू मारा गया।
- अंग्रेजों ने वाड्यार वंश के एक बालक कृष्णराज को मैसूर के सिंहासन पर बैठा दिया।
- मैसूर जीतने की खुशी में आयरलैंड के लॉर्ड वेलेजली को मार्क्विस की उपाधि दी गई।

आंग्ल-मैसूर युद्ध (Anglo-Mysore Wars)

युद्ध	मैसूर शासक	गवर्नर/गवर्नर जनरल	संधि	परिणाम
प्रथम (1767-69)	हैदर अली	लॉर्ड वेरेल्स्ट	मद्रास की संधि	अंग्रेज पराजित हुए
द्वितीय (1780-84)	टीपू सुल्तान	वारेन हेस्टिंग्स	मंगलौर की संधि	हैदर मारा गया
तृतीय (1790-92)	टीपू सुल्तान	लॉर्ड कार्नवालिस	श्रीरंगपट्टनम की संधि	टीपू पराजित हुआ
चतुर्थ (1799)	टीपू सुल्तान	लॉर्ड वेलेजली	सहायक संधि	टीपू की मृत्यु

(III) पंजाब (Punjab)

- गुरु गोविंद सिंह की मृत्यु के बाद, उसके शिष्य **बंदा बहादुर** ने सिखों का नेतृत्व संभाला।
- बंदा बहादुर ने प्रथम सिख राज्य की स्थापना की और वह सिखों का पहला राजनीतिक नेता भी बना।
- 1716 ई. में फर्रुखसियर द्वारा बंदा बहादुर की हत्या कर दी गई।
- कपूर सिंह के नेतृत्व में 1748 में दल खालसा की स्थापना हुई। कपूर सिंह की मृत्यु के पश्चात् जस्सा सिंह अहलूवालिया ने दल खालसा को 12 स्वतंत्र मिस्लों में बाँट दिया, जिसमें भंगी मिस्ल सबसे शक्तिशाली था। सुरचकिया मिस्ल को आधुनिक पंजाब के निर्माण का श्रेय दिया जाता है।
- महाराजा रणजीत सिंह का जन्म 2 नवंबर, 1780 को गुजराँवाला में हुआ। उनके पिता **महासिंह** थे। रणजीत सिंह **सुकरचकिया मिसल** के थे।
- रणजीत सिंह ने भंगी मिस्ल से लाहौर और अमृतसर छीनकर, लाहौर को अपनी राजधानी बनाया। 25 अप्रैल, 1809 ई. को चार्ल्स मेटकाफ और महाराजा रणजीत सिंह के मध्य **'अमृतसर की संधि'** हुई।
- अफगान के शासक शाहशुजा ने रणजीत सिंह को कोहिनूर हीरा दिया।
- फौज–ए–आइन, रंजीत सिंह की स्थायी सेना थी। उन्होंने लाहौर में तोप निर्माण का एक कारखाना भी खोला।
- रणजीत सिंह का राज्य 4 सूबों में बँटा था–**पेशावर, कश्मीर, मुल्तान** एवं **लाहौर**।
- रंजीत सिंह की सरकार, **सरकार–ए–खालसा** के नाम से जानी जाती थी। उन्होंने **नानकशाही सिक्के** चलवाए।
- 1839 ई. में रंजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात् उनके उत्तराधिकारियों का क्रम था–खड़ग सिंह, नौनिहाल सिंह, शेर सिंह और दिलीप सिंह।

आंग्ल-सिख युद्ध (Anglo-Sikh Wars)

युद्ध	सिख शासक	गवर्नर/गवर्नर जनरल	संधि	विशेष
प्रथम आंग्ल–सिख युद्ध(1845-46)	दिलीप सिंह (वजीर : लाल सिंह, सेनापति : तेज सिंह)	लॉर्ड हार्डिंग	लाहौर की संधि	अंग्रेजों ने दिलीप सिंह महाराजा की पदवी दी।
द्वितीय आंग्ल–सिख युद्ध (1848-49) • चिलियानवाला का युद्ध • रामनगर का युद्ध • गुजराँवाला का युद्ध	दिलीप सिंह	लॉर्ड डलहौजी	अमृतसर की संधि	दिलीप सिंह से कोहिनूर हीरा लेकर ब्रिटिश राजमुकुट में लगा दिया।

(IV) बंगाल (Bengal)

- स्वतंत्र बंगाल की स्थापना 1717 ई. में मुर्शिद कुली खाँ ने की थी।
- 1740 में अलीवर्दी खाँ बंगाल का नवाब बना और उसकी मृत्यु के बाद 10 अप्रैल 1756 को सिराजुदौला बंगाल का नवाब बना।
- सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों की कासिम बाजार की फैक्ट्री पर अधिकार जमा लिया, अधिकांश अंग्रेज ज्वारग्रस्त फुल्टा द्वीप पर भाग गये।
- 20 जून, 1756 को काल कोठरी दुर्घटना हुई जिसमें 146 अंग्रेजों को बंदी बनाया गया और 21 जून को उनमें से मात्र 23 व्यक्ति ही जीवित मिले।
- अंग्रेजों ने पुनः कलकत्ता पर अधिकार कर लिया। 9 फरवरी, 1757 को अंग्रेजों और नवाब के मध्य अलीनगर की संधि हुई।
- 23 जून, 1757 को अंग्रेज सेना व सिराजुद्दौला के बीच प्लासी का युद्ध हुआ। प्लासी, बंगाल के नादिया जिले में **भागीरथी नदी** के बाएँ किनारे पर अवस्थित है।
- इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व **रॉबर्ट क्लाइव** ने किया और नवाब **सिराजुद्दौला** की सेना का नेतृत्व **मीर जाफर, यारलतीफ खाँ** और **राजा दुर्लभ राय** ने किया।
- प्लासी के युद्ध में मोहनलाल और **मीर मदान** के नेतृत्व में एक छोटी सेना नवाब के प्रति वफादार रही। **मीर मदान** लड़ते हुए मारा गया।
- मोहम्मद बेग ने सिराजुद्दौला की हत्या मीर जाफर के पुत्र मीरन के इशारे पर की थी।
- प्लासी के युद्ध के समय **आलमगीर द्वितीय** मुगल बादशाह था।
- सिराजुद्दौला की मृत्यु के पश्चात् क्लाइव ने 30 जून, 1757 में मीर

जाफर को बंगाल का नवाब बनाया। यह अंग्रेजों द्वारा बनाया गया **बंगाल का पहला** नवाब था।

- चूँकि वह एक अयोग्य शासक था, अंग्रेजों ने उसे हटाकर, उसके दामाद मीर कासिम को बंगाल का नवाब बना दिया।
- मीर कासिम ने अपनी राजधानी को **मुर्शिदाबाद से मुंगेर** स्थानांतरित कर लिया।
- मीर कासिम ने बंगाल में **दस्तक** के दुरुपयोग को रोकने के लिए, आंतरिक व्यापार पर सभी प्रकार के शुल्कों की वसूली बंद करवा दी।
- अंग्रेजों ने इसे अपने विशेषाधिकार की अवहेलना के रूप में लिया और जुलाई, 1763 में मीर जाफर को दोबारा बंगाल का नवाब बनाया।
- यही कारण था कि मीर कासिम ने बंगाल छोड़कर अवध के नवाब शुजाउद्दौला के यहाँ शरण ली।
- इसके बाद मीर कासिम ने त्रिपक्षीय गुट बनाया तथा इस गुट व अंग्रेजों के बीच बक्सर का युद्ध (22 अक्टूबर, 1764 ई.) हुआ।
- बक्सर का युद्ध अंग्रेजों और मीर कासिम, अवध के नवाब शुजाउद्दौला और मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय की संयुक्त सेनाओं के मध्य हुआ।
- अंग्रेजी सेना का नेतृत्व **हेक्टर मुनरो** ने किया।
- इस युद्ध में अंग्रेज विजयी हुए।
- **इस युद्ध के बाद अंग्रेजों की भारत में वास्तविक सत्ता पूर्ण रूप से स्थापित हुई।**
- 12 अगस्त, 1765 ई. को क्लाइव ने शाहआलम से इलाहाबाद की प्रथम संधि की।
- बंगाल में द्वैध शासन की शुरुआत 1765 में हुई। **लायनेल कार्टिस** को द्वैध शासन का जनक माना जाता है, लेकिन 1772 में **वारेन हेस्टिंग्स** ने बंगाल में द्वैध शासन का अंत कर दिया।
- अंग्रेजों ने अपने दीवानी कार्यों को संचालित करने के लिए बिहार में राजा सिताबराय, बंगाल में **मो. रजा खान** एवं उड़ीसा में **दुर्लभ राय** को नियुक्त किया।
- अंततः अंग्रेजों ने नवाब शुजाउद्दौला के साथ 16 अगस्त, 1765 में इलाहाबाद की द्वितीय संधि की।

12. सूफी आन्दोलन (Sufi Movement)

- 'सूफी' शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के **'सफा'** शब्द से हुई, जिसका अर्थ है—पवित्रता अर्थात् जो लोग आध्यात्मिक रूप से और आचार–विचार से पवित्र थे, वे सूफी कहलाए।
- सूफी आंदोलन इस्लाम के रहस्यवादी तथा समन्वयवादी दर्शन की अभिव्यक्ति है। इसमें इस्लाम के बाह्य स्वरूप अथवा क्रिया–कलापों पर बल नहीं दिया जाता, अपितु उसकी आंतरिक प्रेरणा, सदाचार, मानवता, ईश्वर के प्रति प्रेम आदि पर बल दिया जाता है।
- सूफियों का मठ **खानकाह** कहलाता है, संघ को वस्ल एवं उनकी कब्र को दरगाह कहते हैं।
- अबु फजल की रचना अकबरनामा में 14 सूफी सिलसिलों का विस्तार से वर्णन है, जिसमें से 4 सिलसिले भारत में काफी लोकप्रिय हुए।
- **हसन बसरी** को **प्रथम सूफी संत** और **रबिया को प्रथम और अन्तिम महिला** सूफी सन्त माना जाता है।
- "जियारत" सूफी सन्तों की दरगाह पर की गई उपासना कहलाती है और नाच व संगीत भी जियारत का भाग थे।
- कव्वालों द्वारा प्रस्तुत रहस्यवादी गुणगान कव्वाली विशेष रूप से सम्मिलित थी।
- सूफी सन्तों ने मानवीय प्रेम कथाओं के रूपक के द्वारा आध्यात्मिक प्रेम को व्यक्त किया।
- सूफी कविता की एक भिन्न कथा दक्कन में दककनी उर्दू में रची गई यह एक छोटी कविता थी। और कुछ अन्य रचनायें—'लोरीनामा' और 'शादीनामा' के रूप में हैं।
- सूफी आंदोलन में चिश्ती सिलसिला, सुहरावर्दी सिलसिला, काडिरिया सिलसिला व नक्शबंदी सिलसिला प्रमुख थे।

(I) चिश्ती सिलसिला (Chishti Silsila)

- चिश्ती सिलसिले के संस्थापक अबु अब्दाल चिश्ती थे, किन्तु भारत में इसका प्रचार–प्रसार ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने किया। उनका मुख्य केन्द्र अजमेर था।
- इस सिलसिले के संत गरीबीपूर्ण जीवन–यापन करते थे तथा राज्य के संरक्षण को स्वीकार नहीं करते थे।
- चिश्ती संत खानकाहों में संगीत को महत्त्व देते थे। इनकी संगीत सभा समा कहलाती थी। यहीं से कव्वाली का भी विकास हुआ।
- **चिश्ती सम्प्रदाय के प्रमुख सन्त निम्न थे—**
  - **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती :** मोहम्मद गोरी ने इनको सुल्तान–उल–हिन्द की उपाधि दी। इनकी मृत्यु 1236 में हुई जिसके बाद अजमेर में दरगाह का निर्माण कराया गया। ये **ख्वाजा उस्मान हारूनी के शिष्य** थे। इनके दो प्रमुख शिष्य थे—शेख हमीदुद्दीन नागौरी और शेख कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी।
  - **शेख हमीदुद्दीन नागौरी :** इनका जन्म दिल्ली में हुआ और उनका कार्यक्षेत्र नागौर था। मोइनुद्दीन चिश्ती ने नागौरी को सुल्तान–उल तरिकिन (असहायों का बादशाह) की उपाधि धारणा की।
  - **बख्तियार काकी :** ये इल्तुतमिश कालीन थे। मोइनुद्दीन चिश्ती इन्हें बख्तियार कहते थे। कुतुबुद्दीन ऐबक ने बख्तियार काकी की याद में कुतुबमीनार को बनवाना शुरू किया था।
  - **बाबा फरीद :** इनका पूरा नाम फरीदुद्दीन–मंसूर–शंकर–ए–गज था। बाबा फरीद से गुरुनानक काफी प्रभावित थे, इसलिए आदि ग्रंथ में बाबा फरीद की शिक्षाओं का संकलन है। इनका कार्यक्षेत्र पंजाब के अजोधन में था। इन्होंने चिल्लाह–ए–मा–अकुश की साधना की।
  - **निजामुद्दीन औलिया :** ये बाबा फरीद के शिष्य थे। इनका कार्यक्षेत्र ज्ञासपुर (दिल्ली) था। ये एकमात्र सूफी संत थे जिन्होंने शादी नहीं की थी। इनको **महबूबे इलाही (ईश्वर का प्रिय)** भी कहा जाता था। अमीर हसन रिजवी की रचना फवायदुल फवाद में औलिया की शिक्षाएँ संकलित हैं। उन्होंने भारतीय योग प्राणायाम को अपनाया था, इसलिए उन्हें

योगसिद्धी भी कहा गया। शेख चिश्ती, अमीर खुसरो एवं अमीर हसन देहलवी इनके प्रमुख शिष्य थे। निजामुद्दीन औलिया ने **योगायाम** पद्धति को अपनाया। खुसरो ने अपने पीर (गुरु) निजामुद्दीन औलिया की मृत्यु का समाचार सुनने के दूसरे दिन ही अपने प्राण त्याग दिये।

- **बहरुद्दीन गरीब :** इन्होंने दक्षिण भारत में चिश्ती सिलसिले का प्रचार–प्रसार किया। इनकी गतिविधियों का केन्द्र दौलताबाद था।
- **गेसूदराज :** इन्होंने दक्षिण भारत में गुलबर्गा को अपना केन्द्र बनाया। इन्हें बन्दा नवाज की उपाधि दी गई थी।
- **शेख सलीम चिश्ती :** ये अकबर के समकालीन थे। अकबर ने अपने पुत्र जहाँगीर का नाम सलीम रखा।
- नसीरुद्दीन चिराग–ए–दिल्ली एक चमत्कारी संत थे। इन्होंने **'तौहिद–ए– वजूदी'** की रचना की।

(II) सुहरावर्दी सिलसिला (Suhravardi Silsila)

- सुहरावर्दी सिलसिले का प्रभाव उत्तर–पश्चिमी सीमा प्रांत क्षेत्र में था। इस सम्प्रदाय का मुख्यालय मुल्तान (पाकिस्तान) में था।
- शिहाबुद्दीन उमर सुहरावर्दी इसके मुख्य प्रवर्तक थे, किन्तु भारत में इस सिलसिले के प्रवर्तन का श्रेय संत शेख बहाउद्दीन जकारिया को है।
- इस सिलसिले के संत शेख जलालुद्दीन को फिरोजशाह तुगलक ने शेख–उल–इस्लाम के पद पर चुना था।
- सुहरावर्दी सिलसिले के संतों ने राजनीतिक संरक्षण प्राप्त किया था तथा वे संपत्ति को आध्यात्मिक विकास में बाधक नहीं मानते थे।

सम्प्रदाय	संस्थापक	भारत में प्रचारक
चिश्ती सम्प्रदाय	अबू अहमद अब्दाल चिश्ती	ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
सुहरावर्दी सम्प्रदाय	शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी	बहाउद्दीन जकारिया
कादिरी सम्प्रदाय	शेख अब्दुल कादिर जिलानी	शाह नियामत उल्ला और नासिकद्दीन महमूद जिलानी
शत्तारी सम्प्रदाय	शाह अब्दुल्ला शत्तारी	शेख अब्दुल शत्तारी
नक्शबन्दी सम्प्रदाय	बहाउद्दीन नक्शबंद	ख्वाजा बाकी बिल्लाह

(III) कादिरिया सिलसिला (Qadiria Silsila)

- इस सिलसिले के संस्थापक **अब्दुल कादिर जिलानी** थे। उनकी मजार बगदाद में है।
- इस सिलसिले के संत सनातन पंथी इस्लाम के समर्थक थे तथा ये संगीत विरोधी थे। ये अपने सिर पर हरे रंग की पगड़ी बाँधते थे।
- इस सिलसिले के एक प्रमुख संत मोहम्मद गौस ने उत्तर भारत में इसका प्रचार–प्रसार किया। गौस से प्रभावित होकर सिकंदर लोदी ने अपनी पुत्री का विवाह उनसे कर दिया। शेख मूसा, अकबर के समकालीन थे, दाराशिकोह, संत मुल्तान शाह बदख्शी के शिष्य थे।
- फिरदौसी सिलसिला कादिरिया सिलसिले की एक शाखा थी, जो बिहार में लोकप्रिय रहा।
- मुगल बादशाह शाहजहाँ का पुत्र **दाराशिकोह** कादिरी सिलसिले का अनुयायी था।
- मुगल बादशाह हुमायूँ और तानसेन **मुहम्मद गौस** से ज्यादा प्रभावित थे।

(IV) नक्शबन्दी सिलसिला (Naksh bandi Silsila)

- ख्वाजा उबैदुल्ला नक्शबंदी, इस सिलसिले के संस्थापक थे, लेकिन शेख अहमद फारुखी सरहिन्दी ने भारत में इसका प्रचार किया। अकबर के समय में इस सिलसिले की स्थापना हुई थी।
- ये कुरान, हदीस, शरियत के पालन पर बल देते थे और संगीत को इस्लाम विरोधी मानते थे।
- शेख अहमद सरहिन्दी को मुज्जदिद (इस्लाम) सुधारक कहा जाता था। वे अकबर व जहाँगीर कालीन थे। इन्होंने अकबर के **दीन–ए–इलाही** का विरोध किया। जहाँगीर ने इन्हें बंदी बनाया था।
- औरंगजेब के समय इस सिलसिले का प्रभाव बहुत बढ़ गया था। वह शेख मासूम का शिष्य था।

कुछ अन्य तथ्य (Some Other Facts)

- शेख नसीरुद्दीन को चिराग–ए–दिल्ली के नाम से जाना जाता था।
- सूफी मत में गुरु को पीर एवं शिष्य को मुरीद कहा जाता था।
- सत्तरी सिलसिला का संस्थापक अब्दुल सत्तार था, जो केवल मध्य भारत में ही सक्रिय था।
- वहदत्–उल–सहूद–सिद्धांत का प्रतिपादक शेख अहमद सरहिन्दी था।
- सूफियों के संप्रदाय बा–शरा (जो शरीयत के आदेशों को मानते थे) तथा बे–शरा (जो शरीयत के आदेशों का उल्लंघन करते थे) थे।
- प्रत्येक सूफी सिलसिले का प्रधान खलीफा कहलाता था।
- औरंगजेब ने सरमद नामक सूफी संत को मृत्युदण्ड दिया था।

13. भक्ति आन्दोलन (Bhakti Movement)

- हिन्दू धर्म के अंतर्गत उत्पन्न भक्ति आंदोलन मध्य युग के धार्मिक जीवन की एक महान विशेषता थी। भक्ति आंदोलन के प्रवर्तकों ने जाति प्रथा का विरोध किया, मूर्ति पूजा को आवश्यक नहीं बताया और एकेश्वरवाद का समर्थन किया।
- भक्ति आंदोलन का विकास 7वीं और 12वीं शताब्दियों के मध्य दक्षिण भारत में हुआ। शैव नयनारों और वैष्णव अलवारों ने मुक्ति के लिए ईश्वर की वैयक्तिक भक्ति पर बल दिया। इस आंदोलन के प्रमुख प्रचारक शंकराचार्य माने जाते हैं।
- यह हिन्दुओं का सुधारवादी आंदोलन था।

प्रमुख मत और उनके प्रतिपादक
(Famous Views/Philosophy & Propowets)

क्र.सं.	प्रतिपादक	दर्शन	सम्प्रदाय	उपासना	मार्ग
1.	शंकराचार्य	अद्वैतवाद	स्मृति	निर्गुण	ज्ञान मार्ग
2.	रामानुजाचार्य	विशिष्ट–द्वैतवाद	श्री संप्रदाय	सगुण	भक्ति मार्ग
3.	निम्बार्काचार्य	द्वैताद्वैतवाद	सनक संप्रदाय	सगुण	भक्ति मार्ग
4.	माधवाचार्य	द्वैतवाद	ब्रह्म संप्रदाय	सगुण	भक्ति मार्ग
5.	वल्लभाचार्य	शुद्धद्वैतवाद	रूद्र संप्रदाय	सगुण	भक्ति मार्ग

(I) भक्ति आन्दोलन के प्रमुख सन्त (Famous Saints of Bhakti Movement)

(i) शंकराचार्य : शंकराचार्य का जन्म पूरना नदी के किनारे कालदी (मालाबार, केरल) नामक स्थान पर 788 ई. में हुआ था। उन्हें प्रच्छन्न बौद्ध भी कहा गया है, क्योंकि उन पर बौद्ध धर्म के शून्यवाद का प्रभाव था। उन्होंने ज्ञान मार्ग के अंतर्गत निर्गुण ब्रह्म की उपासना पर बल दिया और अद्वैतवाद दर्शन (जो दो न हो) प्रतिपादित किया। शंकराचार्य ने बद्रीनाथ में **ज्योति पीठ,** द्वारिका में **शारदा पीठ,** पुरी में **गोवर्धन पीठ** एवं मैसूर में **श्रृंगेरी पीठ** की स्थापना की थी।

(ii) रामानुजाचार्य (12वीं शताब्दी के आरम्भ में) : इनका जन्म आन्ध्र प्रदेश के त्रिपुती नामक स्थान पर हुआ। वे सगुण ईश्वर में विश्वास करते थे। उन्होंने बादरायण के भाष्य तथा वेदान्त सूत्र पर भाष्य लिखा था। उन्होंने **विशिष्टाद्वैतवाद** प्रतिपादित कर शूद्रों को भी अपना शिष्य बनाया। उन्होंने अपनी शिक्षा यादव प्रकाश एवं यामुनी मुनि से उन्हें शिक्षा प्राप्त थी।

(iii) निम्बार्क (12वीं शताब्दी) : इनका जन्म कर्नाटक के बेल्लारी में हुआ था। वे राधा कृष्ण के उपासक थे और उन्हें शंकर का अवतार मानते थे। उन्होंने द्वैताद्वैत दर्शन प्रतिपादित किया। वे रामानुजाचार्य के समकालीन थे। इन्होंने **सनक सम्प्रदाय** की स्थापना की तथा **द्वैताद्वैतवाद** नामक दर्शन दिया।

(iv) माधवाचार्य (13वीं सदी) : उन्होंने द्वैतवाद दर्शन प्रतिपादित किया, और वे आत्मा और परमात्मा को भिन्न मानते थे। वे लक्ष्मी नारायण के उपासक थे।

(v) वल्लभाचार्य (1479–1531) : उनके पिता लक्ष्मणभट्ट तेलंगाना के ब्राह्मण थे और जब वे काशी की यात्रा पर थे तब वल्लभाचार्य का जन्म हुआ। इन्होंने **शुद्धाद्वैतवाद सिद्धांत** का प्रतिपादन किया। वे **वैष्णव संप्रदाय** के अंतर्गत कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख संत थे। वे श्रीनाथजी के रूप में कृष्ण भक्ति पर बल देते थे। उन्होंने सुबोधिनी और सिद्धान्त–रहस्य जैसे धार्मिक ग्रंथ लिखे। वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने कृष्ण भक्ति को और भी अधिक लोकप्रिय बनाया। अकबर ने उन्हें गोकुल और जैतपुरा की जागीरें प्रदान कीं। औरंगजेब के समय श्रीनाथजी की मूर्ति को उदयपुर पहुँचा दिया गया जहाँ वह नाथद्वारा के नाम से प्रसिद्ध हुई।

(vi) रामानन्द (14वीं सदी में) : ये रामानुज के शिष्य थे जिनका जन्म प्रयाग (इलाहाबाद) में हुआ था। उन्होंने सीता–राम की भक्ति पर बल दिया। उन्होंने सभी जातियों और स्त्री–पुरुषों को समान स्थान दिया। वे भक्ति आंदोलन को दक्षिण भारत से उत्तर भारत में लाए। उनके 12 शिष्यों में धन्ना जाट था, सेनदास नाई था, रविदास (रैदास) चमार था और कबीर जुलाहा था। इनका मानना था–

जांति–पांति पूछे नहिं कोई
हरि को भजै सो हरि को होई।

(vii) कबीर : वे सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों को निकट लाने का प्रयत्न किया। कबीर ने भक्ति को ही मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग बताया। उनके दोहों का संकलन बीजक में संगृहीत है जिसका संकलन भोगदास ने किया है। कबीर व धर्मदास के बीच हुए संवादों का संकलन अमरमूल में है। उनकी मृत्यु मगहर (संत कबीर नगर, उत्तर प्रदेश) में हुई ।

(viii) गुरु नानक (1469–1538 ई.) : गुरु नानक का जन्म लाहौर में तलवण्डी (वर्तमान ननकाना) नामक स्थान पर एक खत्री परिवार में हुआ। वे मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा तथा धार्मिक आडंबरों के कट्टर विरोधी थे, लेकिन कर्म एवं पुनर्जन्म में विश्वास रखते थे। उन्होंने निराकार ईश्वर की कल्पना की जिसे अकाल पुरुष की संज्ञा दी। वे सूफी संत बाबा फरीद से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने शिष्य बनाए जो सिख कहलाने लगे। उनका निधन करतार में हुआ।

- इनके उपदेशों को सिख पंथ के पवित्र ग्रंथ **'गुरुग्रंथ साहब'** संकलित किया था।
- गुरुनानक ने बाबर से सम्बन्धित **'बाबरवाणी'** नामक ग्रंथ की रचना की।

(ix) चैतन्य (1486–1533 ई.) : इनका जन्म बंगाल के नादिया नामक स्थान पर हुआ। इनका वास्तविक नाम विश्वम्भर था, पर बचपन में इनका नाम निमाई था। शिक्षा पूरी होने के पश्चात् उन्हें विद्यासागर की उपाधि दी गई। इन्होंने कृष्ण को अपना आराध्य माना। बंगाल और उड़ीसा नरेश प्रताप रूद्र गजपति उनके शिष्य थे। चैतन्य महाप्रभु का देहावसान पुरी में हुआ।

- चैतन्य महाप्रभु ने **'गोसाई संघ'** की स्थापना की और **'संकीर्तन प्रथा'** को जन्म दिया।
- इनके अनुयायी इन्हें **कृष्ण का अवतार** मानते थे।

(x) दादू दयाल (1544–1603 ई.) : इनका जन्म अहमदाबाद में एक जुलाहा परिवार में हुआ। वे कबीर के अनुयायी थे। उन्होंने **ब्रह्म सम्प्रदाय** की स्थापना की। सुन्दरदास, रज्जब एवं सूरदास उनके शिष्य थे। उनकी मृत्यु राजस्थान के नारायण गाँव में हुई थी।

सिख धर्म गुरु
(Sikh Gurus)

गुरु नानक	सिख धर्म के संस्थापक। 'आदिग्रंथ' की रचना की।
गुरु अंगद	गुरुमुखी लिपि के आविष्कारक। इन्होंने गुरुनानक की लंगर व्यवस्था अपनायी।
गुरु अमरदास	अनुशासन पर बल दिया। धर्म के प्रसार हेतु 22 गद्दियों की स्थापना।
गुरु रामदास	अमृतसर नगर बनवाया। गुरु का पद पैतृक किया।
गुरु अर्जुन देव	**गुरु ग्रंथ साहिब** या **आदि ग्रंथ** का संकलन किया, अमृतसर में **हरमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर)** बनवाया, इन्हें **जहाँगीर** ने फाँसी दे दी।
गुरु हरगोविंद	अकाल तख्त के संस्थापक।
गुरु हरराय	अपने पुत्र रामराय को मुगल दरबार में भेजा। इन्होंने मुगलों के उत्तराधिकार के युद्ध में भाग लिया, दाराशिकोह को आशीर्वाद दिया।
गुरु हरकिशन	गुरुपद के लिए संघर्ष। अल्प वयस्क अवस्था में चेचक से मृत्यु।
गुरु तेग बहादुर	औरंगजेब ने फाँसी दे दी।
गुरु गोविंद सिंह	खालसा पंथ के संस्थापक। तथा **पाहुल प्रणाली** की स्थापना। इनका जन्म **पटना** (बिहार) में हुआ।

(xi) रविदास (पन्द्रहवीं शताब्दी) : ये रामानन्द के शिष्य थे। वे निर्गुण ब्रह्म की उपासना पर जोर देते थे। उन्होंने अपने विचार ब्रजभाषा में रखे।

(xii) शंकरदेव : शंकरदेव ने **असम** में वैष्णव मत को लोकप्रिय बनाया। इनको नारंगदेव भी कहा जाता था। उन्होंने **एकशरण सिद्धांत** प्रतिपादित किया।

- इन्हें **असम के चैतन्य** के रूप में भी जाना जाता है।

(xiii) मीराबाई (1498–1546 ई.) : ये मेड़ता के राजा रत्नसिंह राठौर की पुत्री थी जिनका विवाह राणा सांगा के पुत्र भोजराज के साथ हुआ था। वह भगवान कृष्ण की भक्त थी और इन्होंने राजस्थानी और ब्रजभाषा में गीतों की रचना की। इन्होंने कृष्ण की उपासना प्रेमी और पति दोनों के रूप में की।

(xiv) सूरदास (16वीं-17वीं शताब्दी) : इनका जन्म रुनकता नामक गाँव में हुआ था। ये अकबर और जहाँगीर के समकालीन थे। इन्होंने ब्रजभाषा में सूरसारावली, सूरसागर एवं साहित्य लहरी जैसी आदि रचनायें कीं। ये सगुण ब्रह्म के उपासक थे।

(xv) तुलसीदास (1532–1623 ई.) : इनका जन्म बाँदा जिले के राजापुर गाँव में हुआ। ये अकबर के समकालीन थे। **रामचरितमानस** अवधी भाषा में लिखा गया महाकाव्य है। इनकी रचनाएँ हैं—गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका आदि।

(II) महाराष्ट्र में भक्ति आन्दोलन (Religious Movement in Maharashtra)

महाराष्ट्र में भक्ति पंथ पण्डरपुर के देवता बिठोवा या बिट्ठल के मंदिर के चारों ओर केन्द्रित था। बिठोवा को कृष्ण का अवतार माना जाता है। बिठोवा पंथ के तीन अनुयायी ज्ञानेश्वर, नामदेव एवं तुकाराम थे।

(i) नामदेव : नामदेव का जन्म एक दर्जी परिवार में हुआ था। प्रारम्भ में यह डाकू थे। नामदेव ने कहा था कि **''एक पत्थर की पूजा होती है, तो दूसरे को पैरों तले रौंदा जाता है। यदि एक भगवान है, तो दूसरा भी भगवान है।''** नामदेव का सम्बन्ध महाराष्ट्र के **वारकरी सम्प्रदाय** से था। वह एकेश्वरवाद व कर्मकाण्ड के विरोधी थे।

(ii) ज्ञानेश्वर : इन्होंने महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन की शुरुआत की थी। ज्ञानेश्वर ने श्रीमद्भगवत गीता पर मराठी भाषा में भावार्थदीपिका (ज्ञानेश्वरी) नामक टीका लिखी।

(iii) तुकाराम : ये शिवाजी के समकालीन थे। इनकी रचनाएँ कृष्ण को समर्पित अभंग के नाम से जानी जाती हैं।

- तुकाराम ने हिन्दू–मुस्लिम एकता पर बल दिया तथा **'बाखरी पंथ'** की स्थापना की। **'दक्षिण के कबीर'** के रूप में ये विख्यात हैं।

(iv) रामदास : ये शिवाजी के राजगुरु थे। इन्होंने **दास बोध** नामक पुस्तक की रचना की। धरकरी सम्प्रदाय का संस्थापक रामदास को माना जाता है।

(v) एकनाथ : इन्होंने **भावार्थ रामायण** को मराठी भाषा में लिखा।

14. यूरोपीय कंपनियों का भारत आगमन
(Advent of Europeans in India)

भारत में यूरोपीय वाणिज्यिक कंपनियों का आगमन 15वीं शताब्दी की शुरुआत में हुआ। उनके आगमन का क्रम इस प्रकार है।

कंपनी	आगमन वर्ष	कंपनी	आगमन वर्ष
पुर्तगाली	1498 ई.	डेनिस	1616 ई.
अंग्रेज	1600 ई.	फ्रांसीसी	1664 ई.
डच	1602 ई.	स्वीडिश	1731 ई.

(I) पुर्तगाली (The Portuguese)

- प्रथम पुर्तगाली **वास्कोडिगामा** गुजराती पथ प्रदर्शक अब्दुल **मजीद** की मदद से 90 दिनों की समुद्री यात्रा के बाद 14 मई, 1498 ई. को कालीकट (केरल) बंदरगाह पर उतरा। वहाँ पर हिन्दू शासक **जमोरिन** ने उसका स्वागत किया।
- **पेड्रो अल्ब्रेज कैब्राल** दूसरा पुर्तगाली था जो 31 दिसंबर, 1500 ई. में भारत आया।
- **फ्रांसिस्को–डी–अल्मीडा** (1505-1509) प्रथम पुर्तगाली गवर्नर के रूप में 1505 ई. में भारत आया। उसने भारत में **शांत जल की नीति (Blue Water Policy)** को अपनाया।
- 1509 ई. में **अल्फांसो डी अल्बुकर्क** दूसरा गवर्नर बन कर भारत आया। **भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक** इसी को माना जाता है। उसने कोचीन को अपना मुख्यालय बनाया। 1510 ई. में उसने बीजापुर के शासक यूसुफ आदिलशाह से गोवा छीना और उस पर अपना अधिकार कर लिया।
- 1530 ई. में पुर्तगाली गवर्नर **नीनू डी कुन्हा** ने कोचीन के स्थान पर गोवा को राजधानी बनाया।

- पुर्तगाली गवर्नर **अल्फांसो डिसूजा** के साथ प्रसिद्ध संत फ्रांसिस्को जेवियर भारत आये। उसने सैनथोमा (मद्रास), हुगली (बंगाल), और दीव (काठियावाड़) में पुर्तगाली बस्तियों की स्थापना की। इस संत के अस्थि अवशेष गोवा के बॉम जीजस चर्च में रखे हैं।
- भारत का **पहला प्रिंटिंग प्रेस** (1556 ई.) में पुर्तगालियों ने गोवा में स्थापित किया।
- उन्होंने कार्ट्ज–आर्मेडा काफिला पद्धति पर जहाजों के अरब सागर में प्रवेश को काबू में किया। उन्होंने गोथिक स्थापत्य कला का प्रचलन किया।
- पुर्तगालियों ने 1503 ई. में **कोचीन (केरल)** अपने पहले दुर्ग और 1505 ई. **कन्नूर में दूसरी फैक्ट्री** स्थापित की।
- उन्होंने **तम्बाकू की खेती** से भारतवासियों को अवगत कराया।
- वे भारत में सबसे पहले आए और 1961 ई. में गोवा छोड़कर सबसे अंत में गए।

(II) डच (हॉलैण्डवासी) (The Dutch)

- डच संसद द्वारा 1602 ई. में **डच ईस्ट इंडिया कंपनी** की स्थापना की गई। कार्नेलियस हाऊटमैन पहला डच यात्री था जो 1596 ई. में भारत पहुँचा।
- डच नौसेना नायक वादेर हेग ने 1605 ई. **मसुलीपट्टनम** में पहला डच कारखाना तथा **पेत्तोपोली (निजामपत्तनम)** में दूसरा कारखाना स्थापित किया।
- डच स्थापित कुछ अन्य कारखाने **पुलीकट** (1610 ई.), **सूरत** (1616 ई.), **करिकल** (1645 ई.), **चिनसुरा** (1653 ई.), **कोचीन** (1663 ई.) ।
- पुलीकट में डच कारखाने को **गेल्ड्रिया का किला** तथा चिनसुरा (हुगली) में गुस्त्रावुस फोर्ट कहा जाता था।
- बंगाल में **पीपली में पहली डच फैक्ट्री** बसाई गई, लेकिन शीघ्र ही यह बालासोर स्थानांतरित कर दी गई।
- डचों ने पुलीकट (जो उनका मुख्यालय था) में स्वर्ण के सिक्के पैगोडा का प्रचलन करवाया।
- 1759 ई. में अंग्रेजों ने डच को बेदारा (प. बंगाल) के युद्ध में पराजित कर भारत में उनकी गतिविधियाँ खत्म कर दीं।

(III) अंग्रेज (The British)

- इंग्लैंड में मर्चेंट एडवेंचर्स नामक व्यापारियों के एक समूह ने **'दि गवर्नर एण्ड कंपनी आफ मर्चेंट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज'** की स्थापना 1599 ई. में की। महारानी एलिजाबेथ ने 1600 ई. में कंपनी को पूर्व के साथ व्यापार के लिए 15 वर्षों के लिए अधिकार पत्र प्रदान किया।
- इंग्लैंड के **राजा जेम्स प्रथम** के दूत के रूप में **कैप्टन हॉकिन्स**, **हैक्टर** नामक जहाज से भारत आया और जहाँगीर के आगरा स्थित दरबार में पहुँचा। वहाँ उसने बादशाह से फारसी में बात की जिससे प्रसन्न होकर उसे 400 **मनसब** एवं **इंग्लिश खाँ** की उपाधि प्रदान की।
- अंग्रेजों ने भारत में अपनी प्रथम कंपनी 1611 ई. **मसुलीपट्टनम** में स्थापित की थी।
- अंग्रेजों ने 1612 ई. में पुर्तगालियों को **सूरत** के निकट स्वाजीहाल में पराजित किया।
- अंग्रजों ने जहाँगीर की अनुमति से सूरत में पश्चिम भारत की पहली और भारत की दूसरी कंपनी स्थापित की।
- ब्रिटेन के राजा जेम्स प्रथम के दूत के रूप में **सर थॉमस रो** 18 सितंबर, 1615 को सूरत आया और 10 जनवरी, 1616 को अजमेर में जहाँगीर के दरबार में उपस्थित हुआ।
- गोलकुण्डा के सुल्तान ने 1632 ई. में अंग्रेजों का सुनहरा फरमान दिया।
- अंग्रेजों ने पूर्वी तट पर अपना कारखाना 1633 ई. में बालासोर एवं हरिहरपुरा में स्थापित किया।
- 1639 ई. में **फ्रांसिस डे** नामक अंग्रेज ने चन्द्रगिरि के राजा से मद्रास पट्टे पर प्राप्त किया और वहाँ पर **फोर्ट सेंट जॉर्ज** की स्थापना की।
- ब्रिजमैन ने हुगली में सन् 1651 ई. में एक कारखाना स्थापित किया।
- 1661 ई. में पुर्तगालियों ने अपनी राजकुमारी **कैथरीन ब्रेगांजा** का विवाह ब्रिटेन के राजा चार्ल्स द्वितीय से करके बम्बई को दहेज के रूप में दे दिया।
- 1669–1677 ई. तक बंबई का गवर्नर **जेराल्ड आंगियर** ही बंबई का संस्थापक था।
- बंगाल के सूबेदार शाहशुजा ने 1651 ई. में अंग्रेजों को व्यापार करने का विशेषाधिकार दिया।
- **विलियम हैजेज** बंगाल का प्रथम अंग्रेज गवर्नर था।
- जाब चारनॉक ने बंगाल में तीन गाँव कालिकाता, गोविन्दपुर एवं सुतानाटी को मिलाकर आधुनिक कलकत्ता की नींव रखी तथा फोर्ट विलियम का निर्माण किया, जिसका पहला प्रेसीडेंट सर चार्ल्स आयर्स था।
- **यूरोपियों की प्रथम फैक्ट्रियाँ–**

पुर्तगाली	:	कोचीन (केरल) (1502)
डच	:	मसुलीपट्टनम (आन्ध्रप्रदेश) (1605)
अंग्रेज	:	मसुलीपट्टनम (1611)
डेनिस	:	ट्रावनकोर (तंजौर) (1620)
फ्रांसीसी	:	सूरत (गुजरात) (1668)

(IV) फ्रांसीसी (The French)

- फ्रांस के सम्राट **लुई (XIV)** के मंत्री **कॉलबर्ट** द्वारा 1664 ई. फ्रेंच ईस्ट इण्डिया कंपनी की स्थापना हुई जिसे कम्पने देस इण्दसे ओरिएंटलेस के नाम से बुलाया जाता है।
- फ्रेंसिस कैरो ने 1668 ई. में सूरत में अपने पहले व्यापारिक कारखाने की स्थापना की। उनकी दूसरी कंपनी **मसुलीपट्टनम** में स्थापित हुई।
- 1673 ई. फ्रेंसिस मार्टिन ने **पर्दुचुरी** नामक एक गाँव प्राप्त किया, जो आगे चल कर पांडिचेरी के नाम से जाना गया।
- डचों ने पांडिचेरी को छीन लिया, लेकिन रिजविक की संधि के बाद पांडिचेरी पुनः फ्रांसीसियों को मिल गया।
- बंगाल में मुख्य फैक्ट्री **चन्द्रनगर** में थी।
- फ्रांसीसियों ने 1731 में मॉरीशस, 1724 ई. में मालाबार में स्थित माही तथा 1739 में करिकाल पर अपना पूरा अधिकार किया।

- 1724 ई. में डूप्ले गवर्नर बना। वह भारत में फ्रांसीसी साम्राज्य स्थापित करना चाहता था।
- अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के मध्य कर्नाटक क्षेत्र में कुल तीन युद्ध हुए जिन्हें आंग्ल–फ्रांसीसी युद्ध **(कर्नाटक युद्ध)** के नाम से जाना गया।
- 22 जनवरी, 1760 को लड़े गए **वाण्डिवाश के युद्ध** में फ्रांसीसी सेना पराजित हुई और उनका वर्चस्व भारत में समाप्त हो गया। इस युद्ध में जनरल आयरकूट ने अंग्रेजी सेना का नेतृत्व किया।

कर्नाटक (आंग्ल–फ्रांसीसी युद्ध)
Carnatic Wars (Anglo-French Wars)

युद्ध	काल	संधि	परिणाम
प्रथम कर्नाटक युद्ध	1746–48 ई.	एक्सला शापेल (1748)	फ्रांसीसी विजयी हुए
द्वितीय कर्नाटक युद्ध	1749–54 ई.	पाण्डिचेरी की संधि (1954)	अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ा
तृतीय कर्नाटक युद्ध	1758–63 ई.	पेरिस की संधि (1763)	वाण्डिवाश के युद्ध के बाद फ्रांसीसी निर्णायक रूप से पराजित हुए

15. ब्रिटिश शासन की भू-राजस्व नीतियाँ
(Land Revenue Policies of British)

(I) स्थाई बंदोबस्त (Permanent Settlement)

- इसे इस्तमरारी, चिरस्थायी या जमींदारी बंदोबस्त भी कहा जाता था।
- यह 1793 में **लॉर्ड कार्नवालिस** द्वारा **बिहार, बंगाल** और **उड़ीसा** में ब्रिटिश भारत के कुल क्षेत्रफल का लगभग 18% भू–भाग में लागू किया गया।
- इस व्यवस्था में **जानशोर** एवं **जेम्स ग्राण्ड** भी जुड़े थे।
- इस पद्धति में लगान का 10/11 भाग अर्थात् 89% भाग सरकार का तथा 1/11 भाग अर्थात् 11% भाग जमीदारों का सुनिश्चित किया गया।
- किसानों के भूमि सम्बन्धी अधिकार समाप्त कर जमींदारों को भूमि मालिक बनाया गया।
- इस व्यवस्था में सूर्यास्त कानून लागू था। सूर्यास्त से पूर्व लगान जमा किया जाए, ऐसा न करने पर जमींदारों को जागीर के अधिकार से मुक्त कर दिया जाता था।

(II) रैयतवाड़ी व्यवस्था (Ryotwari System)

- इसके जन्मदाता **थॉमस मुनरो** एवं **कैप्टन** रीड थे।
- यह व्यवस्था 1792 में **मद्रास** एवं **बंबई** में लागू की गई। इस व्यवस्था के अन्तर्गत ब्रिटिश भारत के कुल क्षेत्रफल का 51% भू-भाग शामिल था।
- इसके अंतर्गत प्रत्येक जमीन धारक को भू–स्वामी स्वीकार करके उसके साथ लगान की शर्तें तय की गईं।

(III) महालवाड़ी बन्दोबस्त (Mahalwari System)

- इस पद्धति के जन्मदाता **हाल्ट मैकेंजी** थे।
- इस व्यवस्था के अंतर्गत दक्कन के कुछ जिले, **संयुक्त प्रांत, आगरा**, **अवध**, **मध्य प्रांत** और **पंजाब** के कुछ हिस्से भी शामिल थे। इस व्यवस्था के अन्तर्गत ब्रिटिश भारत का 30% भाग शामिल था।
- इसकी व्यवस्था में प्रत्येक महाल (जागीर या गाँव) के अनुसार अंग्रेजों ने राजस्व निश्चित किया।

16. 1857 का विद्रोह
(Revolt of 1857)

- 1857 की क्रांति के पीछे सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व तात्कालिक कारक जिम्मेदार थे। इस विप्लव का तात्कालिक कारण **चर्बी वाला कारतूस** था।
- भारत में 1856 के अंत में **एनफील्ड राइफलों** का प्रयोग प्रारम्भ हुआ, जिसमें चर्बी युक्त कारतूसों का उपयोग होता था।
- 29 मार्च, 1857 को बैरकपुर की छावनी में **34वीं एनआई रेजिमेंट के मंगल पांडे** ने **लेफ्टिनेंट बाग** और **जनरल ह्यूसन** की हत्या कर दी। मंगल पांडे बलिया का रहने वाला था। इस घटना के पश्चात् बाद उसे 6 अप्रैल, 1857 ई. को फाँसी दे दी गई।

1857 की क्रान्ति
(Revolt of 1857)

केन्द्र	नेता	समय	विद्रोह के दमनकर्ता	समर्पण का दिन
दिल्ली	बहादुर शाह जफर,	11 मई, 1857 बख्तखाँ (नेतृत्वकर्त्ता)	निकलसन, हडसन	20 सितंबर, 1857 ई.
कानपुर	तात्या टोपे (रामचन्द्र पांडुरंग) नाना साहेब (धोंधू पंत)	5 जून, 1857	कैम्पबल	सितम्बर, 1857 ई.
लखनऊ	बेगम हजरत महल, बिरजिस कादिर	4 जून, 1857	कैम्पबल	मार्च, 1858 ई.
झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई	4 जून, 1857	जनरल रोज	17 जून, 1858 ई.
ग्वालियर	तात्या टोपे	1 जून, 1957	जनरल रोज	18 जून, 1858 ई.
जगदीशपुर	कुँवर सिंह, अमर सिंह	12 जून, 1857	मेजर विलियम टेलर	दिसंबर, 1858 ई.

केन्द्र	नेता	समय	विद्रोह के दमनकर्ता	समर्पण का दिन
फैजाबाद	मोलवी अहमदुल्ला	जून, 1857	सर रेनार्ड	5 जून, 1858 ई.
इलाहाबाद	लियाकत अली	जून, 1857	कर्नल नील	1858 ई.
बरेली	खान बहादुर	जून, 1857	विसेंट आयर	1858 ई.

(I) क्रान्ति का प्रसार (Spread of Rebellion)

- फैजाबाद में 1857 के विद्रोह को **मौलवी अहमदुल्ला** ने अपना नेतृत्व प्रदान किया। अहमदुल्ला की गतिविधियों से अंग्रेज इतने चिंतित थे कि इन्हें पकड़ने के लिए ₹ 50,000 का नकद इनाम घोषित किया।
- विद्रोह 10 मई, 1857 को मेरठ से शुरू हुआ। 20 एन. आई. तथा एल. सी. की पैदल सैन्य टुकड़ी 11 मई को दिल्ली पहुँची तथा मुगल बादशाह बहादुर शाह को अपना नेता घोषित किया।
- 17 जून, 1858 को झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ग्वालियर में अंग्रेज जनरल ह्यूरोज से लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुई। ह्यूरोज ने रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु पर कहा कि **''भारतीय क्रांतिकारियों में यहाँ सोयी हुई औरत अकेली मर्द है।''**
- वाराणसी में 19 नवम्बर, 1835 ई. में जन्म लेने वाली रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी में सिपाहियों का नेतृत्व किया। इनका **मूल नाम मणिकर्णिका** था। ह्यूरोज से लड़ते हुए रानी लक्ष्मीबाई 17 जून, 1858 को वीरगति को प्राप्त हुई थी।
- विद्रोह के मुख्य केन्द्र दिल्ली, झाँसी, कानपुर, लखनऊ एवं आरा थे।

(II) प्रमुख तथ्य (Important facts)

- 1857 के विद्रोह या क्रांति का प्रतीक चिह्न **कमल व रोटी** था।
- 1857 के विद्रोह के समय इंग्लैंड के प्रधानमंत्री **विस्कॉट पामर्स्टन** थे तथा भारत का गवर्नर जनरल **लॉर्ड कैनिंग** था। ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया थीं।
- कानपुर में अन्तिम मराठा पेशवा बाजीराव–II के दत्तक पुत्र **नाना साहब (धोंधू पन्त)** को 1857 के विद्रोहियों की कमान थी।
- तात्या तोपे को उनके जमींदार मित्र **मानसिंह** ने धोखा देकर पकड़वा दिया, जिसके पश्चात् उन्हें फाँसी दे दी गई।
- असम में **मनीराम दत्त,** कोटा में **जयदयाल** और **हरदयाल,** उड़ीसा में **राजकुमार उज्जवल शाही** और सुरेन्द्र शाही, पंजाब में **वजीर खाँ,** कुल्लू में **राणा प्रताप सिंह** तथा **वीर सिंह** ने विद्रोह किया।
- क्रांति की विफलता का मुख्य कारण – एकता, संगठन और साधनों की न्यूनता, विद्रोही गतिविधियों का कुछ क्षेत्र तक ही सीमित रहना, आदि कारण थे।
- वी. डी. सावरकर ने 1909 में मराठी भाषा में **'फर्स्ट वार ऑफ इंडियन इंडिपेन्डेंस'** नामक पुस्तक लिखी।
- भारतीय इतिहासकार अशोक मेहता ने अपनी पुस्तक **'द ग्रेट रिबैलियन'** में इसे राष्ट्रीय विद्रोह का नाम दिया।
- डॉ. सुरेन्द्र नाथ सेन ने **'एट्टीन फिफ्टी सेवन'** लिखी। उन्हें 1857 के संग्राम का सरकारी इतिहासकार भी माना जाता है।
- 1857 विद्रोह के बाद भारत का शासन ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों से निकलकर ब्रिटिश क्राउन के हाथों में चला गया।
- 1 नवंबर, 1858 को इलाहाबाद में लार्ड कैनिंग ने महारानी विक्टोरिया की उद्घोषणा को पढ़ा, जिसे स्टैनली ने तैयार किया था। इसके बाद गवर्नर जनरल कैनिंग को वायसराय की उपाधि मिली।
- 1858 की उद्घोषणा के बाद, **पील कमीशन** की सिफारिशों के अनुसार भारतीय सैनिकों और यूरोपीय सैनिकों की संख्या का अनुपात 6 : 1 से घटाकर 2 : 1 कर दिया गया।

17. भारत में जनजातीय आंदोलन (Tribal Movement India)

औपनिवेशिक काल में अंग्रेजों ने अपने साम्राज्य विस्तार के लिए कृषक को जमींदारों और आदिवासियों को उनकी जमीनों से बेदखल कर दिया जिसकी वजह से इन सभी समुदायों में अंग्रेजी राज्य के प्रति असंतोष पैदा हुआ जिसके परिणामस्वरूप अंग्रेजी राज्य की स्थापना के साथ ही उसके विद्रोह की तीव्रता भी बढ़ती चली गई जो समय–समय पर देश के विभिन्न भागों में छोटे–मोटे जनजातीय विद्रोह के रूप में दिखाई देती है। जनजातीय विद्रोह भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हुए जिनका वर्णन निम्नवत है–

(I) पूर्वी भारत में जनजातीय विद्रोह (Tribal Rebellion in Eastern India)

संन्यासी विद्रोह 1760 ईस्वी से 18 ईसवी के मध्य बंगाल में हुआ इस विद्रोह में शामिल संन्यासी गिरी संप्रदाय से संबंधित थे और संन्यासी विद्रोह के प्रमुख नेता दिर्जी नारायण और केना सरकार थे बंकिम चंद्र चटर्जी ने अपने उपन्यास आनंद मठ में इस संन्यासी विद्रोह का वर्णन किया है।

संन्यासी विद्रोह के प्रमुख कारण तीर्थ स्थलों पर जाने पर अंग्रेजों द्वारा प्रतिबंध लगा दिया गया। 1770 ईस्वी में बंगाल में भीषण अकाल पड़ा इस विद्रोह में तत्कालीन असंतुष्ट किसानों, जमींदारों और हस्तशिल्प के मजदूरों ने अपना योगदान दिया। अंग्रेज अधिकारी वारेन हेस्टिंग्स ने संन्यासी विद्रोह को कठोर दंडात्मक कार्यवाही द्वारा दबा दिया।

(i) मुंडा एवं हो विद्रोह (1820–22)/Munda and Ho Revolt (1820-22)

यह छोटा नागपुर एवं सिंह भूमि जिला से अंग्रेजों द्वारा मुंडा एवं हो जनजातियों को उनकी भूमि से बेदखल किए जाने से इस विद्रोह की नींव पड़ी। हो, जनजाति ने 1820-22 ईसवी तक और 1831 ईसवी में अंग्रेजी सेना का विद्रोह किया।

राजा जगन्नाथ जो बंगाल के पाराहार के तत्कालीन राजा थे उन्होंने आदिवासियों की इस विद्रोह में भरपूर सहायता की। मेजर रफ सेज ने कठोर कार्यवाही से इस विद्रोह का दमन कर दिया 1874 में मुंडा विद्रोह शुरू हुआ तथा 1895 ईसवी में बिरसा मुंडा द्वारा इस विद्रोह का नेतृत्व संभालने पर यह विद्रोह शक्तिशाली रूप

से सामने आया। इन्होंने 1899 ईसवी में क्रिसमस की पूर्व संध्या पर इस विद्रोह की उद्घोषणा की जो सन् उन्नीस सौ (1900) में पूरे मुंडा क्षेत्र में आग की तरह फैल गया सन् उन्नीस सौ में अंग्रेजों द्वारा बिरसा मुंडा को गिरफ्तार कर लिया गया। जहाँ राँची की जेल में हैजे से बिरसा मुंडा की मृत्यु हो गई।

(ii) कोल विद्रोह (1831)/Kol Revolt (1831)

1831 में छोटा नागपुर मैं यह कोल विद्रोह हुआ। इस विद्रोह का प्रमुख कारण कोल आदिवासियों की जमीन छीनकर मुस्लिम और सिख संप्रदाय के किसानों को दे दी, इस विद्रोह में गंगा नारायण और बुद्धो भगत ने भूमिका निभाई। यह विद्रोह मुख्य रूप से रांची हजारीबाग पलामू मानभूम और सिंह भूम क्षेत्र में फैला।

(iii) संथाल विद्रोह (1855)/Santhal Revolt (1855)

सन् 1855 ईसवी में जमींदार और साहूकारों के अत्याचार और भूमि कर अधिकारियों के दमनात्मक व्यवहार के प्रति सिद्धू एवं कान्हू के नेतृत्व में राजमहल एवं भागलपुर के संस्थान आदिवासियों ने विद्रोह कर दिया, जिसके फलस्वरूप विद्रोहियों ने संथाल परगना गठित करने की माँग की और अपनी सशक्त प्रकृति के कारण विद्रोह वीर भूम सिंह भूम बांकुरा हजारीबाग मुंगेर तथा भागलपुर जिलों में फैल गया। सन् 1856 ईसवी में ब्रिटिश सरकार ने दमनात्मक सैनिक कार्यवाही द्वारा संथाल विद्रोह को कुचल दिया तथा इस क्षेत्र में शांति स्थापित करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने विद्रोहियों की पृथक् संथाल परगना गठित करने की माँग को स्वीकार कर लिया।

(iv) चुआर विद्रोह (1798)/Chuar Revolt (1798)

दुर्जन सिंह तथा जगन्नाथ के नेतृत्व में बंगाल के मिदनापुर जिले में 1798 ईसवी में यह विद्रोह हुआ इस विद्रोह का मुख्य कारण भूमि कर एवं अकाल के कारण उत्पन्न आर्थिक संकट था। इस विद्रोह में आत्म विनाश की नीति अपनाते हुए श्री कैला पाल दल भूम बाराभूम एवं ढोलका के शासकों और चुआर के आदिवासियों ने योगदान दिया यह विद्रोह रुक रुक-कर 30 वर्षों तक चला।

(v) खासी विद्रोह/Khasi Revolt

भारत के उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में जब अंग्रेजों ने खासी की पहाड़ियों से लेकर सिलहट के बीच सड़क मार्ग बनाना प्रारंभ किया तो स्थानीय लोगों ने इसे ब्रिटिश राज्य का उनकी स्वतंत्रता पर हस्तक्षेप मानते हुए विद्रोह किया और स्थानीय खम्पाटी तथा सिंहपो लोगों ने राजा तीरथ सिंह के नेतृत्व में आंदोलन किया। इस आंदोलन में श्री वीर मानिक और मुकुंद सिंह ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, खासी विद्रोह 1833 ईसवी तक कठोर सैन्य कार्यवाही द्वारा कुचल दिया गया।

(vi) पागलपंथी विद्रोह/Pagalpanthi Revolt

उत्तर बंगाल में कर्म शाह ने एक अर्द्ध धार्मिक संप्रदाय पागलपंती की नींव डाली जमींदार और साहूकारों के अत्याचारों के खिलाफ कर्म शाह के पुत्र टीपू ने स्थानीय गारो आदिवासियों के साथ मिलकर 1825 ईसवी में विद्रोह किया और 1850 ईसवी तक यह विद्रोह एक मजबूत संगठन के अभाव में तथा ब्रिटिश सरकार की दमन आत्मा कार्यवाही के परिणामस्वरूप दबा दिया गया।

(vii) अहोम आदिवासी विद्रोह (1828)/Ahom Tribal Revolt (1828)

ब्रिटिश सरकार ने 1828 ईसवी में असम राज्य के अहोम प्रदेश को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने का प्रयत्न किया। तो अहोम आदिवासियों ने गोमधर कुंवर के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया। उस समय इस विद्रोह को सैन्य कार्यवाही द्वारा दमन पूर्वक रीति से कुचल दिया गया।

(viii) फरायजी विद्रोह (1838)/Farayzi Revolt (1838)

बंगाल के फरीदपुर नामक स्थान पर फरायजी संप्रदाय के अनुमोदन पर शरीयत उल्लाह ने इस विद्रोह का नेतृत्व किया और शरीयत उल्लाह के पुत्र दादू मियां ने अंग्रेजों को बंगाल से बाहर खदेड़ने के लिए तथा जमीदारों के अत्याचारों को समाप्त करने के लिए 1838 ईसवी में इस विद्रोह को किया। यह विद्रोह अठारह सौ सत्तावन (1857) ईसवी तक चला परंतु किसी सक्रिय नेता के अभाव में इस आंदोलन ने दम तोड़ दिया और इस आंदोलन के लोग बहावी आंदोलन से जुड़ गए।

(II) पश्चिम भारत के प्रमुख आदिवासी विद्रोह (Tribal Revolts of Western India)

(i) भील विद्रोह (1818)/Bhil Revolt (1818)

1818 में भील विद्रोह का प्रारंभ हुआ यह भारत के पश्चिमी क्षेत्र में हुआ, इस विद्रोह का मुख्य कारण कृषि से संबंधित परेशानियाँ और अंग्रेजों द्वारा लगाए जाने वाले टैक्स थे। 1825 ईसवी में सेवाराम के नेतृत्व में भीलों ने पुनः विद्रोह किया, आखिरकार 1846 ई. तक भील विद्रोह चलता रहा, भील विद्रोह को भड़काने का आरोप ईस्ट इंडिया कंपनी ने पेशवा बाजीराव द्वितीय और त्र्यंबक जी पर लगा दिया।

(ii) बघेरा विद्रोह/Baghera Revolt

यह विद्रोह ओखा मंडल के बघेरा लोगों द्वारा सन् 1818 से 1819 ई. तक बड़ौदा के गायकवाड राजा द्वारा किया गया। इस विद्रोह का मुख्य कारण जमीदारों द्वारा अंग्रेजों की सहायता से ज्यादा कर वसूली करना था और 1820 ईसवी में एक सैन्य कार्यवाही द्वारा बघेरा विद्रोह का भी दमन कर दिया गया।

(iii) गडकरी विद्रोह (1844)/Gadkari Revolt (1844)

महाराष्ट्र के कोल्हापुर में 1844 ईसवी में गडकरी विद्रोह हुआ, इस विद्रोह का मुख्य कारण गडकरी जाति के सैनिकों का विस्थापन था इन विस्थापित सैनिकों ने अंग्रेजों का विरोध करते हुए भूदरगढ़ और समतनगर के किलों पर हमला कर दिया।

(iv) किट्टूर विद्रोह/Kittur Revolt

किट्टूर के स्थानीय शासक की विधवा रानी चेन्नमा ने किया, क्योंकि अंग्रेजों ने राजा के दत्तक पुत्र को मान्यता नहीं दी। यद्यपि ब्रिटिश सरकार ने दमनात्मक कार्यवाही द्वारा इस विद्रोह को दबा दिया, यह विद्रोह 1824 से 1829 ईसवी तक चला।

(v) कच्छ विद्रोह (1819)/Kucch Revolt

कच्छ के राजा भारमल को अंग्रेजों द्वारा शासन से बेदखल करना कच्छ विद्रोह का मुख्य कारण था। अंग्रेजों ने कच्छ अल्प वयस्क पुत्र को वहाँ का शासक बना दिया और भू–कर में वृद्धि कर दी। इसके में विरोध स्वरूप भारमल और उसके समर्थकों ने 1819 में यह विद्रोह शुरू कर दिया।

(vi) सावंतवादी विद्रोह (1844)/Savant Revolt (1844)

दक्कन में सन् 1844 में मराठा सरदार फोंट सावंत और अन्ना साहब ने मिलकर अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध एक तीव्र आन्दोलन किया। यह आन्दोलन सावंतवादी विद्रोह के नाम से जाना जाता है, ब्रिटिश सरकार ने इस विद्रोह को दमन पूर्वक कुचल दिया।

(III) भारत के अन्य प्रमुख विद्रोह/Other Revolts in India

(i) बहावी आंदोलन (1830)/Wahabi Movement (1830)

1830 में रायबरेली के सैयद अहमद के नेतृत्व में 1807 ईसवी तक यह विद्रोह चला, जो दिल्ली के शाह वली उल्लाह से प्रभावित था। इस विद्रोह का मुख्य उद्देश्य मुस्लिम धर्म में व्याप्त बुराइयों को दूर करके हजरत मोहम्मद से संबंधित मूल इस्लाम धर्म को स्थापित करना था। भारत में इसका मुख्य केंद्र पटना था, पटना के अतिरिक्त यह आंदोलन हैदराबाद बंगाल मद्रास तथा उत्तर प्रदेश मैं चला। सैयद अहमद ने शस्त्र धारण करने के लिए प्रेरित किया और पंजाब में सिखों के राज्य के विरुद्ध जिहाद की घोषणा कर दी, जिहाद का अर्थ होता है धर्म 'युद्ध' 1857 के विद्रोह में बहावी लोगों ने जनता को अंग्रेजों के खिलाफ भड़काया और बाहरी लोगों ने कुछ समय तक पेशावर पर सैयद अहमद के नेतृत्व में कब्जा कर लिया, परंतु सैयद अहमद ही युद्ध में मारे गए और 1860 के बाद अंग्रेजों ने सैन्य कार्यवाही द्वारा बहावी विद्रोह को कुचल दिया, इस विद्रोह के प्रमुख नेता विलायत अली, मौलवी इनायत अली और अब्दुल्ला आदि थे।

(ii) पॉलीगार विद्रोह (1801)/Polygar Revolt (1801)

तमिलनाडु में नई भूमि व्यवस्था लागू करने के बाद ब्रिटिश सरकार के खिलाफ सन् 1801 ईसवी में वहाँ के स्थानीय पालीवालों ने वीपी कट्टा बामन्नान के नेतृत्व में विद्रोह किया गया और यह विद्रोह 1856 ईसवी तक चला।

(iii) फकीर विद्रोह (1776)/Fakir Revolt (1776)

बंगाल में 1776 ईसवीं में फकीर विद्रोह प्रारंभ हुआ इस आंदोलन के नेतृत्वकर्ता चिराग अली शाह तथा मजनू शाह थे। इस विद्रोह में देवी चौधरानी तथा भवानी पाठक ने अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

(iv) पाइक विद्रोह (1817)/Paika Revolt (1817)

मध्य उड़ीसा में पाइक जनजाति द्वारा सन् 1817 ईसवी से 1825 ईसवी तक यह विद्रोह किया इस विद्रोह के नेतृत्वकर्ता बख्शीजग बंधु थे।

(v) सूरत का नमक विद्रोह (1817)/Surat Salt Revolt (1817)

अंग्रेजों द्वारा नमक के कर में 50 पैसे की वृद्धि करने पर इसका विरोध करने के लिए 1844 ईसवी में सूरत के स्थानीय लोगों ने यह विद्रोह किया, इस विद्रोह के परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने बढ़ाए नमक करों को वापस ले लिया।

(vi) नागा विद्रोह (1931)/Naga Revolt (1931)

नागा विद्रोह रोगमइ जादोनांग के नेतृत्व में भारत के पूर्वी राज्य नागालैंड में हुआ, नागा आंदोलन का मुख्य उद्देश्य नागा राज्य की स्थापना करके प्राचीन धर्म को स्थापित करना था। अंग्रेजों ने नेता जादोनांग को गिरफ्तार करके 29 अगस्त, 1931 को फांसी पर लटका दिया इसके बाद में इस आंदोलन की बागडोर एक नागा महिला गैडिनल्यु ने अपने हाथों में ले ली। इन्होंने नागा आंदोलन को गांधीजी के सविनय अवज्ञा आंदोलन से जोड़कर इस आंदोलन को विस्तारित किया गैडिनल्यु ने पूर्व नेता जादोनांग के विचारों से प्रेरित होकर एक होर्का पंथ की, स्थापना की, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् इस महिला को रानी की उपाधि से सम्मानित किया और रानी गैडिनल्यु को कारावास से मुक्त करके स्वतंत्र करवाया।

(vii) खंड एवं सवार विद्रोह (1837)/Khand & Sawar Revolt (1837)

खून दे गम सवार विद्रोह 1837 ईसवी से लेकर 1856 ईसवी तक बंगाल तमिलनाडु तथा मध्य भारत में रहने वाली खोंड तथा सवार नामक जनजातियों द्वारा चलाया गया। इस विद्रोह का मुख्य कारण अंग्रेजी सरकार द्वारा नरबलि पर रोक तथा नए कर लगाना था। खोंड एवं सवार विद्रोह का नेतृत्व श्री चक्र बिसोई नीतियां 1857 में शुरू हुए इस विद्रोह में राधा कृष्ण दंड सेन को अंग्रेजों ने फांसी पर लटका दिया और यह विद्रोह समाप्त हो गया।

(viii) युआन जुआंग विद्रोह (1867)/Yuan Juang Revolt (1867)

युवान विद्रोह 1867 ई. में रन्न नायक के नेतृत्व में क्योंझर में हुआ था, क्योंझर के राजा के राज्य अभिषेक पर युवान सरदारों को उपस्थित होना अनिवार्य था। इस प्रथा को अंग्रेज सरकार द्वारा एकदम से समाप्त कर दिया, जिससे क्योंझर राज्य में ही विद्रोह भड़क गया और अंग्रेजों ने इस विद्रोह को कठोर दंडात्मक कार्यवाही द्वारा कुचल दिया, युवा लोगों ने दूसरा विद्रोह धरनी नायक के नेतृत्व में 1891 ईसवी में किया। काल एवं जुआंग लोगों ने इस आंदोलन में भाग लिया, घड़ी नायक के नेतृत्व में स्थानीय जनता के सहयोग से क्योंझर के राजा को कटक भागना पड़ा और स्थानीय प्रशासन के सहयोग से अंग्रेजों ने यह विद्रोह भी कुचल दिया।

(ix) खोण्डा डोरा विद्रोह (1900)/Khonda Dora Revolt (1900)

खोण्डा डोरा विद्रोह विशाखापट्टनम के डाबर क्षेत्र में सन् उन्नीस सौ में खोण्डा डोरा नामक जनजाति द्वारा प्रारंभ किया गया। इस विद्रोह के नेतृत्वकर्ता कोरा मलैया थे, कोरा मलैया ने स्वयं को पांडवों का अवतार तथा अपने पुत्र को श्री कृष्ण का अवतार बताया। अंग्रेजों ने कठोर और बर्बर सैन्य कार्यवाही से इस विद्रोह को भी कुचल दिया।

(x) कूका विद्रोह (1840)/Kuka Revolt (1840)

भगत जवाहर मल ने पश्चिमी पंजाब में 1840 ईसवी में कूका विद्रोह की शुरुआत की। कूका आंदोलन की आरंभिक प्रवृत्ति धार्मिक थी, परंतु जल्दी ही कूका आंदोलन एक राजनीतिक आंदोलन में परिवर्तित हो गया, इस विद्रोह का उद्देश्य सिख धर्म की बुराइयों को दूर करना था। हजारा को विद्रोह का केंद्र बनाते हुए श्री जवाहर मल ने बालक सिंह और राम सिंह की मदद से कूका विद्रोह किया। भगत जवाहर मल को सीएम साहब के नाम से भी संबोधित किया जाता है। अंग्रेजों ने कठोर सैनिक कार्यवाही कर कूका विद्रोह का दमन कर दिया और राम सिंह को निर्वासित करके रंगून भेज दिया।

(xi) विजय नगर का विद्रोह (1765)/Vijay Nagar Revolt (1765)

1765 ईसवी में ईस्ट इंडिया कंपनी ने राज्य के उत्तरी जिलों पर अधिकार करके कठोर नीति का पालन किया तथा 1794 ईसवी में राजा को सेना भंग करने तथा ₹ 300000 देने के लिए कहा गया जिससे राजा सहमत हुआ और असहमति के परिणामस्वरूप राजा की जागीर को जप्त कर लिया गया। अंग्रेजी सेना से लड़ते हुए राजा के मरने के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी ने राजा के बड़े बेटे को जागीर पुनः वापस कर वहाँ शांति की स्थापना की।

(xii) दीवान बेलाथम्पी का विद्रोह (1805)/Dewan Velathampi Revolt (1805)

त्रावणकोर के राजा से लार्ड वेलेजली ने 1805 ईसवी में संधि की, परंतु राजा ने संधि की शर्तों से असहमति व्यक्त करते हुए कर देने में आनाकानी की, जिससे अंग्रेजों का व्यवहार थोड़ा कठोर हो गया जिसके फलस्वरूप नायर बटालियन के सहयोग से दीवान बेलाथम्पी ने विद्रोह कर दिया, अंग्रेजों ने इस विद्रोह को कठोर कार्यवाही से दबा दिया।

(xiii) खामती विद्रोह (1843)/Khamti Revolt (1843)

अहोम राजा ने म्यांमार की खामती जाति को बसने की इजाजत देने के बाद यह लोग सदिया के आस–पास क्षेत्रों में बस गए, अंग्रेजों ने इनकी रीति–रिवाज एवं राजस्व वसूली को लेकर मतभेद होने पर खामती जाति के लोगों ने रूनू, गुहाई और खवा गुहाई के मजबूत नेतृत्व में विद्रोह कर दिया और सदिया में स्थित अंग्रेजी रेजीमेंट के मेजर वाइट को मौत के घाट उतार दिया, परंतु सरदारों की आपसी फूट का लाभ उढाकर सन् 1843 ईसवी में इस विद्रोह को भी कुचल दिया गया।

(xiv) कोया विद्रोह (1879)/Koya Revolt (1879)

कोया विद्रोह दो चरणों में हुआ। पहले चरण का नेतृत्व टोम्मा सोरा ने किया और द्वितीय चरण में राजन अनंत शैय्यार ने नेतृत्व किया। कोया आन्दोलन गोदावरी के पूर्वी क्षेत्र में रंपा प्रदेश में शुरू हुआ। इस विद्रोह का मुख्य कारण आदिवासियों के जंगल संबंधी प्राकृतिक अधिकारों को अंग्रेजों द्वारा समाप्त कर देना तथा कोया लोगों पर ताड़ी के घरेलू उत्पादन पर कर लगा देना मुख्य कारण था।

राजू रंपा में कोया विद्रोह का कुछ समय तक नेतृत्व किया, द्वितीय चरण में कोया विद्रोह का नेतृत्व अनंत शैय्यार ने किया। अंग्रेजों ने कठोर सैन्य कार्यवाही द्वारा कोया विद्रोह को समाप्त कर दिया।

18. सामाजिक-धार्मिक पुनर्जागरण (Social & Religious Renaissance)

- भारत में 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अनेक समाज सुधार आंदोलनों ने जन्म लिया जो इस प्रकार हैं–

(I) राजा राममोहन राय और ब्रह्म समाज (Raja Ram Mohan Rai & Brahmo Samaj)

- राजा राममोहन राय को **भारतीय पुनर्जागरण का जनक** या **'भारतीय पुनर्जागरण का मसीहा'** के नाम से जाना जाता है। उसका जन्म 22 मई, 1772 को हुगली जिले में राधा नगर में हुआ।
- वे अरबी, अंग्रेजी, ग्रीक, फ्रेंच, जर्मन, फारसी, संस्कृत, लैटिन एवं हिब्रू के ज्ञाता थे।
- 1809 में उन्होंने एकेश्वरवादियों को उपहार **(तुहफात-उल-मुवाहिदीन)** नामक पुस्तक लिखी।
- 1814 में उन्होंने **आत्मीय सभा** का गठन एवं 1816 में वेदांत सोसाइटी की स्थापना की। 1820 में उन्होंने **प्रीसेप्टस ऑफ जीसस** नामक पुस्तक लिखी।
- राजा राममोहन को **'आधुनिक भारत का पिता'** तथा **'भारतीय राष्ट्रवाद का जनक'** माना जाता है।
- राजा राममोहन राय प्रेस स्वतन्त्रता के प्रबल समर्थक थे। इस कारण इन्हें **'भारतीय पत्रकारिता का अग्रदूत'** माना जाता है।
- सुभाषचन्द्र बोस ने राजा राममोहन राय को **'युगदूत की उपाधि'** से सम्बोधित किया।
- उन्होंने **डेविड हेयर** की मदद से **कलकत्ता में हिन्दू कॉलेज** की स्थापना की।
- उन्होंने बंगला भाषा में 1921 ई. को **संवाद कौमुदी** एवं फारसी भाषा में **मिरातुल अखबार** का प्रकाशन किया।
- 20 अगस्त, 1828 को उन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना की।
- मुगल सम्राट **अकबर-II** ने उन्हें राजा की उपाधि दी और अपने दूत के रूप में तत्कालीन ब्रिटिश सम्राट विलियम चतुर्थ के दरबार भेजा। यहीं पर ब्रिस्टल में 27 सितंबर, 1833 को उनकी मृत्यु हो गई।
- उनकी मृत्यु के बाद **देवेन्द्रनाथ टैगोर** ने ब्रह्म समाज की गतिविधियों को जारी रखा और तत्वबोधिनी सभा का गठन किया।
- 1865 में ब्रह्म समाज का विभाजन हुआ – **आदि ब्रह्म समाज** जिसके प्रमुख देवेन्द्रनाथ थे और केशवचन्द्र सेन की देख–रेख और नेतृत्व में **ब्रह्म समाज ऑफ इंडिया** बना।
- 1878 में केशव चन्द्र के ब्रह्म समाज ऑफ इंडिया में पुनः विभाजन हुआ और अलग हुए गुट ने साधारण ब्रह्म समाज की स्थापना कर ली।

(II) प्रार्थना समाज (Pararthna Samaj)

- **केशव चन्द्र सेन** से प्रभावित होकर महाराष्ट्र में **महादेव गोविंद रानाडे** और **आत्माराम पाण्डुरंग** ने 1867 में प्रार्थना समाज की स्थापना की।
- इसका उद्देश्य स्त्री शिक्षा, बाल विवाह, विधवा–पुनर्विवाह, जाति–पाँति का विरोध, स्त्रियों व पुरुषों की विवाह आयु बढ़ाना।
- रानाडे को **पश्चिम भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अग्रदूत** माना महादेव गोविन्द रानाडे को महाराष्ट्र का सुकरात कहा जाता है।
- महादेव रानाडे ने भारतीय शिक्षा के प्रसार और अज्ञानता को समाप्त करने के मूल उद्देश्य से 1884 ई. में **'डक्कन एजूकेशन सोसाइटी'** की स्थापना की।

(III) वेद समाज (Ved Samaj)

- केशवचन्द्र की मद्रास यात्रा से प्रभावित होकर **के. श्रीधरलू नायडू** ने मद्रास में वेद समाज की स्थापना की। इस संस्था ने ब्रह्म समाज के मूल सिद्धान्तों को अपनाया था।
- इसे **'दक्षिण भारत का ब्रह्म समाज'** कहा जाता है।

(IV) आर्य समाज (Arya Samaj)

- आर्य समाज की स्थापना 10 अप्रैल, 1875 को बंबई में माणिका चन्द्र की वाटिका में **स्वामी दयानन्द सरस्वती** ने की। 1877 में आर्य समाज का मुख्यालय **लाहौर** में बना।
- दयानन्द सरस्वती का जन्म 1824 में गुजरात के काठियावाड़ में हुआ। उनके बचपन का नाम **'मूलशंकर'** था।
- उनके प्रथम गुरु **दण्डी स्वामी पूर्णानन्द** थे, जिन्होंने मूलशंकर का नाम दयानन्द सरस्वती रखा।
- 1874 में मथुरा में विरजानन्द स्वामी से मिले।
- दयानन्द ने 1874 में हिन्दी भाषा में **'सत्यार्थ प्रकाश'** की रचना की जिसे **'आर्य समाज की बाइबल'** कहा जाता है।
- उन्होंने **'वेदों की ओर लौटो'** और भारत, **भारतवासियों के लिए है** जैसे नारे दिए।
- उन्हें **'भारत का मार्टिन लूथर'** भी कहा जाता है।
- उन्होंने हिन्दू धर्म के अंतर्गत शुद्धि आंदोलन चलाया।
- दयानन्द सरस्वती ने **'स्वराज'** शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया।
- आर्य समाज के अंतर्गत पाश्चात्य शिक्षा के विरोधियों ने स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम एवं मुंशीराम के नेतृत्व में 1902 में **कांगड़ी के पास गुरुकुल** की स्थापना की। पाश्चात्य शिक्षा के समर्थकों ने हंसराज और लाला लाजपतराय के नेतृत्व में लाहौर में 1889 में **दयानन्द एंग्लो वैदिक (DAV)** स्कूल बनवाया
- दयानन्द सरस्वती की मृत्यु 30 अक्टूबर, 1883 को अजमेर में हुई।
- वेलेन्टाइन शिरोल ने अपनी पुस्तक **'इण्डियन अनरेस्ट'** में **'आर्य समाज को भारतीय अशांति का जनक'** बताया।
- ऐनी बेसेन्ट ने 1898 में बनारस में सेंट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की जो बाद में 1916 में **मदनमोहन मालवीय** के प्रयासों से **बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय** बना।

(V) यंग बंगाल आंदोलन (Young Bengal Movement

- पाश्चात्य विचारधारा के समर्थक **हेनरी विवियन डेरेजियो** ने 1826 में यंग बंग आंदोलन की स्थापना की।
- डेरेजियो को **आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि** कहा जाता है।

(VI) रामकृष्ण मिशन (Ramkrishna Mission)

- रामकृष्ण के बचपन का नाम **गदाधर चट्टोपाध्याय** था और वे कलकत्ता के दक्षिणेश्वर काली मंदिर के पुजारी थे।
- स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण के शिष्य थे। उनका जन्म 1863 में कलकत्ता में हुआ था। उनका मूल **नाम नरेन्द्र नाथ दत्त** था। विवेकानन्द ने 1897 में कलकत्ता में **वेल्लूर** नामक स्थान पर **रामकृष्ण मिशन** की स्थापना की।
- विवेकानन्द ने 11 सितंबर, 1893 में अमेरिका के **शिकागो** के **सेंट कोलंबस** हॉल में आयोजित प्रथम विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन में जाने से पहले, महाराज खेतड़ी के सुझाव पर उन्होंने अपना नाम नरेन्द्रनाथ से बदलकर स्वामी विवेकानन्द रखा। वे बंबई से पेनिनसुलर जहाज से रवाना हुए। उन्हें मिसेज हाल नामक महिला के प्रयत्नों से सम्मेलन में प्रवेश मिला।
- आयरिश महिला मार्गेट नोबेल, विवेकानन्द की शिष्या बनीं, जिन्हें भारत में सिस्टर निवेदिता ने स्वामी विवेकानन्द को योद्धा संन्यासी का नाम दिया। सिस्टर निवेदिता के नाम से जानते है।
- **सुभाष चन्द्र बोस** ने स्वामी जी के बारे में कहा, ''जहाँ तक बंगाल का सम्बन्ध है हम **विवेकानन्द** को आधुनिक राष्ट्रीय आन्दोलन का आध्यात्मिक पिता कह सकते हैं।

(VII) थियोसोफिकल सोसाइटी (Theosophical Society)

- **मैडम ब्लावत्सकी** और **कर्नल ऑल्काट** ने 1875 में **न्यूयार्क अमेरिका** में थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना की थी।
- भारत आकर इसका **आड्यार (मद्रास)** में इसका अंतर्राष्ट्रीय कार्यालय 1882 में खोला गया।
- ऐनी बेसेन्ट 1888 में इस सोसाइटी की सदस्य बनीं और 1907 में **थियोसोफिकल सोसाइटी** की अध्यक्ष बनीं।

(VIII) अलीगढ़ आंदोलन (Aligarh Movement)

- **सर सैयद अहमद खाँ** ने अलीगढ़ आंदोलन का नेतृत्व किया। उन्होंने पीरी मुरादी प्रथा को खत्म करने की वकालत की।
- सैयद अहमद खाँ ने **तहजीब–उल–अखलाक** नामक पत्रिका द्वारा अपने विचारों को व्यक्त किया और उसका प्रसार किया।
- वे पाश्चात्य शिक्षा के समर्थक थे।
- सैयद अहमद ने 1864 में कलकत्ता में **साइंटीफिक सोसाइटी** और 1875 में **अलीगढ़ मुस्लिम एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज** की स्थापना की जो 1920 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय बना।
- डब्ल्यू. हण्टर की 1870 ई. में प्रकाशित पुस्तक **'इण्डियन मुसलमान'** में ब्रिटिश सरकार को सलाह दी थी कि वह मुसलमानों को अपनी तरफ मिलाएँ।

(IX) देवबन्द आंदोलन (Deoband Movement

- देवबन्द आंदोलन की स्थापना **मुहम्मद कासिम ननौववी** एवं **रशीद अहमद गंगोही** ने 1867 में उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के देवबन्द नामक स्थान में की।
- इस आंदोलन का प्रमुख उद्देश्य था – कुरान एवं हदीस की शिक्षाओं का मुसलमानों में प्रसार करते हुए विदेशी शासकों के विरोध में बगावत जारी रखना।

- दार–ए–उलूम की स्थापना **मौलाना हुसैन अहमद** ने की थी।

(X) अहमदिया आंदोलन (Ahmadia Movement)

- मुसलमानों में सुधार लाने के लिए इसकी स्थापना 1889 में **मिर्जा गुलाम अहमद** ने की थी।
- इस आंदोलन की शुरुआत गुरुदासपुर जिले के कादियाना नामक स्थान से हुई, इसलिए इसे कादियानी आंदोलन के नाम से भी जानते हैं।

प्रमुख सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन (Famous Socio-Religious Reform Movements)

आंदोलन/संगठन	वर्ष	स्थान	संस्थापक	विविध
धर्म सभा	1830	बंगाल	राधाकान्त देव	
राधा स्वामी सत्संग	1861	आगरा (दयालबाग)	शिव दयाल साहेब (तुलसीराम)	
भारतीय सुधार संघ	1870	कलकत्ता	केशव चन्द्र सेन	
भारतीय सेवक समाज	1905	बंबई	गोपाल कृष्ण गोखले	
रहनुमाई मज्दयासन सभा	1851	बंबई	नौरोजी, फुरदोनजी, एस.एस. बंगाली, जे बी–वाचा	रास्ट गोफ्तर नामक पत्रिका का प्रकाशन
देव समाज	1887	लाहौर	शिवनारायण अग्निहोत्री	
सेवा सदन	1885	बंबई	बहरामजी मालाबारी	
बहिष्कृत हितकारिणी सभा	1924	बंबई	बी.आर. अम्बेडकर	
मद्रास हिन्दू एसोसिएशन	1892	मद्रास	वीरेशालिंगन पान्तलु	
सत्य शोधक समाज	1873	पुणे	ज्योतिबा फुले	फूले द्वारा लिखित पुस्तकें– गुलामगिरि, सार्वजनिक सत्यधर्म
जस्टिस पार्टी	1916-17	मद्रास	सी.एन. मुदालियर, टी.एम. नायर, पी. टी. चेट्टी	
हरिजन सेवक संघ	1932	पुणे	महात्मा गांधी	हरिजन नामक पत्रिका का प्रकाशन
सेल्फ रिसपेक्ट मूवमेंट	1925	मद्रास	ई.वी. रामास्वामी	
वायकोम सत्याग्रह	1924	केरल	टी.के. माधवन, पेरियार रामास्वामी, एन. कुमारन	
गुरुवायूर सत्याग्रह	1931	केरल	के. पिल्लई, ए. के. गोपालन, बी. सुब्रह्मण्यम	
डिप्रेस्ड क्लास मिशन सोसाइटी	1931	बंबई	बी.आर. शिंदे	

(XI) सती प्रथा प्रतिबंध एवं एक्ट (Sati System Aboulition & Act)

लॉर्ड विलियम बेंटिंक के समय 1829 में **नियम XVII (17)** के तहत सती प्रथा को प्रतिबंधित किया गया।

(i) विधवा पुनर्विवाह : 1856 के विधवा पुनर्विवाह अधिनियम के नियम XV द्वारा विवाह को वैध करार देते हुए विवाहित महिला से पैदा होने वाले बच्चों को वैध माना गया। इसके लागू होने के समय भारत का गवर्नर लॉर्ड कैनिंग था।

- ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह की स्थिति में सुधार लाने के लिए बहुत कठिन प्रयास किए।
- डी. के. कर्वे ने पूना में **विधवा आश्रम** की स्थापना की।
- विष्णु शास्त्री पंडित ने 1850 में **विडो रीमैरिज एसोसिएशन** की स्थापना की।

(ii) शिशु वध प्रतिबंध : गवर्नर जनरल जान शोर ने 1785 के बंगाल नियम XXI एवं 1802 के नियम 45 द्वारा इस प्रथा को समाप्त करने का प्रयास किया।

(A) नेटिव मैरिज एक्ट : 1872 के इस एक्ट द्वारा अंतर्जातीय विवाह को मान्यता प्रदान की गई। यह गवर्नर जनरल नार्थबुक के समय पारित हुआ।

(B) एज ऑफ कंसेंट एक्ट, 1891 : इस अधिनियम द्वारा 12 वर्ष से कम आयु की बालिकाओं के विवाह को प्रतिबंधित किया गया। यह लैंसडाउन के समय पारित हुआ।

यह अधिनियम **बहराम जी मालाबारी** के प्रयासों से पारित किया गया।

(C) शारदा एक्ट : 1929 में हरविलास शारदा के प्रयासों से बाल विवाह निषेध कानून (शारदा एक्ट) बना। इसमें लड़कों के विवाह की उम्र 18 वर्ष एवं **लड़कियों की 14 वर्ष** निर्धारित की गई। यह लार्ड इरविन के कार्यकाल में पारित हुआ।

(iii) नर–बलि प्रतिबंध : नर बलि प्रथा 1844 - 45 में **हार्डिंग प्रथम** के समय में समाप्त हुई । इस प्रथा को समाप्त करने के लिए कैम्पबेल की नियुक्ति की गई थी।

(iv) दास प्रथा प्रतिबंध : दास प्रथा पर पूर्ण प्रतिबंध 1833 चार्टर एक्ट द्वारा लगाया गया। एलनबरो ने **1843** में **5वें अधिनियम** द्वारा पूरे भारत में दासता समाप्त कर दी।

19. ब्रिटिश काल में भारत में शिक्षा का विकास (Educational Development in British Period)

- भारत में आधुनिक शिक्षा का जन्मदाता **चार्ल्स ग्रांट** को कहा जाता है।
- शिक्षा के विकास के लिए समय–समय पर अनेक आयोग गठित किए गये।

(I) चार्ल्स वुड का डिस्पैच (1854) (Wood's Despatch)\

- इसका गठन लॉर्ड डलहौजी के कार्यकाल में हुआ था।
- इसे **भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा** भी कहा जाता है।
- इसके प्रमुख प्रावधानों में पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार, उच्च शिक्षा के लिए अंग्रेजी माध्यम और प्राथमिक शिक्षा के लिए जनभाषा तथा **मद्रास, कलकत्ता** और **मुंबई** में तीन विश्वविद्यालयों की स्थापना शामिल थी।

(II) हंटर आयोग (1882-83) (Hunter Commission)

- इसका गठन लॉर्ड रिपन के कार्यकाल में किया गया।
- हंटर कमीशन ने **प्राथमिक शिक्षा** के प्रसार पर बल दिया।

(III) रैले कमीशन (1902) (Raleigh Commission)

- वायसराय लॉर्ड कर्जन के कार्यकाल में इसका गठन किया गया।
- रैले की अध्यक्षता में **विश्वविद्यालय आयोग** की स्थापना हुई।
- 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित हुआ।

(IV) सैडलर आयोग (1917-19) (Saddler Commission)

इसने बारह वर्षीय स्कूली शिक्षा और माध्यमिक शिक्षा के बाद स्नातक की उपाधि के लिए उचित व्यवस्थाओं का प्रावधान किया।

(V) हॉर्टोग समिति (1929) (Hartog Committee)

इसका प्रमुख उद्देश्य था, प्राथमिक शिक्षा में सुधार एवं केवल प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा का प्रावधान।

(VI) वर्धा योजना (1937) (Vardha Plan)

गाँधीजी द्वारा प्रस्तुत इस योजना में सात से चौदह वर्ष के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की।

(VII) सार्जेण्ट योजना (1944) (Sergeant Plan)

इसके प्रमुख प्रावधान थे – प्राथमिक विद्यालय एवं हाईस्कूल की स्थापना, 6 से 11 वर्ष के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा आदि।

20. भारत में समाचार पत्रों का विकास (Development of News Papers in India)

- भारत में अंग्रेजी भाषा में प्रथम समाचार पत्र **बंगाल गजट** था जिसे 1780 में **जेम्स आगस्टस हिक्की** ने प्रकाशित किया।
- भारत में राजा राममोहन राय ने राष्ट्रीय प्रेस की स्थापना की और **संवाद कौमुदी, चंद्रिका** और **मिरात–उल–अखबार** का प्रकाशन किया। इन्हें **भारतीय पत्रकारिता का अग्रदूत** कहा जाता है।
- मिरात–उल–अखबार फारसी भाषा का पहला समाचार पत्र था, जग्म–ए–जहाँजुमा, उर्दू का, बंबई समाचार, गुजराती भाषा का प्रथम अखबार था।
- हिन्दी में प्रकाशित होने वाला प्रथम अखबार 1826 में कानपुर से **जुगल किशोर** और **मन्नू ठाकुर** द्वारा संपादित **दण्ड मार्तण्ड** था।
- किस्ट्रोदास पाल जो **हिन्दू पैट्रियाट** के संरक्षक थे, उन्हें भारतीय **पत्रकारिता का राजकुमार** कहा जाता है।
- तिलक ने अंग्रेजी में **मराठा** एवं मराठी में **केसरी** का प्रकाशन किया।
- बंगाली भाषा का पहला समाचार पत्र **दिग्दर्शन** था।
- मालवीय, मकरन्द उपनाम से कविताएँ लिखते थे।
- चार्ल्स मेटकॉफ को **समाचार पत्रों का मुक्तिदाता** कहा जाता है।
- **प्रेस नियंत्रण अधिनियम, 1799 :** वेलेजली द्वारा लाये गये इस अधिनियम ने सभी समाचार पत्रों पर नियंत्रण लगाते हुए संपादक, मुद्रक तथा मालिक का नाम अखबार में देना अनिवार्य कर दिया। **1818** में हेस्टिंग ने इस अधिनियम को समाप्त कर दिया।
- **लाइसेंस रेग्युलेशन एक्ट :** (एडम्स के कार्यकाल में) मुद्रक तथा प्रकाशन को मुद्रणालय स्थापित करने से पूर्व लाइसेंस लेना अनिवार्य था।
- **लिबरेशन ऑफ दि इंडियन प्रेस अधिनियम, 1835 (चार्ल्स मेटकाफ) :** यह एक उदार अधिनियम था।
- **वर्नाकुलर प्रेस एक्ट (लॉर्ड लिटन) :** इसे गैगिंग एक्ट (मुँह बाद करने वाला) भी कहते हैं। इसमें मुद्रणालयों की जमानत को मजिस्ट्रेट रद्द कर सकता था। यह प्रेस एक्ट मुख्यतयः **'सोमप्रकाश'** नामक समाचार पत्र को दण्डित करने के लिए लाया गया था।
- **न्यूज पेपर एक्ट, 1908 (लॉर्ड कर्जन) :** जो समाचार पत्र हिंसा या हत्या को बढ़ावा देते हैं, उनकी संपत्ति जब्त की जा सकती थी।
- **इंडियन प्रेस इमरजेंसी एक्ट, 1931 (लॉर्ड इरविन) :** इसका उद्देश्य **1910** के प्रेस सम्बन्धी नियम को पुनः लागू करना था।

भारत में प्रकाशित प्रमुख समाचार पत्र
(Important News Papers Published in India)

समाचार पत्र	संस्थापक	वर्ष	स्थान	भाषा
बंगाल गजट	जे.ए. हिक्की	1780	कलकत्ता	अंग्रेजी
समाचार दर्पण	मार्शमेन	1818	कलकत्ता	बंगाली
दिग्दर्शन	मार्शमेन	1818	कलकत्ता	बंगाली
संवाद कौमुदी	राजा राम मोहन राय	1821	कलकत्ता	बंगाली
बाम्बे समाचार	फर्दून जी	1822	बंबई	गुजराती
रस्त गोफतर	दादा भाई नौरोजी	1851	बंबई	गुजराती
सत्यप्रकाश	कर्सनदासभूल जी	1852	अहमदाबाद	गुजराती
बंबई दर्पण	बालशास्त्री जाम्बेकर	1832	बंबई	मराठी
इंडियन मिरर	देवेन्द्रनाथ टैगोर, मनमोहन घोष	1861	कलकत्ता	अंग्रेजी
इन्दु प्रकाश	रानाडे	1861	बंबई	मराठी
नेटिव ओपिनियन	वी.एन. मांगलिक	1864	बंबई	अंग्रेजी
अमृत बाजार पत्रिका	मोतीलाल घोष	1868	कलकत्ता	बंगाली, अंग्रेजी
सोम प्रकाश	ईश्वरचंद विद्यासागर	1859	कलकत्ता	बंगाली
हिन्दू	वी. राघवाचारी	1878	मद्रास	अंग्रेजी
केसरी, मराठा	तिलक	1881	बंबई	मराठी, अंग्रेजी
बंगाली	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	1879	कलकत्ता	अंग्रेजी
कवि वचन सुधा	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	1867	उत्तर प्रदेश	हिन्दी
यंग इंडिया	गाँधी जी	1919	अहमदाबाद	अंग्रेजी
नव जीवन	गाँधी जी	1919	अहमदाबाद	हिन्दी, गुजराती
हरिजन	गाँधी जी	1933	पूना	हिन्दी, गुजराती
हिन्दू पैट्रिया	हरिश्चन्द्र मुखर्जी	1855	—	अंग्रेजी
पायोनियर	—	1865	इलाहाबाद	अंग्रेजी
बंग दर्शन	बंकिमचन्द्र चटर्जी	1873	कलकत्ता	बंगाली
ट्रिब्यून	दयाल सिंह मजीठिया	1877	लाहौर	अंग्रेजी
सुधारक	गोपाल कृष्ण आगरकर	1888	बंबई	मराठी
स्टेट्समैन	रॉबर्ट नाइट	1878	कलकत्ता	अंग्रेजी
इंडियन ओपिनियन	गाँधीजी	1903	द. अफ्रीका	अंग्रेजी
इंडियन सोशियोलॉजिस्ट	श्यामजी कृष्ण वर्मा	1905	लंदन	अंग्रेजी
वन्दे मातरम	अरविन्द घोष	1906	कलकत्ता	अंग्रेजी
युगान्तर	बारीन्द्र घोष, भूपेन्द्र घोष	1906	कलकत्ता	बंगाली
वन्दे मातरम	हरदयाल, श्यामजी वर्मा	1909	पेरिस	अंग्रेजी
गदर	लाला हरदयाल	1913	सेन फ्रांस्सिको	अंग्रेजी
बाम्बे क्रानिकल	फिरोजशाह मेहता	1913	बंबई	अंग्रेजी

समाचार पत्र	संस्थापक	वर्ष	स्थान	भाषा
कामनव्हील	ऐनी बेसेंट	1914	बंबई	अंग्रेजी
न्यू इंडिया	ऐनी बेसेंट	1914	बंबई	अंग्रेजी
हिन्द केसरी	गंगा प्रसाद गुप्त	1914	काशी	हिन्दी
सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया	श्रीनिवास शास्त्री	1918	मद्रास	अंग्रेजी
हिन्दुस्तान टाइम्स	के.एन. पणिक्कर	1922	बंबई	अंग्रेजी
सर्चलाइट	सच्चिदानन्द सिन्हा	1818	—	अंग्रेजी
स्वदेश मित्र	जी.एस. अय्यर	—	मद्रास	—

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध महत्वपूर्ण आंदोलन/विद्रोह
(Important Movements/Revolts During British Rule)

आंदोलन/विद्रोह	नेतृत्व	समय	प्रभावित क्षेत्र
संयासी विद्रोह	केना सरकार	1760–1800	बंगाल बिहार
फकीर विद्रोह	मजनूशाह, चिराग अली	1776–77	बंगाल
पागलपंथी विद्रोह	करमशाह, टीपू मीर	1813–31	बंगाल
फरैजी आंदोलन	मो मोहसीन (दादू मीर)	1820-58	बंगाल
कोल विद्रोह	बुद्धोभगत	1831-32	छोटानागपुर
कूका आंदोलन	भगवत जवाहरमल	1860-70	पंजाब
वेलुटंपी विद्रोह	मेलुथम्पी	1808-09	त्रावणकोर (केरल)
संथाल विद्रोह	सिद्ध–कान्हू	1855-56	बिहार, बंगाल
मुण्डा विद्रोह	बिरसा मुण्डा	1893-1900	झारखंड (बिहार)
खासी विद्रोह	तीरथ सिंह	1828-33	मेघालय
रम्पा विद्रोह	राजू रम्पा, अल्लूरी सीताराम राजू	1880	गोदावरी जिला (आन्ध्र प्रदेश)
मोपला विद्रोह	अली मुसलियार	1836-54	मालाबार (केरल)
नागा आंदोलन	रानी गैडनलियु	1826-1866	मणिपुर
नील आंदोलन	दिगम्बर	1859-60	नादिया, बंगाल
ताना भगत आंदोलन	जतरा भगत	1914	बिहार
रामोसी विद्रोह	वासुदेव बलवंत फड़के	1877-87	महाराष्ट्र
वहाबी आंदोलन	अब्दुल वहाब	1820-70	बिहार, उत्तर प्रदेश
पाबना विद्रोह	केशवचन्द्र राय, शम्भूनाथ पाल	1873-76	बंगाल
भील विद्रोह	सेवाराम	1825-31	पश्चिमी घाट
चेरो आंदोलन	भूषण सिंह	1800-1802	बिहार
पायकों का विद्रोह	जगबन्धु	1817-1818	उड़ीसा
अहोम विद्रोह	गदाधर, कुमार रूपचन्द	1828	असम
तेभागा आंदोलन	कम्पाराम सिंह	1946	बंगाल
तेलंगाना विद्रोह	—	1946-51	आन्ध्र प्रदेश

प्रमुख कमीशन
(Important Commission)

कमीशन	समय	क्षेत्र	गवर्नर जनरल/ वायसराय	कमीशन	समय	क्षेत्र	गवर्नर जनरल/ वायसराय
हंटर कमीशन	1802	शिक्षा	लॉर्ड रिपन	रेले कमीशन	1902	शिक्षा	कर्जन
सैडलर कमीशन	1917	शिक्षा	चेम्सफोर्ड	हार्टोग कमीशन	1929	शिक्षा	इरविन
एचिंसन कमीशन	1886	लोक सेवा	डफरिन	ली कमीशन	1923	लोक सेवा	रीडिंग
हरशेल कमीशन	1893	मुद्रा	लैन्सडाउन	स्मिथ कमीशन	1919	मुद्रा	चेम्सफोर्ड
हिल्टन यंग कमीशन	1925	मुद्रा	चेम्सफोर्ड	सप्रू कमीशन	1934	बेरोजगारी	विलिंगटन
व्हिटले कमीशन	1929	श्रम	—	मैकलागन कमीशन	1914	सहकारी	हार्डिंग्ज
बटलर कमीशन	1927	देशी राज्यों के साथ सम्बन्ध	इरविन	फ्रेजर कमीशन पिल कमीशन	1901-02 1936	पुलिस सुधार संघीय ढाँचा	कर्जन विलिंग्टन
स्ट्रैची कमीशन	1878-80	अकाल से सम्बन्धित	—	फॉसेट कमीशन	से सम्बन्धित	चुंगी तथा वेतन	

21. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न चरण
(Various Stages of Indian National Movement)

- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को निम्नलिखित तीन चरणों में बाँटा जा सकता है। जैसे—(I) प्रथम चरण (1885–1905), (II) द्वितीय चरण (1905–1919), (III) तृतीय चरण (1919–1947)

(I) राष्ट्रवादी आंदोलन का प्रथम चरण (1885–1905) (First Stage of Nationalist Movement)

(i) भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना (1885) (Establishment of Indian National Congress)

- भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना 1885 में एक अवकाश प्राप्त अंग्रेज अधिकारी **एलन ऑक्टेवियन ह्यूम** द्वारा की गई थी।
- भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना के पीछे ए. ओ. ह्यूम का मुख्य उद्देश्य एक ऐसी **सुरक्षा कपाट** (Safety Valve) की व्यवस्था करना था, जिसके माध्यम से शिक्षित भारतीयों का बढ़ता हुआ असन्तोष बाहर आने लगा था।
- काँग्रेस की स्थापना **लॉर्ड डफरिन** के दिमाग की उपज थी।
- ह्यूम ने 1884 में भारतीय राष्ट्रीय संघ की स्थापना की थी, जिसका प्रथम अधिवेशन 28 दिसंबर, 1885 बंबई स्थित **ग्वालिया टैंक मैदान** के **गोकुलदास तेजपाल संस्कृत विद्यालय** में आयोजित किया गया था। इस अधिवेशन में कुल 72 सदस्यों ने हिस्सा लिया था। इसी सम्मेलन में दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर भारतीय राष्ट्रीय संघ का नाम बदलकर भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस रखा गया।
- **व्योमेश चंद्र बनर्जी** भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के **प्रथम अध्यक्ष** थे।
- सुरेन्द्र नाथ बनर्जी के संगठन नेशनल कांफ्रेंस का विलय काँग्रेस में 1886 में हुआ।
- इस समय भारत का वायसराय **लॉर्ड डफरिन** था एवं ब्रिटेन के प्रधानमंत्री **ग्लैडस्टोन** थे।

(ii) काँग्रेस से जुड़े विवादित वक्तव्य (Controversial Statements Regarding Congress)

- **कर्जन :** काँग्रेस लड़खड़ाकर गिर रही है, भारत में रहते हुए मेरी इच्छा है कि 'मैं उसे शांतिपूर्वक मरने में मदद कर सकूँ'।
- **बंकिम चन्द्र चटर्जी :** काँग्रेस के लोग पद के भूखे हैं।
- **तिलक :** यदि वर्ष में एक बार मेढक की तरह टर्राएँगे, तो कुछ नहीं मिलेगा।
- **लाला लाजपत राय :** काँग्रेस लॉर्ड डफरिन के दिमाग की उपज है।
- **अश्विनी कुमार दत्त :** काँग्रेस के सम्मेलन तीन दिन का तमाशा है।
- **विपिन चन्द्र पाल :** कांग्रेस याचना करने वाली संस्था है।

  महात्मा गाँधी ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस को समाप्त करने का सुझाव दिया था।

(iii) अन्य तथ्य (Other Facts)

- काँग्रेस ने **ए. ओ. ह्यूम** की मृत्यु के पश्चात्, 1912 में उन्हें **काँग्रेस का जनक** घोषित किया।
- नरमपंथी नेता दादाभाई नौरोजी को **'ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया'** कहा जाता था।
  - **काँग्रेस के प्रथम अध्यक्ष :** डब्लू. सी. बनर्जी (मुंबई, 1885)।

- **काँग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष :** बदरुद्दीन तैय्यबजी (मद्रास, 1887)।
- **काँग्रेस के प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष :** जार्जयूल (इलाहाबाद, 1888)।
- **प्रथम महिला जिसने कांग्रेस अधिवेशन को संबोधित किया :** कादम्बिनी गांगुली (कलकत्ता 1890)।
- **काँग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष :** ऐनी बेसेन्ट (कलकत्ता, 1917)।
- **सबसे ज्यादा समय तक अध्यक्ष :** मौलाना अबुल कलाम आजाद (1940–45)।
- **भारत की स्वतंत्रता के समय अध्यक्ष :** जे. बी. कृपलानी।
- **अंग्रेज अध्यक्ष :** जॉर्ज यूल (इलाहाबाद, 1888), विलियम वेडरवर्न (बंबई, 1889, इलाहाबाद, 1910), अल्फ्रेड वेब (मद्रास, 1894), हेनरी कॉटन (बंबई, 1904) ।

(iv) काँग्रेस के प्रमुख अधिवेशन (Main Sessions of Congress)

(A) बनारस अधिवेशन (1905) (Banaras Session)

अध्यक्ष : गोपालकृष्ण गोखले।

- कर्जन की बंगाल विभाजन की नीति का विरोध हुआ और लाल लाजपत राय ने पहली बार सत्याग्रह अपनाने का विचार रखा।

कांग्रेस अधिवेशन कब और कहाँ
(Congress Session When & Where)

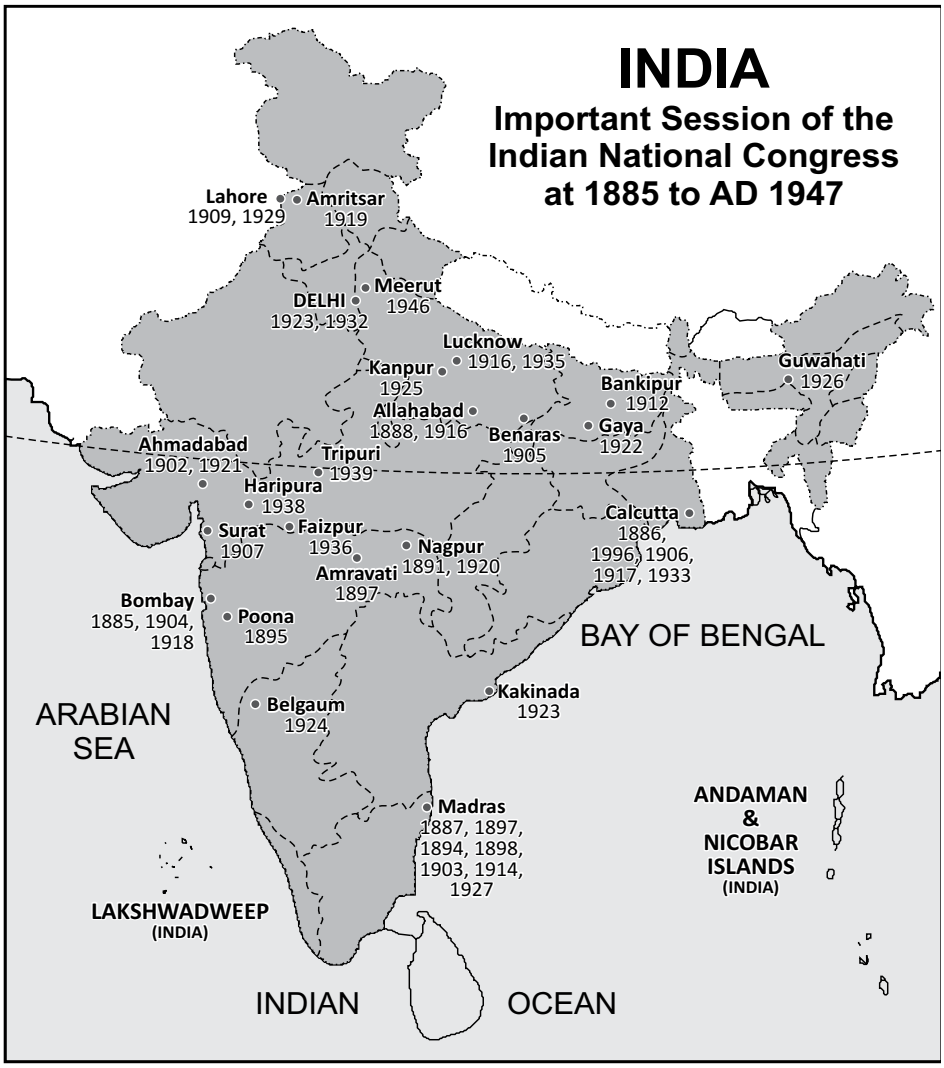

(B) कलकत्ता अधिवेशन (1906) (Calcutta Session)

अध्यक्ष : दादा भाई नौरोजी।

- नरमपंथी एवं गरमपंथी में मतभेद उभरा। नरमपंथी रासबिहारी घोष को एवं गरमपंथी लाला लाजपत राय को काँग्रेस का अध्यक्ष बनाना चाहते थे, लेकिन अंत में दादाभाई नौरोजी को अध्यक्ष बनाया गया।

(C) सूरत अधिवेशन (1907) (Surat Session)

- इस अधिवेशन में रासबिहारी घोष को अध्यक्ष बनाया गया।
- मतभेदों के कारण कांग्रेस में विभाजन हो गया।

(D) लखनऊ अधिवेशन (1916) (Lucknow Session)

अध्यक्ष : अम्बिका चरण मजूमदार।

- ऐनी बेसेन्ट एवं तिलक के प्रयासों से काँग्रेस पुनः एकीकृत हुई।
- काँग्रेस एवं मुस्लिम लीग के बीच समझौता हुआ।

(E) लाहौर अधिवेशन (1929) (Lahore Session)

अध्यक्ष : जवाहरलाल नेहरू।

- पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पारित किया गया।
- लाहौर में रावी के तट पर, 31 दिसंबर, 1929 की रात्रि को झंडा फहराया गया।

(F) कराची अधिवेशन (1931) (Karachi Session)

अध्यक्ष : वल्लभभाई पटेल।

- गाँधी–इरविन समझौता।
- गाँधी ने कहा था—'गाँधी मर सकता है, परन्तु गाँधीवाद नहीं।

(G) त्रिपुरी अधिवेशन (1939) (Tripuri Session)

अध्यक्ष : पहले सुभाष चन्द्र बोस, फिर राजेन्द्र प्रसाद।

- महात्मा गाँधी और सुभाष चंद्र बोस के बीच बिवाद गहरा गया।
- सुभाष चन्द्र बोस ने इस्तीफा देकर 1939 में फारवर्ड ब्लाक की स्थापना की।

काँग्रेस के प्रमुख अधिवेशन
(Important Sessions of Congress)

अधिवेशन	वर्ष	अध्यक्ष	स्थान	टिप्पणी
पहला	1885	डब्ल्यू.सी. बनर्जी	बंबई	72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया
दूसरा	1886	दादाभाई नौरोजी	कलकत्ता	डफरिन द्वारा उद्यान भोजन दिया गया
तीसरा	1887	बदरुद्दीन तैय्यबजी	मद्रास	प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष
चौथा	1888	जॉर्ज यूले	इलाहाबाद	प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष
पाँचवाँ	1889	विलियम वेडरबर्न	बंबई	—
छठवाँ	1890	फिरोजशाह मेहता	कलकत्ता	—
सातवाँ	1891	पी. आनन्द चार्लू	नागपुर	—
आठवाँ	1892	डब्ल्यू.सी. बनर्जी	इलाहाबाद	—
नवाँ	1893	दादाभाई नौरोजी	लाहौर	—
दसवाँ	1894	अल्फ्रेड वेब	मद्रास	—
ग्यारहवाँ	1895	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	पूना	—
बारहवाँ	1896	रहमतुल्ला सयानी	कलकत्ता	पहली बार वन्दे मातरम् गाया गया
तेरहवाँ	1897	सी. शंकरन नायर	अमरावती	—
चौदहवाँ	1898	आनन्द मोहन बोस	मद्रास	—
पन्द्रहवाँ	1899	रमेश चन्द्र दत्त	लखनऊ	—
सोलहवाँ	1900	एन.जी. चन्द्रावरकर	लाहौर	—
सत्रहवाँ	1901	दीनशा ई वाचा	कलकत्ता	गाँधी जी ने पहली बार भाग लिया
अठारहवाँ	1902	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	अहमदाबाद	—
उन्नीसवाँ	1903	लाल मोहन घोष	मद्रास	—
बीसवाँ	1904	सर हेनरी काटन	बंबई	—
इक्कीसवाँ	1905	गोपालकृष्ण गोखले	वाराणसी	—
बाइसवाँ	1906	दादाभाई नौरोजी	कलकत्ता	काँग्रेस के मंच पर स्वराज शब्द का पहली बार प्रयोग
तेइसवाँ	1907	रासबिहारी बोस	सूरत (स्थगित)	कांग्रेस का प्रथम विभाजन
तेइसवाँ	1908	रासबिहारी बोस	मद्रास	1907 का अधिवेशन, काँग्रेस अधिवेशनों में नहीं गिना जाता ।

अधिवेशन	वर्ष	अध्यक्ष	स्थान	टिप्पणी
चौबीसवाँ	1909	मदन मोहन मालवीय	लाहौर	–
पच्चीसवाँ	1910	विलियन वेडरबर्न	इलाहाबाद	–
छब्बीसवाँ	1911	बिशन नारायणधर	कलकत्ता	जन–गण–मन पहली बार गाया गया
सत्ताइसवाँ	1912	आर.एन. मुधोलकर	बांकीपुर	–
अट्ठाइसवाँ	1913	नवाब सैयद मोहम्मद बहादुर	कराची	–
उन्तीसवाँ	1914	भूपेन्द्रनाथ बसु	मद्रास	इसमें मद्रास प्रांत के गवर्नर लार्ड पोटलैंड मौजूद थे
तीसवाँ	1915	सत्येन्द्र प्रसाद सिन्हा	बंबई	–
इकत्तीसवाँ	1916	अंबिका चरण मजूमदार	लखनऊ	काँग्रेस एक हुई, काँग्रेस–मुस्लिम लीग समझौता
बत्तीसवाँ	1917	ऐनी बेसेन्ट	कलकत्ता	काँग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष
तैंतीसवाँ	1918	मदन मोहन मालवीय	दिल्ली	इस अधिवेशन के बाद पहली बार 1918 में सैयद हसन इमाम की अध्यक्षता में विशेष अधिवेशन बुलाया गया।
चौंतीसवाँ	1919	मोतीलाल नेहरू	अमृतसर	–
पैंतीसवाँ	1920	सी. विजयराघवाचारी	नागपुर	असहयोग आन्दोलन पारित हुआ
छत्तीसवाँ	1921	हकीम अजमल खाँ	अहमदाबाद	–
सैंतीसवाँ	1922	सी.आर. दास	गया	–
अड़तीसवाँ	1923	मौलाना मुहम्मद अली	काकीनाडा	–
विशेष अधिवेशन	1923	अबुल कलाम आजाद	दिल्ली	सबसे कम उम्र के अध्यक्ष
उन्तालीसवाँ	1924	महात्मा गाँधी	बेलगाँव	–
चालीसवाँ	1925	सरोजिनी नायडू	कानपुर	पहली भारतीय महिला अध्यक्ष
इकतालीसवाँ	1926	श्रीनिवास आयंगर	गुवाहाटी	प्रत्येक काँग्रेसी को खादी पहनना आवश्यक।
बयालीसवाँ	1927	एम. ए. अंसारी	मद्रास	काँग्रेस ने पूर्ण स्वराज को लक्ष्य बनाया।
तेतालीसवाँ	1928	मोतीलाल नेहरू	कलकत्ता	–
चौवालीसवाँ	1929	जवाहरलाल नेहरू	लाहौर	पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पारित।
पैंतालीसवाँ	1931	वल्लभभाई पटेल	कराची	गाँधी इरविन पैक्ट को मंजूरी मिली ।
छियालीसवाँ	1932	अमृत रणछोड़दास	दिल्ली	–
सैंतालीसवाँ	1933	श्रीमती नेल्ली सेन गुप्ता	कलकत्ता	–
अड़तालीसवाँ	1934	राजेन्द्र प्रसाद	बंबई	गाँधी का काँग्रेस से इस्तीफा।
उड़नचासवाँ	1936	जवाहरलाल नेहरू	लखनऊ	
पचासवाँ	1937	जवाहरलाल नेहरू	फैजपुर (बंगाल)	गाँव में सम्पन्न अधिवेशन
इक्यावनवाँ	1938	सुभाषचंद्र बोस	हरिपुरा (गुजरात)	–
बावनवाँ	1939	सुभाषचंद्र बोस/राजेन्द्र प्रसाद	त्रिपुरी (म. प्र.)	–
तिरेपनवाँ	1940, 41-45	मौलाना अबुल कलाम आजाद	रामगढ़	1941–45 के बीच कोई अधिवेशन नहीं हुआ
चौवनवाँ	1946	आचार्य जे. बी. कृपलानी	मेरठ	**1947 में कोई अधिवेशन नहीं हुआ इसलिए कृपलानी ही स्वतंत्रता के समय अध्यक्ष थे।**
पचपनवाँ	1948	पट्टाभि सीतारमैया	जयपुर	इसका आरंभ वन्देमातरम एवं राष्ट्रगान से हुआ।

प्रमुख संगठन
(Important Organisations)

संस्था	वर्ष	संस्थापक	स्थान
लैण्ड होल्डर्स सोसाइटी	1838	द्वारिका नाथ टैगोर	कलकत्ता
बंगाल ब्रिटिश एसोसिएशन	1843	द्वारिका नाथ टैगोर	कलकत्ता
ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन	1851	राजेन्द्र लाल, राधाकांत देव	कलकत्ता
ईस्ट इंडिया एसोसिएशन	1866	दादाभाई नौरोजी	लंदन
नेशनल इंडिया एसोसिएशन	1867	मेरी कारपेंटर	लंदन
इंडियन सोसाइटी	1872	आनंद मोहन बोस	लंदन
इंडियन एसोसिएशन	1876	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस	कलकत्ता
भारतीय राष्ट्रीय कॉफ्रेंस	1883	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी	कलकत्ता
मद्रास महाजन सभा	1884	वी. राघवाचारी, एस. अय्यर एवं पी आनंद चारलू	मद्रास
बाम्बे प्रेसीडेन्सी एसोसिएशन	1885	फिरोजशाह मेहता, तेलंग	बंबई
भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस	**1885**	**ए. ओ. ह्यूम**	**बंबई**
सर्वेंटस ऑफ इंडिया सोसाइटी	1905	गोपाल कृष्ण गोखले	बंबई
होमरूल लीग	1916	ऐनी बेसन्ट व तिलक	पुणे
उत्तर प्रदेश किसान सभा	1918	इन्द्र नारायण, मालवीय एवं गौरी शंकर	लखनऊ
भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी	1920	एम. एन. राय	ताशकंद
अवध किसान सभा	1920	रामचन्द्र, नेहरू, गौरी शंकर	प्रतापगढ़
भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस	1920	**संस्थापक**—एम.एन, जोशी, **अध्यक्ष**—लाला लाजपत राय	लखनऊ
स्वराज पार्टी	1923	मोतीलाल नेहरू व सी. आर. दास	दिल्ली
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ	1925	के.पी. हेडगेवार	—
खुदाई खिदमतदगार	1925	खान अब्दुल गफ्फार खान	पेशावर
कॉंग्रेस समाजवादी पार्टी	1934	आचार्य नरेन्द्र देव, जय प्रकाश नारायण	—
प्रगतिशील लेखक संघ	1936	प्रेमचंद	लखनऊ
अखिल भारतीय किसान सभा	1936	एन.जी. रंगा व सहजानंद	लखनऊ
फारवर्ड ब्लाक	1939	सुभाष चन्द्र बोस	कलकत्ता
रेडिकल डेमोक्रेटिक दल	1940	एम. एन. राय	कलकत्ता
क्रांतिकारी समाजवादी दल	1942	सौम्येन्द्र नाथ टैगोर	कलकत्ता

(II) राष्ट्रवादी आन्दोलन का द्वितीय चरण (1905-1919) [Second Stage of Nationalist Movement (1905-1919)]

(i) बंगाल का विभाजन (1905) (Division of Bengal)

- बंगाल विभाजन का निर्णय कर्जन द्वारा 1905 में लिया गया। इसका कारण प्रशासनिक असुविधा बताया गया।
- बंगाल को बाँटने का प्रस्ताव 3 दिसंबर, 1903 को ब्रिटिश संसद में रखा गया। 20 जुलाई, 1905 को बंगाल विभाजन के निर्णय की घोषणा हुई और **16 अक्टूबर, 1905** को **बंगाल का विभाजन** की योजना प्रभावी हुई।
- विभाजन के बाद एक भाग में पूर्वी बंगाल और असम सम्मिलित थे, जिसकी राजधानी ढाका थी। लेफ्टिनेंट ब्लूमफिल्ड फूलर यहाँ का प्रथम गवर्नर था। दूसरा भाग पश्चिम बंगाल, बिहार और उड़ीसा मिलाकर बना था। यहाँ की राजधानी कलकत्ता थी और यहाँ का पहला गवर्नर एण्ड्रयू फ्रेजर था।
- 16 अक्टूबर, 1905 को पूरे **बंगाल में शोक दिवस** के रूप में मनाया गया। रवीन्द्रनाथ टैगोर के आह्वान पर इस दिन को **राखी दिवस** के रूप में मनाया गया।
- 1905 को कांग्रेस के बनारस अधिवेशन में **स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन** का अनुमोदन किया गया।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इसी समय **आमार सोनार बांग्ला** नामक गीत लिखा जो वर्तमान में बांग्लादेश का राष्ट्रगान है।

- रवीन्द्र नाथ टैगोर ने 1906 में भारतीय प्राच्यकला संस्थान की स्थापना की।
- स्वदेशी आंदोलन के प्रचार–प्रसार के लिए अश्विनी कुमार दत्ता ने बारीसल में **स्वदेशी बांधव समिति** की स्थापना की।
- 15 अगस्त, 1906 को राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् की स्थापना हुई। आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र राय ने बंगाल केमिकल्स स्वदेशी स्टोर खोला।
- काँग्रेस के 1906 के कलकत्ता अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी ने पहली बार **स्वराज** शब्द का उल्लेख किया। (स्वराज शब्द का पहली बार प्रयोग दयानन्द सरस्वती ने किया।)
- स्वदेशी आंदोलन का नेतृत्व दिल्ली में सैयद हैदर राजा, मद्रास में चिदंबरम पिल्ले, पूना व बंबई में तिलक, पंजाब में लाला लाजपत राय ने किया।
- इस समय हितवादी, संजीवनी व बंगाली जैसे समाचार पत्रों द्वारा विभाजन का विरोध किया गया।

(ii) काँग्रेस का विघटन (1907) (Split in Congress)

- काँग्रेस 1907 के सूरत अधिवेशन में उदारवादी रासबिहारी घोष को काँग्रेस का अध्यक्ष बनाना चाहते थे, लेकिन गरमपंथी लाला लाजपत राय को अध्यक्ष बनाना चाहते थे। अंततः **रासबिहारी घोष** अध्यक्ष बनने में सफल हुए।
- इस अधिवेशन में, 1906 के कलकत्ता अधिवेशन में पास करवाये गये 4 प्रस्तावों–स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा एवं स्वशासन को लेकर विवाद गहरा गया और गरमपंथी एवं उदारवादियों के बीच संघर्ष के कारण अंततः काँग्रेस में विभाजन हो गया।

(iii) मुस्लिम लीग की स्थापना (1906) (Establishment of Muslim League)

- बंगाल विभाजन की घोषणा के बाद 3 अक्टूबर, 1906 को आगा खाँ के नेतृत्व में मुसलमानों का एक शिष्टमंडल वायसराय लॉर्ड मिंटो से शिमला में मिला।
- अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना की घोषणा 30 दिसंबर, 1906 को **नवाब सलीमुल्लाह** के नेतृत्व में ढाका में आयोजित एक बैठक में की गई।
- इसके प्रथम अध्यक्ष **नवाब वकार–उल–मुल्क मुश्ताक हुसैन** थे।
- 1908 में अमृतसर में आयोजित मुस्लिम लीग की बैठक में (अध्यक्ष–सर सैयद इमाम) मुसलमानों के लिए एक अलग निर्वाचन मंडल की माँग की गई, जिसकी पूर्ति 1909 के मार्ले मिंटो सुधार द्वारा की गई।
- मुस्लिम लीग के संविधान, 'द ग्रीनबुक' का प्रारूप मौलाना मुहम्मद अली गौहर ने बनाया था।

(iv) मार्ले मिन्टो सुधार (1909) (Morley-Minto Reforms)

- **'बाँटो और राज करो'** की नीति पर आधारित यह 15 नवंबर, 1909 को राजकीय अनुमोदन के बाद **भारतीय परिषद् अधिनियम, 1909** के नाम से लागू हुआ।
- इसमें मुसलमानों को पृथक् निर्वाचन मंडल की सुविधा प्रदान की गई। इसी अधिनियम ने भारत के विभाजन का बीजारोपण कर दिया।

(v) दिल्ली दरबार (1911) (Delhi Durbar)

- दिल्ली दरबार का आयोजन 1911 में वायसराय **लॉर्ड हार्डिंग** द्वितीय के समय **ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम** एवं **महारानी विलियन मेरी** के भारत आगमन पर उनके स्वागत हेतु किया गया।
- अरूण्डेल कमेटी की सिफारिश पर बंगाल का विभाजन 12 दिसंबर, 1911 को रद्द कर दिया गया और कलकत्ता की जगह दिल्ली को भारत की राजधानी बनाया गया।
- 1 अप्रैल, 1912 को दिल्ली भारत की नई राजधानी बनी।
- बंगाल विभाजन रद्द होने से बिहार और उड़ीसा बंगाल से अलग हो गए। असम पुनः 1874 की स्थिति में आ गया, अब असम में सिलहट भी शामिल था।

(vi) प्रथम विश्व युद्ध (1914) (First World War)

- प्रथम विश्व युद्ध 28 जुलाई, 1914 को शुरू हुआ, जिसमें एक तरफ जर्मनी, ऑस्ट्रिया, इटली और टर्की थे तथा दूसरी ओर फ्रांस, रूस, इंग्लैंड और जापान थे।
- भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस ने इस विश्व युद्ध में ब्रिटिश साम्राज्य का समर्थन किया।
- गाँधीजी ने लंदन में एम्बुलेंस कोर बनाई जो युद्ध में घायल सैनिकों को ढोती थी।

(vii) लखनऊ समझौता (1916) (Lucknow Pact)

- काँग्रेस का लखनऊ अधिवेशन (**अध्यक्ष : अंबिका चरण मजूमदार**) दो दृष्टि से महत्त्वपूर्ण था–
  - (i) काँग्रेस से निष्कासित गरमपंथियों को काँग्रेस में पुनः प्रवेश।
  - (ii) काँग्रेस–मुस्लिम लीग के बीच ऐतिहासिक लखनऊ समझौता।
- लीग के लखनऊ अधिवेशन, 1916 की अध्यक्षता मोहम्मद अली जिन्ना ने की थी।
- काँग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में गरमपंथी और उदारवादियों को पुनः एक करने में **तिलक और ऐनी बेसेंट** की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। इस सम्मेलन में **'स्वराज प्राप्ति'** का प्रस्ताव पारित किया गया।

(viii) होमरूल लीग आंदोलन (Homerule League Movement)

- ऐनी बेसेन्ट और तिलक ने मिलकर होमरूल लीग आंदोलन शुरू किया।
- तिलक द्वारा 28 अप्रैल, 1916 को **बेलगाँव (पूना)** में होमरूल लीग की स्थापना की गई। **जोसेफ बपतिस्ता** इसके अध्यक्ष एवं **एन.सी. केलकर** इसके सचिव थे। तिलक की होमरूल का कार्यक्षेत्र कर्नाटका, महाराष्ट्र (बंबई को छोड़कर) मध्य प्रांत, बरार था। तिलक ने मराठा (अंग्रेजी भाषा में) और केसरी (मराठी भाषा में) नामक दो पत्रों से लीग के कार्यक्रमों का प्रचार–प्रसार किया।

- ऐनी बेसेन्ट ने अपनी लीग की स्थापना सितंबर 1916 में की। शेष भारत ऐनी के कार्य क्षेत्र में था। **ऐनी बेसेन्ट** ने **जार्ज अरूंडेल** को होमरूल लीग संगठन का सचिव बनाया और **अड्यार (मद्रास)** में लीग का मुख्यालय स्थापित किया। मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू एवं तेज बहादुर सप्रू भी बेसेन्ट की लीग से जुड़े थे। ऐनी बेसेन्ट ने **'न्यू इंडिया एवं कामनवील'** पत्रिका का प्रकाशन किया।
- लीग की सर्वाधिक शाखाएँ मद्रास में थीं।
- गोखले की **'सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी'** के सदस्यों को लीग में प्रवेश की अनुमति नहीं थी।
- **वेलेन्टाइन शिरोल** ने अपनी पुस्तक **'इंडियन अनरेस्ट'** में तिलक को **'भारतीय अंशाति का जनक'** कहा था, जिसके लिए तिलक ने उन पर मानहानि का मुकदमा किया।

(ix) मांटेग्यू घोषणा (1917) (Montague Declaration)

- मांटेग्यू घोषणा, भारतीय सरकार अधिनियम 1919 का आधार बनी। इस घोषणा को उदारवादियों ने भारत के मैग्नाकार्टा की संज्ञा दी।
- तिलक ने मांटेग्यू घोषणा को **'सूर्य विहीन उषाकाल'** कहा।
- 1919 के अधिनियम द्वारा प्रान्तों में द्वैध शासन प्रणाली लागू हुई और पहली बार लोक सेवा आयोग की स्थापना का प्रावधान किया गया। पृथक् निर्वाचन मंडल में मुसलमानों के अलावा सिखों और गैर–ब्राह्मणों को भी शामिल किया गया।

(x) क्रान्तिकारी आंदोलन का प्रथम चरण (1905-1915) [First Stage of Revolutionary Movement (1905-1915)]

- महाराष्ट्र के पुणे जिले के चितपावन ब्राह्मणों को भारत में क्रांति धारा को शुरू करने का श्रेय दिया जाता है।
- 22 जून, 1897 को **दामोदर** एवं **बालकृष्ण चापेकर** ने पुणे के **प्लेग कमिश्नर रेण्ड** एवं **एमहर्स्ट** की हत्या की। हत्या के आरोप में चापेकर बंधुओं को फाँसी दे दी गई।
- विनायक दामोदर सावरकर (वीर सावरकर) एवं गणेश सावरकर ने 1899 में गुप्त संस्था **मित्र मेला** का गठन किया, जिसे 1904 में **अभिनव भारत समाज** कहा जाने लगा।
- **अनन्त लक्षण कन्हारे** ने नासिक के जिला मजिस्ट्रेट जैक्सन की गोली मारकर हत्या कर दी। तिलक ने इस हत्या की तुलना शिवाजी द्वारा अफजल खाँ की हत्या से की। इसके बाद तिलक को 18 माह की सजा हुई। तिलक ऐसे पहले व्यक्ति थे, जिन्हें पत्रकारिता के कारण सजा हुई।
- बंगाल के पहले क्रांतिकारी संगठन **अनुशीलन समिति** की स्थापना 1902 में मिदनापुर में ज्ञानेन्द्र नाथ बसु एवं कलकत्ता में **जतीन्द्र नाथ बनर्जी, भूपेन्द्रनाथ दत्त** एवं **बारीन्द्र नाथ घोष** द्वारा की गई। इन्होंने युगान्तर नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया। इसी समय ब्रह्मबान्धव उपाध्याय द्वारा **'संध्या'** एवं अरविंद घोष द्वारा **'वन्देमातरम्'** प्रकाशित किया गया।
- **प्रफुल्ल चाकी** एवं **खुदीराम बोस** ने मुजफ्फरपुर के मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास किया । प्रफुल्ल चाकी ने आत्महत्या कर ली एवं खुदीराम बोस को फाँसी दी गई।
- **रासबिहारी बोस** ने लॉर्ड हार्डिंग पर फेंके गए बम की योजना बनाई थी।
- बारीन्द्र घोष एवं अरविन्द घोष पर अलीपुर षड्यंत्र केस के तहत मुकदमा चलाया गया। अरविंद घोष को उचित साक्ष्य के अभाव में छोड़ दिया गया और उन्होंने आंतकवाद क्रियाकलापों से अलग होकर पांडिचेरी में अपना आश्रम **औरोविले** स्थापित कर लिया।
- **पंजाब (Punjab)** में अजीत सिंह ने लाहौर में **'अंजुमने मोहिब्बाने वतन'** नामक संस्था स्थापित की और **'भारत माता'** नामक अखबार प्रकाशित किया।

(xi) विदेश में क्रांतिकारी गतिविधियाँ (Revolutionary Activities Outside India)

- श्यामजी कृष्ण वर्मा ने 1905 में लंदन में इंडिया होमरूल सोसाइटी की स्थापना की। इस सोसाइटी ने इंडियन सोसिऑलाजिस्ट नामक पत्रिका का प्रकाशन किया और इंडिया हाउस नामक हॉस्टल की स्थापना की।
- इंडिया हाउस के सदस्य मदन लाल ढींगरा ने 1 जुलाई, 1909 को **कर्जन वाइली** की हत्या कर दी।
- मैडम भीखाजी कामा, जिन्हें **भारतीय क्रांति की माँ** भी कहा जाता है, ने 1907 में स्टुटगार्ट जर्मनी में द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी काँग्रेस में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में हिस्सा लिया और राष्ट्रीय ध्वज को फहराया।

(xii) गदर पार्टी (1913) (Gadar Party 1913)

- सोहन सिंह बाखना ने हिन्द एसोसिएशन ऑफ अमेरिका की स्थापना की। इस संस्था ने **गदर** नाम एक अखबार निकाला, जिससे इसका नाम भी **गदर पार्टी** पड़ गया।
- गदर पार्टी की स्थापना 1913 में **लाला हरदयाल** ने की थी। इसका मुख्यालय सैन फ्रांसिस्को (अमेरिका) था। गदर आंदोलन ने सैन फ्रांसिस्को में युगान्तर आश्रम की स्थापना की थी।
- राजा महेन्द्र प्रताप ने सर्वप्रथम जर्मनी के सहयोग से काबुल में 1915 में **अंतरिम भारत सरकार** की स्थापना की।

(xiii) कामागाटामारू (1914)

यह एक जापानी जहाज था, जिसे प्रवासी भारतीयों को कनाडा पहुँचाने के लिए किराए पर लिया गया था, लेकिन उन्हें कनाडा नहीं उतरने दिया गया और वापस कलकत्ता लाया गया। यात्रियों के अधिकार के लिए **सोहनलाल पाठक** के नेतृत्व में **शोर कमेटी** का गठन किया गया।

(III) भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का तृतीय चरण (1919-47) (Third Stage of Indian National Movement) (1919-47)

(i) महात्मा गाँधी (1869–1948) (Mahatma Gandhi)

- मोहनदास करमचंद गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को पोरबंदर (गुजरात) में हुआ। उनके पिता **करमचंद गाँधी** एवं माता **पुतलीबाई** थीं।

- गाँधीजी का विवाह 1883 में कस्तूरबा के साथ हुआ। उनके चार पुत्र हरिलाल, रामदास, मणिलाल और देवदास थे।
- 1889 से 1891 तक उन्होंने इंग्लैंड में रहकर कानून की पढ़ाई की।
- 1893 में दक्षिण अफ्रीका के एक व्यापारी **दादा अब्दुला** के मुकदमें की पैरवी हेतु गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका गए।
- महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका में 21 वर्ष तक सक्रिय रहे।

गाँधीजी : दक्षिण अफ्रीका (Gandhiji : South Africa)

1894 : नटाल इंडियन काँग्रेस की स्थापना
1903 : **इंडियन ओपिनियन** नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन
1904 : फीनिक्स आश्रम की स्थापना
1905 : टालस्टाय फार्म की स्थापना (जोहान्सबर्ग)
1906 : सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग
1908 : जेल जीवन का प्रथम अनुभव
1910 : टॉल्सटाय फार्म की स्थापना

- गाँधीजी 9 जनवरी, 1915 को दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस आए।
- वे फरवरी–मार्च 1915 में शांति निकेतन में रहे।
- जहाँ रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें **महात्मा की उपाधि** प्रदान की, और गाँधी जी ने भी रवीन्द्रनाथ को **'गुरु देव'** कहना शुरू कर दिया ।
- **गोपाल कृष्ण गोखले** को गाँधीजी ने अपना राजनीतिक गुरू बनाया।
- ब्रिटिश सरकार ने **9 जनवरी, 1915** को गाँधीजी को **'केसर–ए–हिन्द'** की उपाधि प्रदान की थी।
- गाँधीजी ने अपनी पुस्तक **'हिन्द स्वराज'** में स्वराज की विस्तृत व्याख्या की।
- उन्होंने **नवजीवन (गुजराती)** एवं **यंग इंडिया (अंग्रेजी)** का संपादन किया। उन्होंने हरिजन पत्र का प्रकाशन 1933 में आरम्भ किया।
- **'द स्टोरी ऑफ माई एक्सपेरिमेंट्स विद् टुथ'**, गाँधीजी की आत्मकथा है। इसकी रचना 1925 में की थी।
- गाँधीजी का सर्वप्रिय भजन **वैष्णव जन को तैनू कहिए** की रचना नरसिंह मेहता ने की थी।
- उन्होंने अहमदाबाद में साबरमती नदी के किनारे **साबरमती आश्रम** की स्थापना की।
- गाँधीजी की हत्या **30 जनवरी, 1948** को दिल्ली के **बिड़ला भवन** में प्रार्थना सभा में जाते हुए **नाथूराम गोडसे** ने कर दी।
- भारत में 1917 से 1918 के बीच गाँधीजी ने तीन संघर्ष का नेतृत्व किया। ये थे–
- **चम्पारण सत्याग्रह (1917) :** किसानों को तीन कठिया पद्धति के अंतर्गत जमीन के **3/20**वें भाग पर ली की खेती करनी पड़ती थी और यूरोपियों द्वारा तय किये मूल्य पर उसे बेचना पड़ता था। इसे **'तिनकठिया पद्धति'** कहा जाता था। गाँधीजी ने **राजकुमार शुक्ल** के कहने पर चम्पारण में हस्तक्षेप किया और सत्याग्रह के आधार पर किसानों की परेशानियाँ कम हुईं।
  - चम्पारण सत्याग्रह भारत में गाँधी का प्रथम सत्याग्रह था।
  - **चम्पारण** सत्याग्रह के नेतृत्व करने के लिए राजकुमार शुक्ल गाँधीजी से **लखनऊ** में मिले थे।
  - ब्रिटिश सरकार अवैध वसूली का **25% कर** वापस करने पर सहमत हुई।
  - महात्मा गाँधी के सफल चम्पारण सत्याग्रह से प्रभावित होकर **रवीन्द्र नाथ टैगोर ने उन्हें 'महात्मा' की उपाधि प्रदान की।**
- **अहमदाबाद मिल मजदूर हड़ताल (1918) :** मिल मजदूरों और मिल मालिकों के बीच **प्लेग बोनस** को लेकर विवाद था। गाँधीजी के अनशन के बाद मिल मालिकों ने **35%** बोनस देना स्वीकार किया।

  भारत में होने वाली गाँधी जी की प्रथम भूख हड़ताल थी।
- **खेड़ा सत्याग्रह (1918) :** खेड़ा (गुजरात) के किसान फसल नष्ट हो जाने के कारण लगान को स्थगित करना चाहते थे परंतु सरकार इसके लिए तैयार नहीं थी। **गाँधीजी, विट्ठलभाई पटेल, वल्लभभाई पटेल** और **इंदुलाल याग्निक** के साथ खेड़ा पहुँचे, और किसानों का समर्थन किया, जिसके फलस्वरूप सरकार को झुकना पड़ा।
  - महात्मा गाँधी यहाँ **'सर्वेन्ट ऑफ इंडिया सोसायटी'** के सदस्य **बिट्ठल भाई पटेल** के साथ पहुँचे थे।
  - खेड़ा में ही गाँधी जी ने **प्रथम वास्तविक किसान सत्याग्रह** शुरू किया।

(ii) रॉलेक्ट एक्ट (1919) [Rowlatt Act (1919)]

- बढ़ती हुई क्रांतिकारी गतिविधियों को कुचलने के लिए सरकार को रॉलेट समिति के सुझावों पर रॉलेट एक्ट या **द अनार्किकल एण्ड रिवोल्यूशनरी क्राइम एक्ट 1919** बनाया।
- इसके तहत अंग्रेज सरकार जिसको चाहे बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद कर सकती थी। इसे **'बिना वकील, बिना अपील, बिना दलील'** का कानून कहा गया।
- स्वामी श्रद्धानन्द ने 30 मार्च, 1919 को दिल्ली में आंदोलन की कमान संभाली।
- रॉलेट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह के लिए महात्मा गाँधी का **'अखिल भारतीय संघर्ष'** के नेतृत्व का **सर्वप्रथम** प्रयास था।
- इस एक्ट के विरोध में महात्मा गाँधी ने 30 मार्च, 1919 को भारत में **'सर्वत्र सत्याग्रह दिवस'** मनाया गया।

(iii) जलियाँवाला बाग हत्याकांड (1919) (Jalianwala Bagh Mass-acre)

- अमृतसर के जलियाँवाला बाग में **13 अप्रैल, 1919** को (बैशाखी का दिन) **किचलू, सत्यपाल** की गिरफ्तारी के विरुद्ध एक शांतिपूर्ण सभा का आयोजन किया गया।
- सभा स्थल पर मौजूद **जनरल डायर** ने बिना किसी सूचना के भीड़ पर गोली चलवा दी, जिसमें करीब 1000 लोग मारे गये।
- इस हत्याकांड के विरोध में **रवीन्द्रनाथ टैगोर** ने **नाइट हुड (सर)** की उपाधि वापस कर दी। वायसराय की कार्यकारणी के सदस्य **शंकर नायर** ने त्यागपत्र दे दिया।

- सरकार ने हत्याकांड की जाँच के लिए **हंटर आयोग** गठित किया।

(iv) खिलाफत आंदोलन (Khilafat Movement)

- भारत के मुसलमान तुर्की के सुल्तान को खलीफा मानते थे। लेकिन ब्रिटिश सरकार ने 10 अगस्त, 1920 को संपन्न **सीवर्स की संधि द्वारा तुर्की का विभाजन कर दिया।**
- 19 अक्टूबर, 1919 को समूचे देश में खिलाफत दिवस मनाया गया।
- 23 नवंबर, 1919 को दिल्ली में अखिल भारतीय खिलाफत आंदोलन का अधिवेशन हुआ, जिसकी अध्यक्षता **गाँधीजी** ने की। इस आन्दोलन में **मोहम्मद अली** और **शौकत अली** ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।
- 20 जून, 1920 में इलाहाबाद में हुई हिन्दू–मुस्लिम नेताओं की संयुक्त बैठक में असहयोग आंदोलन को चलाए जाने का निर्णय लिया गया।
- वर्ष 1924 में यह आन्दोलन उस समय समाप्त हुआ जब तुर्की में **मुस्तफा कमाल पाशा** नेतृत्व में बनी सरकार ने खलीफा का पद समाप्त कर दिया।

(v) असहयोग आंदोलन (1920–22) (Non-Cooperation Movement)

- असहयोग आंदोलन चलाए जाने का निर्णय सितंबर, 1920 में **लाला लाजपत राय** की अध्यक्षता में **कलकत्ता** के विशेष अधिवेशन में लिया गया। महात्मा गाँधी ने असहयोग प्रस्ताव स्वयं पेश किया। असहयोग आन्दोलन सबसे बड़ा जन–आन्दोलन था।
- 1920 के नागपुर अधिवेशन में असहयोग आंदोलन चलाने का प्रस्ताव पारित किया गया।
- नागपुर अधिवेशन के समय अध्यक्ष **विजय राघवाचार्य** थे तथा असहयोग के प्रस्ताव को **सी. आर. दास** ने प्रस्तुत किया।
- गाँधीजी ने अहसहयोग आंदोलन 1 अगस्त, 1920 को शुरू किया। इसी दिन तिलक की मृत्यु हो गई। तिलक स्मारक के लिए तिलक **स्वराज कोष** की स्थापना की गई। इसके 1 करोड़ रुपए एकत्र हुए।
- गाँधीजी ने ब्रिटिश शासन द्वारा दी गई उपाधियाँ—**केसर–ए–हिन्द, जूलू युद्ध पदक** एवं **बोअर पदक** लौटा दिए। जमनालाल बजाज ने **राय बहादुर** की उपाधि लौटा दी।
- विदेशी वस्त्रों की होली जलाए जाने को **रवीन्द्रनाथ टैगोर** ने निष्ठुर बर्बादी की संज्ञा दी।

(vi) चौरी–चौरा कांड (1922) (Chora-Chori Incident)

- 5 फरवरी, 1922 को गोरखपुर स्थित चौरी–चौरा नामक स्थान पर आंदोलनकारियों ने पुलिस के 22 जवानों को थाने के अंदर जिंदा जला दिया।
- गाँधीजी ने 12 फरवरी, 1922 को बारदोली में हुई बैठक में असहयोग आंदोलन को समाप्त करने का निर्णय लिया और यह आंदोलन समाप्त हो गया।
- गाँधीजी को 10 मार्च, 1922 को गिरफ्तार कर असंतोष फैलाने के आरोप में 6 वर्ष की कैद की सजा सुनाई गई।

(vii) स्वराज पार्टी (1923) (Swaraj Party)

- असहयोग आंदोलन की समाप्ति के बाद, कांग्रेस में एक नई विचारधारा ने जन्म लिया जिसके सूत्रधार **मोतीलाल नेहरू** एवं **सी. आर. दास** थे। इन्हें परिवर्तनवादी कहा गया, क्योंकि ये विधान मंडल में प्रवेश करके आंदोलन को आगे बढ़ाना चाहते थे।
- वहीं दूसरी तरफ अपरिवर्तनवादी जिसमें सी. राजगोपालाचारी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, वल्लभभाई पटेल आदि थे, विधान मंडल में प्रवेश नहीं चाहते थे।
- काँग्रेस के 1922 के गया अधिवेशन (अध्यक्ष सी. आर. दास) में मोतीलाल नेहरू और सी.आर.दास ने काँग्रेस से त्यागपत्र दे दिया और मार्च 1923 में **इलाहाबाद** में कांग्रेस खिलाफत स्वराज पार्टी की स्थापना की। इसके अध्यक्ष सी.आर.दास एवं महासचिव मोतीलाल नेहरू थे।
- नवंबर 1923 के चुनावों में स्वराजियों ने केन्द्रीय विधानमंडल में 101 सीटों में से 42 पर कब्जा किया।
- प्रांतीय विधानमंडलों में स्वराजियों को माध्यप्रांत में स्पष्ट बहुमत, बंगाल में सबसे बड़े दल के रूप में तथा बंबई एवं उत्तर प्रदेश में संतोषजनक सफलता मिली।
- स्वराजियों की एक और बड़ी उपलब्धि थी कि, 1925 में विट्ठलभाई पटेल को केन्द्रीय विधानमंडल का अध्यक्ष चुना गया।
- 16 जून, 1925 में सी.आर. दास की मृत्यु के बाद स्वराज पार्टी कमजोर होने लगी।

(viii) क्रांतिकारी आंदोलन का दूसरा चरण (1922–34) [Second Phase of Revolutionary Movement (1922–34)]

- अक्टूबर, 1924 में सचिन्द्रनाथ सान्याल, जोगेश चटर्जी एवं राम प्रसाद बिस्मिल ने कानपुर में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना की। इस संस्था ने 9 अगस्त, 1925 को लखनऊ के **काकोरी** नामक स्थान पर **8 डाउन ट्रेन** में डकैती डाली और सरकारी खजाने को लूट लिया। इस घटना को **'काकोरी कांड'** कहा जाता है। इस घटना में **राम प्रसाद बिस्मिल, असफाक उल्ला, रोशन लाल** व **राजेन्द्र लाहिड़ी** को फांसी दी गई । चन्द्रशेखर आजाद भागने में सफल हो गये।
- 1928 में दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में **हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन** की स्थापना की गई। इसके संस्थापक भगत सिंह, सुखदेव, भगवती चरण वोहरा एवं चन्द्रशेखर आजाद थे।
- 1928 में साइमन कमीशन का विरोध करते समय **पंजाब केसरी लाला लाजपत राय** की पिटाई के कारण मृत्यु हो गई। भगत सिंह, राजगुरू और चन्द्रशेखर ने इसका बदला सांडर्स की हत्या करके लिया। यह घटना **'लाहौर षड्यंत्र'** कहलाती है।
- भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने **8 अप्रैल, 1929** को दिल्ली के **केन्द्रीय विधानमंडल में जिस समय पब्लिक सेफ्टी बिल** और **ट्रेड डिसप्यूट बिल पर बहस चल रही थी, बम फेंका**। इसी समय भगत सिंह ने **इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा लगाया**। (मुहम्मद इकबाल ने अपनी पुस्तक **बंग–ए–दर्रा** में **'इन्कलाब'** शब्द का प्रयोग किया था)।

- 23 मार्च, 1931 को लाहौर षड्यंत्र केस में **भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु** को फाँसी दे दी गई।
- 27 फरवरी, 1931 को इलाहाबाद के **अल्फ्रेड पार्क** में पुलिस मुठभेड़ के दौरान **चन्द्रशेखर आजाद** ने स्वयं को गोली मार ली।
- बंगाल में सूर्यसेन ने **इंडियन रिपब्लिकन आर्मी** की स्थापना की, जिसने 18 अप्रैल, 1930 को चट्टगांव पुलिस शास्त्रागार कांड कहलाता है। कुछ समय बाद सूर्यसेन को पकड़ कर फाँसी दे दी गई।

  सचिन्द्र सान्याल ने **'बंदी जीवन'** एवं **भगवती चरण वोहरा** ने **फिलासफी ऑफ बम** की रचना की थी।
- बीना दास ने 1932 में विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में गवर्नर पर गोली चलायी।

(ix) साइमन कमीशन (1927) (Simon Commission)

- साइमन कमीशन का गठन 8 नवंबर, 1927 को जॉन साइमन की अध्यक्षता में किया गया। इसमें कोई सदस्य भारतीय नहीं था इसलिए इसका भारत में भारी विरोध हुआ।
- इसके सभी 7 सदस्य ब्रिटिश संसद के अंग्रेज थे, इसलिए इसे **श्वेत कमीशन** भी कहा गया। **साइमन आयोग के सदस्य–सर जॉन साइमन** (अध्यक्ष), **क्लाइमेंट एटली** (बाद में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बने), **हेनरी लेवी लासन**, **एडवर्ड काडोगान, वर्नोन हार्टशोर्न, जॉर्ज लेन फाक्स, डोनालड हावर्ड** थे।
- 8 फरवरी, 1928 को साइमन कमीशन **मुम्बई** पहुँचा, इस आयोग का कार्य इस बात की सिफारिश करना था कि क्या यहाँ के लोगों को अधिक संवैधानिक अधिकार दिये जायें और यदि दिये जाएँ तो उनका स्वरूप क्या हो?
- लॉर्ड इर्विन के सुझाव पर इस आयोग में किसी भी भारतीय को शामिल नहीं किया गया जिसके कारण भारत में इस कमीशन का तीव्र विरोध हुआ। नारा दिया गया ''**साइमन वापस जाओ**'' **(Simon Go Back)**।
- आयोग के विरोध के कारण **जवाहर लाल नेहरू, गोविन्द बल्लभ पन्त** आदि ने लाठियाँ खायीं। लाहौर में लाठी की गहरी चोट लगने के कारण लाला लाजपत राय की अक्टूबर, 1928 में मृत्यु हो गई। मरने से पूर्व **लाला लाजपत राय** (पंजाब केसरी) का कथन ऐतिहासिक सिद्ध हुआ कि ''**मेरे ऊपर जो लाठियों के प्रहार किये हैं वही एक दिन ब्रिटिश सरकार के ताबूत की आखिरी कील साबित होगा**।''
- इस कमीशन ने 27 मई, 1930 को अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की।

(x) नेहरू रिपोर्ट (1928)

- भारत सचिव **लार्ड बर्केनहेड** ने भारतीयों को यह चुनौती दी कि वे एक ऐसा संविधान बनायें जो सभी दल को मंजूर हो।
- इस परिप्रेक्ष्य में **मोतीलाल नेहरू** की अध्यक्षता में सात सदस्यीय समिति ने यह रिपोर्ट 28 अगस्त, 1928 को प्रस्तुत की गई। इसमें 19 मूल अधिकारों को प्रतिपादित किया गया था।
- **नेहरू रिपोर्ट के मुख्य बिन्दु निम्न थे–**
  - भारत को **डोमिनियन स्टेट** (अधिराज्य) का दर्जा दिया जाएगा।
  - भारत एक संघ होगा जिसके नियन्त्रण में द्विसदनात्मक विधानमंडल होगा, जिसका मंत्रिमण्डल सदन के प्रति उत्तरदायी होगा।
  - गवर्नर जनरल की स्थिति केवल संवैधानिक मुखिया की होगी।
  - साम्प्रदायिक आधार पर पृथक निर्वाचक मण्डल की मांग अस्वीकृत कर दी गई।

(xi) लाहौर अधिवेशन (1929) (Lahore Session)

- लाहौर अधिवेशन के दौरान रावी नदी के तट पर 31 दिसंबर, 1929 की आधी रात को जवाहरलाल नेहरू ने तिरंगा झंडा फहराया।

(xii) सविनय अवज्ञा आंदोलन (Civil Disobedience Movement)

- फरवरी 1930 में साबरमती आश्रम में हुई काँग्रेस की बैठक में सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने की बागडोर गाँधीजी के हाथ में सौंपी गई।
- गाँधीजी ने यंग इंडिया के माध्यम से वायसराय के समक्ष 11 सूत्री माँगें रखी।

(xiii) दाण्डी यात्रा (Dandi March)

- गाँधीजी ने 12 मार्च, 1930 को अपने 78 अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम से दाण्डी (नौसारी, गुजरात) तक 400 किमी. की यात्रा की और 6 अप्रैल, 1930 को दाण्डी में नमक कानून का उल्लंघन किया और देशभर में यह आंदोलन शुरू हो गया।
- तमिलनाडु में **सी. राजगोपालाचारी** ने तिरूचेनगोंड आश्रम से त्रिचिरापल्ली के वेदारण्यम तक नमक यात्रा की ।
- मणिपुर और नगालैंड में **यदुनांग नागा** के नेतृत्व में **जियालरंग** आंदोलन चलाया गया। बाद में **रानी गैडनेल्यू** ने इसे नेतृत्व प्रदान किया।
- पेशावर में गढ़वाल रेजीमेंट के सिपाहियों ने **चन्द्रसिंह गढ़वाली** के नेतृत्व में आन्दोलनकारियों पर गोली चलाने से इनकार कर दिया।
- 4 मई की रात को गाँधीजी को गिरफ्तार कर **यरवादा** जेल भेज दिया गया।
- गाँधीजी की गिरफ्तारी के बाद **सरोजिनी नायडू** और **इमाम साहेब** ने धरसाना (महाराष्ट्र) के नमक कारखाने पर धावा बोला। पुलिस के अत्याचार को देख अमरीकी पत्रकार **वेब मिलर** ने कहा – मैंने इतना कष्टदायक अत्याचार कभी नहीं देखा था।
- इस आंदोलन के समय बच्चों की वानर सेना व लड़कियों की मंजरी सेना का गठन किया गया था।
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान उत्तर–पश्चिम सीमा प्रांत के कबायलियों ने **महात्मा गाँधी** को '**मलंग बाबा**' कहा।
- **विनोबा भावे** सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने के कारण पहली बार गिरफ्तार हुए।

(xiv) लाल कुर्ती आन्दोलन (Lal Kurti Movement)

- उत्तर–पश्चिमी सीमा प्रांत में सीमांत गाँधी के नाम से प्रसिद्ध **खान अब्दुल गफ्फार खाँ** ने अपने **खुदाई खिदमतगार** ईश्वर के सेवक संगठन के ध्वज और अपने स्वयं–सेवकों के साथ इस आन्दोलन में अत्यंत सक्रिय रूप से भाग लिया। ये स्वंय–सेवक लाल कुर्ती पहने होते थे। अपनी पोषाक के कारण ये लाल कुर्ती के रूप में विख्यात हुए। **लाल कुर्ती** आन्दोलन **विशुद्ध अहिंसक आन्दोलन** था।
- कौमी आजादी के लिए इन्होंने कांग्रेस तथा गाँधी जी का नेतृत्व स्वीकार किया।
- लाल कुर्ती दल ने गफ्फार खाँ को खान–ए–अफगान की उपाधि दी। इन्होंने 'पख्तून' नामक एक पत्रिका पश्तो भाषा में निकाली जो बाद में **'देश राजा'** के नाम से प्रकाशित हुई।
- गफ्फार खाँ को बादशाह खाँ भी कहा जाता है।
- भारत सरकार ने आजादी के बाद मरणोपरांत भारत रत्न की उपाधि से 1987 में सम्मानित किया।

(xv) गाँधी-इरविन समझौता (5 मार्च, 1931) (Gandhi Irwin Pact)

- इसे दिल्ली समझौता भी कहा जाता है।
- एम. आर. जयकर, तेजबहादुर सप्रू और श्रीनिवास शास्त्री के प्रयासों से गाँधी–इरविन समझौता हुआ।
- इस समझौते के अंतर्गत सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित किया गया, भारतीयों को नमक बनाने का अधिकार मिला और गाँधीजी ने दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने का फैसला किया।
- कराची में काँग्रेस के विशेष अधिवेशन में (अध्यक्ष : वल्लभभाई पटेल) गाँधी–इरविन समझौते को स्वीकार किया गया।
- सरोजिनी नायडू ने गाँधी तथा इरविन को **दो महात्मा** कहा था।

(xvi) द्वितीय सविनय अवज्ञा आंदोलन (1932–34) (Second Civil Disobedience Movement)

- भारत आकर गाँधीजी ने लॉर्ड वेलिंगटन से मिलना चाहा, लेकिन वायसराय ने मिलने से मना कर दिया।
- 4 जनवरी, 1932 को आंदोलन शुरू होने के कुछ ही घंटों में गाँधी, नेहरू, गफ्फार खाँ आदि शीर्ष नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया और काँग्रेस को गैर–कानूनी संस्था घोषित कर दिया गया।

(xvii) प्रथम गोलमेज सम्मेलन (12 नवंबर, 1930 से 13 जनवरी, 1931) (First Round Table Conference)

भारत का 89 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल **वायसराय ऑफ इंडिया** नामक जहाज से सम्मेलन में भाग लेने के लिए लंदन गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन **जॉर्ज पंचम** ने किया तथा अध्यक्षता **रैम्जे मैकडोनाल्ड** ने की। काँग्रेस ने इस सम्मेलन में भाग नहीं लिया।

(xviii) दूसरा गोलमेज सम्मेलन (7 सितंबर, 1931 से 11 दिसंबर 1931) (Second Round Table Conference)

काँग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि गाँधीजी थे। वे **एस.एस. राजपूताना** नामक जहाज से लंदन गए। इस दौरान गाँधीजी ने लंदन में **किंग्सेहाल** में प्रवास किया। यह सम्मेलन साम्प्रदायिक समस्या पर विवाद के कारण पूरी तरह असफल रहा।

(xix) तीसरा गोलमेज सम्मेलन (17 नवंबर से 24 दिसंबर, 1932) (Third Round Table Conference)

- इसमें कुल 45 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया, काँग्रेस इसमें शामिल नहीं हुई।
- **तेजबहादुर सप्रू** व **अम्बेडकर** तीनों गोलमेज सम्मेलन में हिस्सा लेने वाले नेता थे।

(xx) साम्प्रदायिक पंचाट (कम्युनल अवार्ड) 1932 (Communal Award)

ब्रिटिश प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड ने 16 अगस्त, 1932 को साम्प्रदायिक पंचाट की घोषणा की। इसमें पृथक् निर्वाचक पद्धति को मुसलमानों के साथ–साथ दलित वर्गों पर भी लागू किया गया।

(xxi) पूना समझौता–1932 (Poona Pact)

- सांप्रदायिक पंचाट के विरुद्ध गाँधीजी ने **यरवदा जेल** में **20 सितंबर, 1932** को आमरण अनशन शुरू कर दिया।
- **मदन मोहन मालवीय, राजगोपालाचारी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद** के प्रयासों से महात्मा गाँधी व भीमराव अम्बेडकर के बीच 23 दिसंबर, 1932 को **'पूना समझौता'** हुआ।
- इस समझौते के अंतर्गत प्रांतीय विधान मंडलों में दलित वर्ग के लिए **71** की जगह **148 सीटें** आरक्षित की गईं और केन्द्रीय विधानमंडल में दलित वर्ग के लिए **18 प्रतिशत** सीटें आरक्षित की गईं।
- पूना समझौते के प्रपत्र पर दलित वर्ग की ओर से डॉ. बी. आर. अम्बेडकर तथा दूसरी ओर से **मदन मोहन मालवीय** ने हस्ताक्षर किये।
- **डॉ. अम्बेडकर** ने कहा था कि ''**महात्मा गाँधी क्षणिक भूत की भाँति धूल उठाते, लेकिन स्तर नहीं उठाते।**''

(xxii) गाँधीजी और हरिजनोत्थान (Gandhiji & Revival of Harij-ans)

- गाँधीजी ने 1932 में हरिजन कल्याण हेतु अखिल भारतीय छूआछूत विरोधी लीग की स्थापना की।
- उन्होंने **हरिजन** नामक साप्ताहिक पत्र का भी प्रकाशन किया।
- उन्होंने 7 नवंबर, 1933 में वर्धा से **हरिजन यात्रा** प्रारंभ की।

(xxiii) भारत सरकार अधिनियम (1935) (Govt. of India Act 1935)

- इस अधिनियम में भारत में **संघात्मक शासन व्यवस्था** की बात की गई।

- यह अधिनियम अंग्रेजों द्वारा भारत में लागू किया गया अंतिम संवैधानिक प्रयास था जो सबसे अधिक समय तक कार्यरत रहा।

(xxiv) प्रांतीय चुनाव और मंत्रिमंडल का गठन (1935) (Provincial Elections & Composition of Ministry)

- 1935 के अधिनियम के अंतर्गत 1937 में प्रांतीय चुनाव हुए।
- काँग्रेस जिसका चुनाव चिन्ह **पीला बक्सा** था, को पाँच प्रांतों में पूर्ण बहुमत मिला—**बिहार, उड़ीसा, मद्रास, मध्य प्रांत** एवं **संयुक्त प्रांत**। काँग्रेस **बंबई, असम** तथा **उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रांत** में सबसे बड़े दल के रूप में उभरी। केवल **पंजाब, सिन्धु** और **बंगाल** में काँग्रेस को बहुमत नहीं मिल पाया।
- बंगाल में कृषक पार्टी और मुस्लिम लीग की गठबंधन सरकार बनी।
- **28 माह** के शासन के बाद **1 सितंबर, 1939** को द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण कांग्रेस मंत्रिमंडलों द्वारा त्यागपत्र दिया गया।
- इस त्यागपत्र के बाद मुस्लिम लीग ने अंबेडकर के साथ मिलकर 22 दिसंबर, 1939 को **मुक्ति दिवस** मनाया।

(xxv) काँग्रेस समाजवादी पार्टी (Congress Socialist Party)

काँग्रेस के अन्दर समाजवादी विचारधारा का प्रचार–प्रसार के लिए आचार्य नरेन्द्रदेव, जयप्रकाश नारायण और अच्युत पटवर्धन ने 1934 में **काँग्रेस समाजवादी पार्टी** की स्थापना की।

- काँग्रेस समाजवादी दल का प्रथम अखिल भारतीय सम्मेलन 21 अक्टूबर 1934 को मुम्बई में हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता **आचार्य नरेन्द्र देव** ने की थी।
- इस दल को सैद्धांतिक प्रेरणा मार्क्सवाद व प्रजातांत्रिक समाजवाद से मिली थी।
- 1936 ई. के लखनऊ अधिवेशन में **पं. जवाहर लाल नेहरू** ने **कांग्रेस का लक्ष्य समाजवाद** घोषित किया।

(xxvi) देशी रियासतों के प्रति ब्रिटिश नीति (British Policy Towa-rds Princely States)

- भारत में छोटी–बड़ी 562 देशी रियासतें थीं।
- 1906 के बाद ब्रिटिश शासन ने देशी नरेशों के प्रति अधीनस्थ सहयोग की नीति अपनाई।
- रियासतों में सबसे बड़ी रियासत हैदराबाद और सबसे छोटी रियासत बिलवारी की थी।
- 1920 में असहयोग आंदोलन के समय रियासतों में प्रजामंडल या राज्यों की जनता के सम्मेलनों की स्थापना हुई।
- 1927 में गठित बटलर समिति, भारतीय रियासत और भारत सरकार के सम्बन्धों पर विचार करने के लिए बनी थी।
- 1939 में अखिल भारतीय राज्य जन सम्मेलन के **अध्यक्ष पं. जवाहरलाल नेहरू** बने।

स्वतंत्रता आंदोलन के समय लिखी गई महत्वपूर्ण पुस्तकें (Important Books Written During National Movement)

यंग इंडिया	महात्मा गाँधी
इंडिया डिवाइडेड	राजेन्द्र प्रसाद
गीतांजली, गोरा	रबीन्द्रनाथ टैगोर
समाजवादी क्यों	जय प्रकाश नारायण
अनहैप्पी इंडिया	लाला लाजपतराय
गीता रहस्य	बाल गंगाधर तिलक
नील दर्पण	दीनबंधु मित्र
आनंद मठ	बंकिम चन्द्र चटर्जी
इण्डिया रेनेशा	सी.एफ. एन्ड्रूज
सिपॉय म्यूटिनी	आर.सी. मजूमदार
वार ऑफ इंडिया इंडिपेंडेंस	वी.डी.सावरकर
सांग ऑफ इंडिया	सरोजिनी नायडू
ए नेशन इन मेकिंग	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
फ्रीडम एट मिडनाइट	लैंपियर
न्यू इंडिया	ऐनी बेसेन्ट
पॉवर्टी एण्ड अन ब्रिटिश रूल ऑफ इंडिया	दादा भाई नौरोजी
इंडियन स्ट्रगल	सुभाष चन्द्र बोस
इंडिया टुडे	रजनी पाम दत्त
डिस्कवरी ऑफ इंडिया	जवाहर लाल नेहरू
इंडिया विन्स फ्रीडम, अल हिलाल	अबुल कलाम आजाद
भारत विभाजन के गुनहागार	राम मनाहेर लोहिया
ब्रोकन विंग	सरोजिनी नायडू
द स्टोरी ऑफ माई लाइफ	मोरारजी देसाई
कामरेड	मुहम्मद अली
इंडिया फॉर इंडियन्स	चितरंजन दास
पाथेर देवी	शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय
सत्यार्थ प्रकाश	दयानंद सरस्वती
बम मैनुअल	पी. एन. वापट
बन्दी जीवन	शचीन्द्रनाथ सान्याल
भवानी मंदिर	अरविन्द घोष
युगान्तर वरीन्द्र कुमार घोष,	भूपेन्द्रनाथ दत्त
संध्या	मुखदाचरण
वर्तमान रणनीति	बरीन्द्र कुमार घोष
भारत माता	अजीत सिंह

- श्याम लाल ने झंडा गीत की रचना की।
- मोहम्मद इकबाल अपने शुरुआती दौर में हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधर थे तथा अपनी इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने 1905 ई. में '**सारे जहाँ से अच्छा**' की रचना की।
- **वन्दे मातरम्**, 'बंकिम चन्द्र चटर्जी' की पुस्तक **आनंद मठ** से लिया गया है।

(xxvii) अगस्त प्रस्ताव (1940) (August Proposal)

- काँग्रेस ने 1940 के **रामगढ़ अधिवेशन** (झारखण्ड) में प्रस्ताव पारित किया कि यदि भारत सरकार एक अंतरिम राष्ट्रीय सरकार का गठन करे तो काँग्रेस द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटिश सरकार का समर्थन करेगी।
- इस प्रस्ताव के जवाब में लिनलिथगो ने 8 अगस्त, 1940 को अगस्त प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमें भारत को **डोमेनियन स्टेट** का दर्जा देने की बात कही गई।

(xxviii) मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की माँग (Demand for Pakistan by Muslim League)

- मुसलमानों के लिए पृथक् राष्ट्र की **प्रथम बार एक सुस्पष्ट** अभिव्यक्ति 1930 में आयोजित मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधिवेशन में **मोहम्मद इकबाल** के सम्बोधन में हुई थी। इस अधिवेशन की अध्यक्षता मोहम्मद इकबाल ने ही की थी।
- कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले एक मुस्लिम छात्र **चौधरी रहमत अली** ने 28 जनवरी, 1933 को **'नाउ आर नेवर'** नामक एक पत्र में **'पाकिस्तान'** शब्द का प्रयोग इस प्रकार किया था।
  - → P – Punjab (पंजाब)
  - → A – Afghanistan (अफगानिस्तान)
  - → K – Kashmir (कश्मीर)
  - → S – Sindh (सिंध)
  - → TAN – **Blochistan** (बलूचिस्तान)
- मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन (22-23 मार्च, 1940) में पहली बार अलग पाकिस्तान के निर्माण का प्रस्ताव पारित किया गया। इस सम्मेलन के अध्यक्ष मुहम्मद अली जिन्ना थे।

(xxix) व्यक्तिगत सत्याग्रह (17 अक्टूबर, 1940) (Individual Satyagraha)

- व्यक्तिगत सत्याग्रह 17 अक्टूबर को महाराष्ट्र के पवनार आश्रम से शुरू हुआ। गाँधीजी ने प्रथम सत्याग्राही के रूप में **विनोबा भावे** को मनोनीत किया। **जवाहरलाल नेहरू** दूसरे सत्याग्रही थे। इस आंदोलन को **'दिल्ली चलो सत्याग्रह'** भी कहा जाता है।

(xxx) क्रिप्स प्रस्ताव (1942) (Cripps Proposal)

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल ने 11 मार्च, 1942 को स्टेफर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में क्रिप्स मिशन की घोषणा की।
- इसके अनुसार युद्ध के बाद **भारत को डोमेनियन राज्य** का दर्जा एवं संविधान निर्मात्री परिषद् बनाने का प्रस्ताव था।
- युद्ध के पश्चात् प्रांतीय व्यवस्थापिकाओं के निचले सदनों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर एक संविधान निर्मात्री परिषद् का गठन किया जाएगा जो देश के लिए संविधान का निर्माण करेगी।
- गाँधीजी ने क्रिप्स प्रस्तावों को **पोस्ट डेटेड चेक** (Post dated cheque) कहा, जिसमें **पं. जवाहर लाल नेहरू** ने **''जिसका बैंक नष्ट होने वाला था''** वाक्य जोड़ दिया।
- 11 अप्रैल, 1942 को क्रिप्स प्रस्तावों को वापस ले लिया गया।

(xxxi) भारत छोड़ो आंदोलन (1942) (Quit India Movement)

- 14 जुलाई, 1942 को **अबुल कलाम आजाद** की अध्यक्षता में वर्धा में काँग्रेस कार्य समिति की बैठक में **भारत छोड़ो आंदोलन** पर एक प्रस्ताव पारित किया।
- 8 अगस्त, 1942 को मुंबई के ग्वालियर टैंक मैदान में अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में काँग्रेस कमेटी की वार्षिक बैठक हुई जिसमें नेहरू द्वारा प्रस्तुत वर्धा प्रस्ताव की पुष्टि की गई।
- भारत छोड़ो प्रस्ताव का प्रारूप **मौलाना अबुल कलाम आजाद** ने बनाया था।
- आंदोलन के समय गाँधीजी ने **'करो या मरो'** (Do or die) का नारा दिया।
- यह आंदोलन 8-9 अगस्त, 1942 से आरंभ होना था, लेकिन 9 अगस्त को सूर्योदय के पहले ही गाँधीजी, नेहरू, पटेल, मौलाना आजाद, सरोजिनी नायडू आदि को **ऑपरेशन जीरो ऑवर के तहत** गिरफ्तार कर लिया गया। गाँधीजी को कस्तूरबा गाँधी और सरोजिनी नायडू के साथ आगा खाँ पैलेस में रखा गया। जवाहरलाल नेहरू को अल्मोड़ा जेल में, राजेन्द्र प्रसाद को बांकीपुर जेल में और जयप्रकाश नारायण को हजारीबाग जेल में रखा गया।
- राम मनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन, अरुणा आसफ अली, जयप्रकाश नारायण (हजारीबाग जेल से फरार होने के बाद) ने भूमिगत रहते हुए आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया।
- **ऊषा मेहता** ने 14 अगस्त, 1942 को सर्वप्रथम बंबई से रेडियो प्रसारण का कार्य किया।
- गाँधीजी ने 10 फरवरी, 1943 को जेल में 21 दिनों तक उपवास करने की घोषणा की।
- इस आंदोलन के दौरान गाँधीजी के साथ अमेरिकी पत्रकार **लुई फिशर** भी थे।
- 23 मार्च, 1943 को मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान दिवस मनाने का निश्चय किया।

भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान जेलों में प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी (Famous Freedom Fighters Sent to Jail During Quit India Movement)

नेता	स्थल
1. महात्मा गाँधी	आगा खाँ पैलेस (पुणे)
2. सरोजिनी नायडू	आगा खाँ पैलेस (पुणे)
3. पं. जवाहरलाल नेहरू	अहमदनगर (महाराष्ट्र)
4. गोविन्द बल्लभ पंत	अहमदनगर (महाराष्ट्र)
5. डॉ. प्रफुल्ल चन्द्र घोष	अहमदनगर (महाराष्ट्र)
6. डॉ. पट्टाभि सीतारमैया	अहमदनगर (महाराष्ट्र)
7. डॉ. सैय्यद महमूद	अहमदनगर (महाराष्ट्र)
8. आचार्य जे.वी. कृपलानी	अहमदनगर (महाराष्ट्र)
9. राजेन्द्र प्रसाद	बाकीपुर जेल (पटना)
10. जयप्रकाश नारायण	हजारीबाग (झारखंड)

Note : जवाहर लाल नेहरू 12 नवम्बर, 1942 को जेल की दीवार से कूदकर भाग गए और जेल में ही उन्होंने 'भारत एक खोज' नामक पुस्तक की रचना की।

(xxxii) समानान्तर सरकार (Parallel Government)

- **तामलुक जातीय सरकार :** इसकी स्थापना बंगाल के मिदनापुर जिले के तामलुक नामक स्थान पर हुई। यहाँ एक सशस्त्र विद्युत वाहिनी का गठन हुआ।
- बलिया में **चितू पांडे** ने समानांतर सरकार स्थापित की।
- सतारा (महाराष्ट्र) में वाई. पी. चह्वाण और नाना पाटिल ने समानांतर सरकार की स्थापना की।

(xxxiii) आजाद हिन्द फौज (Azad Hind Fauj)

- सितंबर, 1941 में **कैप्टन मोहन सिंह** ने मलाया में आजाद हिन्द फौज की स्थापना की। सुभाष चन्द्र बोस ने अक्टूबर, 1943 में **सिंगापुर** में **आजाद हिन्द फौज** की स्थापना कर उसमें नई जान डाली।
- यहीं पर उन्होंने–**'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा'** और **'दिल्ली चलो'** का नारा दिया। 6 जुलाई, 1944 को आजाद हिन्द रेडियो के प्रसारण में बोस ने गाँधीजी को **'राष्ट्रपिता'** कह कर संबोधित किया।
- यहाँ यह उल्लेखनीय है, कि वर्ष 2012 में **सूचना के अधिकार** में पूछे गए प्रश्न के उत्तर में यह ज्ञात हुआ कि भारत सरकार द्वारा महात्मा गाँधी को **राष्ट्रपिता** की आधिकारिक उपाधि प्रदान नहीं की गई है।
- अंग्रेज सरकार ने आजाद हिन्द फौज के गिरफ्तार **मेजर शाहनवाज खाँ, कर्नल प्रेम सहगल** और **गुरु दयाल सिंह** पर नवंबर, 1945 में दिल्ली के लाल किले में मुकदमा चलाया।
- बचाव पक्ष के वकीलों में **भूलाभाई देसाई** के नेतृत्व में **तेज बहादुर सप्रू, अरुणा आसफ अली, नेहरू** आदि ने अदालत में बहस की।
- इन अधिकारियों को फाँसी की सजा सुनाई गई, लेकिन वेवेल ने उनकी सजा माफ कर दी।
- 12 नवम्बर, 1945 को **'आजाद हिन्द फौज दिवस'** मनाया गया।

(xxxiv) शाही नौसेना विद्रोह (1946) (Royal Navy Revolt)

एच.एम.आई.एस. तलवार के भारतीय नौसैनिकों ने अंग्रेजों की भेदभावपूर्ण नीति के विरुद्ध 18 फरवरी, 1946 को बंबई में विद्रोह कर दिया। **वल्लभभाई पटेल** एवं **जिन्ना** के हस्तक्षेप से यह विद्रोह शांत हुआ।

(xxxv) वैवेल योजना और शिमला सम्मेलन

वैवेल योजना मुख्यतः कार्यकारी परिषद् से सम्बन्धित थी। वैवेल योजना के अनुसार 25 जून, 1945 को शिमला में सम्मेलन शुरू हुआ। इसमें काँग्रेस का नेतृत्व अबुल कलाम आजाद ने किया।

(xxxvi) कैबिनेट मिशन योजना (24 मार्च, 1946) (Cabinet Mission Plan)

- जनवरी, 1946 में **वॉयसराय लॉर्ड वेवेल** ने घोषणा की कि वह शीघ्र ही भारतीय नेताओं की एक कार्यकारिणी समिति तथा एक संविधान निर्मात्री संस्था का गठन करने की इच्छुक हैं।
- कैबिनेट मिशन 24 मार्च, 1946 को भारत आया। **सर स्टेफर्ड क्रिप्स** (अध्यक्ष–बोर्ड ऑफ ट्रेड), **अलेक्जेंडर** (नौसेना मंत्री) और **पेथिक लारेंस** (भारत सचिव) इसके सदस्य थे।

  16 मई, 1946 को कैबिनेट मिशन ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की–
- एक भारतीय संघ स्थापित होगा जिसमें देशी राज्य व ब्रिटिश भारत के प्रांत सम्मिलित होंगे। यह संघ वैदेशिक, रक्षा तथा यातायात विभागों की व्यवस्था करेगा।
- संविधान निर्माण के लिए **'संविधान सभा'** के गठन की बात कही गई।
- शिष्ट मण्डल ने पाकिस्तान सम्बन्धी माँग को स्वीकार नहीं किया।
- गाँधीजी ने कैबिनेट मिशन का समर्थन किया था।
- कैबिनेट मिशन योजना के अंतर्गत जुलाई, 1946 में संविधान सभा का गठन किया गया।
- संविधान सभा की प्रथम बैठक 9 दिसम्बर, 1946 ई. को सच्चिदानन्द सिन्हा की अध्यक्षता में हुई वह संविधान सभा के अस्थायी अध्यक्ष थे।
- 16 अगस्त, 1946 को मुस्लिम लीग ने सीधी कार्यवाही दिवस की शुरुआत की।
- 2 सितंबर, 1946 को नेहरू की अध्यक्षता में **अंतरिम सरकार** का गठन हुआ।

(xxxvii) एटली घोषणा–पत्र (20 फरवरी, 1947) (Atlee's Declaration)

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने **हाउस ऑफ कॉमन्स** में 20 फरवरी, 1947 को यह घोषणा की कि अंग्रेज जून, 1948 के पहले भारतीयों को सौंप देना चाहते हैं।
- **लॉर्ड माउंटबेटन** को भारत का **नया वायसराय** नियुक्त किया गया।

(xxxviii) माउंटबेटन योजना (3 जून, 1947) (Mountbatton Plan)

- लॉर्ड माउंटबेटन 22 मार्च, 1947 को भारत के 34वें और अंतिम ब्रिटिश गवर्नर जनरल बनकर भारत आये।
- माउंटबेटन ने 15 अगस्त, 1947 को भारतीयों को सत्ता सौंपने का दिन निर्धारित किया।
- इस योजना को **डिकी बर्ड योजना** भी कहा जाता है।

(xxxix) भारत स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 (Indian Independence Act 1947)

- ब्रिटिश संसद ने 18 जुलाई, 1947 को भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 पारित किया।
- 14 अगस्त, 1947 को पाकिस्तान और 15 अगस्त, 1947 को भारत अस्तित्व में आया।
- पाकिस्तान के पहले गवर्नर जनरल **कायदे आजम मुहम्मद अली जिन्ना** बने और लियाकत अली पहले प्रधानमंत्री।
- माउंटबेटन स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल बना और जवाहरलाल नेहरू प्रथम प्रधानमंत्री बने।
- स्वतंत्र भारत के पहले भारतीय और अंतिम गवर्नर जनरल **सी. राजगोपालाचारी** बने।

22. भारत के गवर्नर-जनरल (Governor-General of India)

(I) राबर्ट क्लाइव (1757–1772) (Robert Clive)

- क्लाइव बंगाल का पहला गवर्नर था।
- अवध के नवाब शुजाउद्दौला एवं शाह आलम के साथ 1765 में इलाहाबाद की संधि हुई।
- बक्सर का युद्ध इसी के शासन काल में लड़ा गया।

(II) वारेन हेस्टिंग्स (1772–1785) (Warren Hastings)

- यह बंगाल का पहला गवर्नर जनरल था।
- हेस्टिंग्स को भारत में **न्यायिक सेवा का जन्मदाता** माना जाता है।
- इसने 1781 में कलकत्ता में मुस्लिम शिक्षा के लिए प्रथम मदरसा स्थापित किया।
- रेग्यूलेटिंग एक्ट, 1773 में कलकत्ता में एक सुप्रीम कोर्ट में स्थापित किया गया। इसका प्रथम मुख्य न्यायाधीश **'एलिजा इम्पे'** था।
- वह पहला गवर्नर जनरल था जिस पर इंग्लैंड लौटने पर महाभियोग चलाया गया।
- 1784 में विलियम जोन्स के साथ मिलकर **द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल** की स्थापना की।

(III) लॉर्ड कार्नवालिस (1786–93) (Lord Cornwallis)

- इसे भारत में **सिविल सेवा का जनक** माना जाता है।
- इसने 1793 ई. में बंगाल, बिहार में स्थायी बंदोबस्त लागू किया।
- कार्नवालिस की मृत्यु **उत्तर प्रदेश के गाजीपुर** जिले में हुई।

(IV) सर जॉन शोर (1793–98) (Sir John Shore)

- इसके समय 1795 में निजाम तथा मराठों के बीच खेड़ा की लड़ाई हुई।

(V) लॉर्ड वेलेजली (1798–1805) (Lord Welessley)

- भारतीय राज्यों को अंग्रेजी परिधि में लाने के लिए सहायक संधि प्रणाली का प्रयोग किया। सहायक संधि स्वीकार करने वाले राज्य थे–हैदराबाद (1798 ई.), मैसूर (1799 ई.), तंजौर (अक्टूबर, 1799 ई.), अवध (1801 ई.), पेशवा (दिसम्बर, 1801) बरार एवं भोंसले (दिसम्बर, 1803 ई.), सिंधिया (1804 ई.)।
- 1800 में कलकत्ता में **फोर्ट विलियम कॉलेज** की स्थापना की।
- 1802 में पेशवा बाजीराव द्वितीय के साथ बेसीन की संधि की।

(VI) सर जॉर्ज बार्लो (1805–1807) (Sir George Barlow)

- होल्कर के साथ सहायक संधि (राजपुरघाट की संधि) की।
- इसके समय में **वेल्लौर का विद्रोह** (1806 ई.) में हुआ, जिसमें अनेक सैनिक मारे गये। भारत में होने वाला प्रथम सैनिक विद्रोह था। यह माथे पर टीका व कानों में बाली न पहनने के बदले हुआ था।

(VII) लॉर्ड मिन्टो प्रथम (1807–1813) (Lord Minto I)

- 1809 में महाराजा रंजीत सिंह के साथ अमृतसर की संधि की।
- 1813 के चार्टर में शिक्षा पर एक लाख रुपए खर्च का बजट रखा गया।

(VIII) लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813–1823) (Lord Hastings)

- अंग्रेज–नेपाल युद्ध (1814–16) तथा संगोली की संधि।
- मद्रास में टामस मुनरो द्वारा **रैयतवाड़ी की व्यवस्था** लागू की गई।
- इसी के समय में 1822 में टैनसी एक्ट या काश्तकारी अधिनियम लागू हुआ।
- इसे पिण्डारियों के दमन का श्रेय दिया जाता, जिसके नेता–**करीम, वालिस** व **चीतू** थे।

(IX) लॉर्ड एमहर्स्ट (1823–28) (Lord Emherst)

- प्रथम आंग्ल–बर्मा युद्ध (1824–28)
- इसके समय में 1824 में **बैरकपुर छावनी** में सैनिक विद्रोह हुआ, क्योंकि यहाँ भी सैनिकों को तिलक लगाना मना किया गया था।

(X) लॉर्ड विलियम बैंटिंक (1828–35) (Lord William Bentinck)

- राजा राममोहन राय के सहयोग से बैंटिक ने **नियम 17** के अन्तर्गत **सती प्रथा का अंत (1829), कर्नल स्लीमैन** की सहायता से ठगी का अंत (1830)।
- रंजीत सिंह के साथ निरंतर मित्रता की संधि।
- इसके समय में लॉर्ड मैकाले की सिफारिशों के बाद अंग्रेजी

को शिक्षा का माध्यम स्वीकार कर लिया गया। **मैकाले** ने इस विषय पर कहा था, ''**यूरोप के पुस्तकालय की एक अलमारी पूरे भारत और अरब के समस्त साहित्य के बराबर है।**''

(XI) चार्ल्स मैटकॉफ (1835–36) (Charles Metcalfe)

- इन्हें **भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता** के रूप में जाना जाता है।

(XII) लॉर्ड आकलैंड (1836–42) (Lord Aukland)

- प्रथम आंग्ल–अफगान युद्ध (1836–42) एवं ग्वालियर के साथ युद्ध (1843) ।
- इसने शेरशाह सूरी मार्ग का नाम बदलकर ग्राण्ड ट्रंक रोड रखा।

(XIII) लॉर्ड एलेनबरो (1842–44) (Lord Ellenborough)

- 1843 में दास प्रथा का अंत। (अधिनियम 1833 के नियम 5 के तहत)।
- इसका कार्यकाल **कुशल अकर्मण्यता की नीति** का काल कहा जाता है।

(XIV) लॉर्ड हार्डिंग (1848–48) (Lord Harding)

- प्रथम आंग्ल–सिख युद्ध तथा लाहौर की संधि (1846) ।
- उड़ीसा में खोंडो के बीच प्रचलित **नर बलि की प्रथा को समाप्त** किया।
- हार्डिंग ने रविवार की छुट्टी घोषित की।
- हार्डिंग ने सर्वप्रथम **'स्टैण्डर्ड यूनिट'** का प्रचलन प्रारम्भ करवाया।

(XV) लॉर्ड डलहौजी (1848–56) (Lord Dalhausie)

- व्यपगत के सिद्धांत (Doctrine of lapse) की नीति से सतारा (1848), जैतपुर व संभलपुर (1849), उदयपुर (1852), झाँसी (1853), नागपुर (1854) तथा कुशासन के आरोप में अवध (1856) को कंपनी में मिलाया।
- रेलवे माइनूट, 1853 में **बंबई से थाणे** तक रेल का परिचालन। इसे **भारत में रेलवे का जनक** माना जाता है।
- 1854 के डाक टिकट का प्रचलन, पहली बार **सार्वजनिक निर्माण विभाग** तथा **लोक शिक्षा विभाग** (1854) की स्थापना।
- भारत में प्रथम टेलीग्राफ लाइन (कलकत्ता से आगरा) 1853 में शुरू हुई।
- इसने शिमला को ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया।

23. भारत के वायसराय (Viceroy's of India)

(I) लॉर्ड कैनिंग (1856–62) (Lord Canning)

- यह कंपनी का अंतिम गवर्नर जनरल एवं भारत का पहला वायसराय था।
- 1857 के विद्रोह के समय कैनिंग गवर्नर–जनरल था।
- यूरोपीय सेना द्वारा श्वेत विद्रोह (1859)।
- भारतीय विधि संहिता (1859), भारतीय दण्ड संहिता (1860), का निर्माण।
- लंदन विश्वविद्यालय की तर्ज पर **कलकत्ता, मद्रास** और **मुम्बई** में विश्वविद्यालय की स्थापना (1857)।
- 1856 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित।
- व्यपगत सिद्धान्त (Doctrine of Lapse) यानी राज्य–विलय नीति को समाप्त कर दिया गया।

(II) लॉर्ड एल्गिन (1862–63) (Lord Elgin)

- पश्चिम उत्तर सीमा प्रांत में **कबाइलियों के दमन** के लिए **अम्बेला अभियान** चलाया।
- विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहन।
- 1863 ई. धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में इसकी मृत्यु।

(III) सर जॉन लारेन्स (1864–69) (Sir John Lawrence)

- 1865 में कलकत्ता, बंबई तथा मद्रास उच्च न्यायालयों की स्थापना।
- अफगानिस्तान के संबंध में इसने अहस्तक्षेप की नीति अपनाई, जिसे **'शानदार निष्क्रियता'** के नाम से जाना जाता है।
- इसी के समय में उड़ीसा में 1866 ई. में तथा बुंदेलखंड एवं राजपूताना में 1868-69 ई. में भीषण अकाल पड़ा।
- इसने **चेम्बवेल हेनरी** के नेतृत्व में **अकाल आयोग** का गठन किया।
- सन् 1865 ई. में इसके द्वारा भारत एवं यूरोप के बीच **प्रथम समुद्री टेलीग्राफ** सेवा शुरू की गई।

(IV) लॉर्ड मेयो (1869–72) (Lord Mayo)

- कठियावाड़ में राजकोट कॉलेज तथा अजमेर में **मेयो कॉलेज** (1869) की स्थापना।
- भारतीय सांख्यिकी सर्वेक्षण एवं **कृषि एवं वाणिज्य विभाग** की स्थापना।
- 1871 में भारत की **प्रथम जनगणना**।
- एक अफगाान शेरखान ने 1872 ई. में चाकू मारकर अण्डमान में हत्या की।

(V) लॉर्ड नॉर्थब्रुक (1872–76) (Lord Northbrooke)

- पंजाब में कूका विद्रोह (1872) ।
- ब्रह्म मैरिज एक्ट, 1872 पारित पर बाल विवाह पर प्रतिबंध।
- इसी के समय श्वेज नहर खुल जाने से भारत एवं ब्रिटेन के बीच व्यापार में वृद्धि।

(VI) लॉर्ड लिटन (1876–80) (Lord Lytton)

- **रिचर्ड स्ट्रैची** की अध्यक्षता में एक **अकाल आयोग** की नियुक्ति की।
- महारानी विक्टोरिया को 1 जनवरी, 1877 ई. को **केसर–ए–हिन्द** की उपाधि प्रदान करने के लिए दिल्ली दरबार का आयोजन।
- **वर्नाकुलर प्रेस एक्ट, 1878** के तहत भारतीय भाषा के समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगाया। यह एक्ट **'सोम प्रकाश'** समाचार पत्र को दंडित करने के लिए लाया गया।
- आर्म्स एक्ट (1878) पारित।
- सिविल सेवा परीक्षा की उम्र को घटाकर 21 से 19 वर्ष किया गया।
- अलीगढ़ में एक मुस्लिम एंग्लो प्राच्य महाविद्यालय की स्थापना की गई।

(VII) लॉर्ड रिपन (1880–84) (Lord Rippon)

- फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने इन्हें भारत का उद्धारक कहा। इसने वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट 1882 में समाप्त किया।
- इन्हें **स्थानीय स्वशासन का जनक** भी कहा गया।
- प्रथम वास्तविक जनगणना 1881 में हुई।
- **इल्बर्ट बिल विवाद** (1883–84) के कारण इन्हें कार्यकाल समाप्त होने से पूर्व त्यागपत्र देना पड़ा। इस विधेयक में भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपियों के मुकदमे सुनने का अधिकार दिया गया था।

(VIII) लॉर्ड डफरिन (1884–88) (Lord Duferin)

- 1885 में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना।
- इलाहाबाद विश्वविद्यालय (1887) की स्थापना, जिसे **'पूर्व का ऑक्सफोर्ड'** कहा गया।

(IX) लॉर्ड लैन्सडाउन (1888–94) (Lord Landsdown)

- भारत और अफगानिस्तान के मध्य सीमा निर्धारण हेतु **डूरण्ड आयोग** की स्थापना (1893) ।
- 1892 में अप्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली की शुरुआत।

(X) लॉर्ड एल्गिन द्वितीय (1894–99) (Lord Elgin II)

- अकाल की जाँच के लिए लायल आयोग का गठन।

(XI) लॉर्ड कर्जन (1899–1905) (Lord Curzon)

- सर एण्ड्रयू फ्रेजर की अध्यक्षता में पुलिस आयोग एवं **स्काट मानक्रीफ** की अध्यक्षता में **सिंचाई आयोग** की स्थापना।
- मैकडोनाल्ड की अध्यक्षता में **अकाल आयोग** का गठन।
- 1903 में पुलिस विभाग में सी.आई.डी. की स्थापना।
- पूसा (बिहार) में कृषि अनुसंधान केन्द्र की स्थापना और 1905 में रेलवे बोर्ड की स्थापना।
- 1905 में विक्टोरिया मेमोरियल की स्थापना।
- शैक्षिक सुधारों के अन्तर्गत सर टॉमस रैले की अध्यक्षता में 1902 ई. में **विश्वविद्यालय आयोग** का गठन किया गया तथा **भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम** पास हुआ।
- ऐतिहासिक इमारतों की सुरक्षा व मरम्मत हेतु **'भारतीय पुरातत्व विभाग** (1904 ई.) की स्थापना।
- '**फूट डालो राज करो**' की नीति पर 1905 ई. में बंगाल का विभाजन।

(XII) लॉर्ड मिंटो द्वितीय (1905–1910) (Lord Minto II)

- इसके समय में **आगा खाँ** एवं **सलीम उल्ला खाँ** के नेतृत्व में ढाका में 1906 ई. में मुस्लिम लीग की स्थापना।
- स्वदेशी आंदोलन (1905)।
- 1907 ई. के काँग्रेस के सूरत अधिवेशन में काँग्रेस का **गरम दल** एवं **नरम दल** में विभाजन हो गया।
- मार्ले–मिंटो सुधार अधिनियम, 1909 जिसके द्वारा मुसलमानों के लिए पृथक् निर्वाचन व्यवस्था।

(XIII) लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय (1910–1916) (Lord Harding II)

- दिल्ली दरबार में 12 दिसंबर, 1911 को राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित करने की घोषणा। यह राजधानी अप्रैल 1912 ई. में बनी। इसी दरबार में बंगाल विभाजन रद्द करने की घोषणा की गई।
- 28 जुलाई, 1914 को प्रथम विश्वयुद्ध की शुरुआत।
- 1916 में वाराणसी में मदन मोहन मालवीय द्वारा बनारस **हिन्दू विश्वविद्यालय** एवं **हिन्दू महासभा** की स्थापना।
- 1913 में रवीन्द्रनाथ टैगोर को साहित्य का नोबेल पुरस्कार।

(XIV) लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916–21) (Lord Chemsford)

- पूना में डी.के. कर्वे द्वारा **महिला विश्वविद्यालय** की स्थापना।
- 1919 के संवैधानिक सुधार अधिनियम द्वारा प्रांतों में द्वैध शासन लागू।
- इसके समय में 1917 ई. में शिक्षा पर **सैडलर आयोग** का गठन किया गया।
- इसी के कार्यकाल में **रॉलेट एक्ट** पारित हुआ।
- इसी के समय में 13 अप्रैल 1919 को **जलियाँवाला बाग** (अमृतसर) हत्याकाण्ड हुआ।
- इसी के कार्यकाल में काँग्रेस का लखनऊ अधिवेशन (1916 ई.), इसी अधिवेशन में कांग्रेस–लीग समझौता हुआ।

(XV) लॉर्ड रीडिंग (1921–26) (Lord Reading)

- प्रिंस आफ वेल्स का भारत आगमन, केरल में मोपला विद्रोह।
- एम.एन. राय द्वारा **भारतीय साम्यवादी दल** का गठन (1921)
- 1922 में कलकत्ता में **विश्व भारती विश्वविद्यालय** का गठन।
- द्वैध शासन के मूल्यांकन के लिए **मूडीमैन कमिटी** का गठन (1924)।
- 1923 में चितरंजन दास एवं मोती लाल नेहरू द्वारा स्वराज पार्टी की स्थापना।

(XVI) लॉर्ड इरविन (1926–31) (Lord Irwin)

- 1929 में **शारदा एक्ट** पारित।
- 1927 में साइमन कमीशन की नियुक्ति।
- 5 मार्च, 1931 को गाँधी इरविन समझौता ।

(XVII) लॉर्ड विलिंगटन (1931–36) (Lord Wellington)

- द्वितीय एवं तृतीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन।
- इंडियन मिलिट्री एकेडमी; देहरादून की स्थापना 1932।
- भारत सरकार अधिनियम, 1935 द्वारा प्रांतों में द्वैध शासन समाप्त और केन्द्र में शुरू।
- 16 अगस्त, 1932 को रैम्जे मैकडॉनाल्ड के विवादास्पद **'साम्प्रदायिक पंचाट'** की घोषणा।

(XVIII) लॉर्ड लिनलिथगो (1936–44) (Lord Linlithgous)

- 1 दिसंबर, 1939 को **द्वितीय विश्वयुद्ध** की शुरुआत।
- विंस्टन चर्चिल ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बने।

- 14 जुलाई को **भारत छोड़ो प्रस्ताव** पारित हुआ।
- मुस्लिम लीग के **लाहौर अधिवेशन (1940)** में पहली बार पाकिस्तान की माँग की गई।
- 1 मई 1939 को **सुभाष चन्द्र बोस** ने **'फारवर्ड ब्लॉक'** नाम की नई पार्टी का गठन किया।

(XIX) लॉर्ड वेवेल (1944–47) (Lord Wavell)

- राजगोपालाचारी ने सी.आर. फार्मूला प्रस्तुत किया।
- 22 मार्च, 1946 को कैबिनेट मिशन भारत आया।
- मुस्लिम लीग ने 16 अगस्त, 1946 को **सीधी कार्यवाही दिवस** का आयोजन किया।
- सच्चिदानन्द सिन्हा की अध्यक्षता में संविधान सभा की प्रथम बैठक 9 दिसंबर, 1946 को हुई।
- 20 फरवरी, 1947 ई. को प्रधानमंत्री लॉर्ड क्लीमेंट एटली (लेबर पार्टी) ने हाउस ऑफ कॉमंस में यह घोषणा की कि जून, 1948 ई. तक प्रभुसत्ता भारतीयों के हाथ में दे देंगे।

(XX) लॉर्ड माउण्टबेटन (1947–48) (Lord Mountbatton)

- 3 जून, 1947 को भारत विभाजन की माउंटबेटेन योजना की घोषणा की गई।
- 4 जुलाई, 1947 को ब्रिटिश संसद में एटली द्वारा भारतीय स्वतन्त्रता विधेयक प्रस्तुत किया गया, जिसे 18 जुलाई को स्वीकृति मिली। विधेयक के अनुसार भारत और पाकिस्तान दो स्वतन्त्र राष्ट्रों की घोषणा की गई।
- स्वतंत्र भारत के पहले अंग्रेजी गवर्नर।

(XXI) सी. राजगोपालाचारी (1948–50) (C. Rajgopalachari)

- भारत के अंतिम तथा स्वतंत्र भारत के पहले भारतीय गवर्नर जनरल।
- 26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू होने के साथ ही भारत में गवर्नर जनरल का पद समाप्त हो गया।
- राजेन्द्र प्रसाद गणतंत्र भारत के पहले राष्ट्रपति निर्वाचित हुए।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. गजनी का वह प्रथम शासक कौन था जो खलीफाओं से 'सुल्तान' की उपाधि धारण कर कहलाने वाला प्रथम शासक बना ?
(A) सुबुक्तगीन (B) महमूद गजनवी
(C) मुहम्मद गौरी (D) अलप्तगीन

2. महमूद गजनवी के सभी आक्रमणों (1000 ई. से 1026 ई. के बीच) में सर्वाधिक महत्त्पूर्ण आक्रमण कौन-सा था ?
(A) मुल्तान भटिंडा पर आक्रमण (1004)
(B) नारायणपुर पर आक्रमण (1002)
(C) सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण (1025-26)
(D) कालिंजर पर आक्रमण (1019-23)

3. दिल्ली सल्तनत की दरबारी भाषा थी—
(A) उर्दू (B) फारसी
(C) हिन्दी (D) अरबी

4. निम्नलिखित में से किस खिलजी शासक ने दिल्ली के राजसिंहासन पर बैठने के लिए अपने ससुर की हत्या कर दी थी ?
(A) कुतुबुद्दीन ऐबक ने
(B) जलालुद्दीन खिलजी ने
(C) गियासुद्दीन बलबन ने
(D) अलाउद्दीन खिलजी ने

5. महमूद गजनवी ने भारत में प्रथम आक्रमण किस राज्य के विरुद्ध किया ?
(A) हिन्दूसाही/ब्राह्मणसाही
(B) अलवर
(C) काठियावाड़ के सोलंकी
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

6. 'लाखबख्श' के नाम से जाना जाने वाला भारतीय शासक कौन था ?
(A) बाबर (B) अकबर
(C) कुतुबुद्दीन ऐबक (D) इल्तुतमिश

7. कुतुबमीनार के कार्य को किसने पूरा किया था ?
(A) रजिया (B) कुतुबुद्दीन ऐबक
(C) इल्तुतमिश (D) बलबन

8. निम्नांकित में से दिल्ली का पहला तुगलक सुल्तान कौन था ?
(A) गयासुद्दीन तुगलक
(B) मलिक तुगलक
(C) मुहम्मद-बिन-तुगलक
(D) फिरोज तुगलक

9. दक्षिण अफ्रीकी यात्री इब्नबतूता किसके शासन-काल में भारत आया था ?
(A) हुमायूँ
(B) अकबर
(C) मुहम्मद-बिन-तुगलक
(D) अलाउद्दीन खिलजी

10. वैहिन्द का युद्ध (1008-09) निम्नलिखित में किनके बीच लड़ा गया ?
(A) महमूद गजनवी और आनंदपाल
(B) महमूद गजनवी और जयपाल
(C) मुहम्मद गौरी और पृथ्वीराज चौहान
(D) मुहम्मद गौरी और जयचंद

11. 1526 ई. में बाबर ने किस वंश के शासक को परास्त कर मुगल साम्राज्य की नींव डाली ?
(A) सैयद वंश (B) लोदी वंश
(C) तुगलक वंश (D) खिलजी वंश

12. पानीपत का प्रथम युद्ध कब हुआ ?
(A) 21 अप्रैल, 1529
(B) 21 अप्रैल, 1526
(C) 20 अप्रैल, 1527
(D) 15 अप्रैल, 1528

13. भारत में ग्रांड ट्रंक रोड बनवाई थी—
(A) अशोक ने (B) शेरशाह सूरी ने
(C) अकबर ने (D) हुमायूँ ने

14. प्रसिद्ध मुस्लिम शासिका चांद बीबी, जिसने बरार को अकबर को सौंपा, निम्नलिखित में से किस राज्य से संबंधित थी ?
(A) बीजापुर (B) गोलकुंडा
(C) अहमदनगर (D) बरार

15. किस युद्ध से भारत में मुगल राज्य की नींव पड़ी ?
(A) प्लासी का युद्ध
(B) तालीकोटा का युद्ध
(C) पानीपत का प्रथम युद्ध
(D) हल्दीघाटी का युद्ध

16. 'हुमायूँनामा' किसने लिखा था ?
(A) गुलबदन बेगम (B) मुमताज महल
(C) जहाँआरा बेगम (D) रोशनआरा बेगम

17. अकबर के शासन में 'महाभारत' का फारसी भाषा में अनुवाद किया गया था, वह किस नाम से जाना जाता है ?
(A) इकबालनामा
(B) रज्मनामा
(C) अकबरनामा
(D) सकीनत-उल-औलिया

18. अकबर की युवावस्था में उसका संरक्षक था—
(A) हेमू (B) फैजी
(C) अबुल फजल (D) बैरम खाँ

19. निम्नलिखित में से कौन-सी आत्मकथा है ?
(A) अकबरनामा
(B) हुमायूँनामा
(C) पादशाहनामा
(D) तुजुक-ए-बाबरी (बाबरनामा)

20. सम्राट् अकबर द्वारा किसको 'जरीकलम' की उपाधि से अलंकृत किया गया था ?
(A) मोहम्मद हुसैन (B) मुहम्मद खाँ
(C) अब्दुस्समद (D) मीर सैयद अली

21. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए–

सूची-I (आचार्य)		**सूची-II (मत / विचारधारा / वाद)**
(a) रामानुज आचार्य	1.	विशिष्टाद्वैत
(b) निम्बार्क आचार्य	2.	द्वैताद्वैत/भेदाभेद
(c) मध्वय आचार्य	3.	द्वैत
(d) विष्णु स्वामी	4.	शुद्धाद्वैत

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	3	4
(C)	1	2	4	3
(D)	4	3	2	1

22. महाराष्ट्र में भक्ति संप्रदाय निम्नलिखित में से किसकी शिक्षाओं द्वारा फैला था ?
(A) संत तुकाराम
(B) संत ज्ञानेश्वर
(C) समर्थ गुरु रामदास
(D) चैतन्य महाप्रभु

23. कबीर के गुरु कौन थे ?
(A) रामानुज (B) रामानंद
(C) वल्लभाचार्य (D) नामदेव

24. चैतन्य महाप्रभु किस संप्रदाय से जुड़े थे ?
(A) श्री संप्रदाय (B) वारकरी संप्रदाय
(C) गौड़ीय संप्रदाय (D) इनमें से कोई नहीं

25. पुष्टि मार्ग के दर्शन की स्थापना किसने की ?
(A) चैतन्य ने (B) नानक ने
(C) सूरदास ने (D) वल्लभाचार्य ने

26. अद्वैतवाद के सिद्धांत के प्रतिपादक कौन थे ?
(A) रामानुज (B) शंकराचार्य
(C) मध्वाचार्य (D) विवेकानंद

27. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए–

सूची-I (संतों के नाम)		**सूची-II (संतों के कार्य–क्षेत्र)**
(a) वल्लभाचार्य	1.	उत्तर प्रदेश, राजस्थान
(b) चैतन्य महाप्रभु	2.	बंगाल
(c) मीराबाई	3.	राजस्थान
(d) नामदेव	4.	महाराष्ट्र

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	2	1	3	4
(C)	1	2	4	3
(D)	4	3	2	1

28. भक्ति आंदोलन का प्रारंभ किया गया–
(A) आलवार-नयनार संतों द्वारा
(B) सूफी-संतों द्वारा
(C) सूरदास द्वारा
(D) तुलसीदास द्वारा

29. 'बीजक' का रचयिता कौन है ?
(A) सूरदास (B) कबीर
(C) रैदास (D) पीपा

30. बुद्ध और मीराबाई के जीवन दर्शन में मुख्य साम्य था–
(A) अहिंसा व्रत का पालन
(B) निर्वाण के लिए तपस्या
(C) संसार दुखपूर्ण है
(D) सत्य बोलना

31. 'केप ऑफ गुड होप' के रास्ते भारत के समुद्री मार्ग की खोज किसने की थी ?
(A) वास्कोडिगामा
(B) अमंडसेन
(C) क्रिस्टोफर कोलंबस
(D) जॉन काबोट

32. पुर्तगाली यात्री वास्कोडिगामा का कालीकट आने पर भव्य स्वागत करने वाले भारतीय राजा का नाम बताइये।
(A) इस्माइल मुल्क (B) देवराय
(C) जमोरिन (D) कृष्णदेवराय

33. भारत में डच का सबसे प्रारंभिक उपनिवेश कहाँ था ?
(A) मसूलीपट्टनम् (B) पुलीकट
(C) सूरत (D) अहमदाबाद

34. निम्न में से कौन-सा भारत आने वाला पहला अंग्रेजी जहाज़ है ?
(A) एलिजाबेथ (B) बंगाल
(C) रेड ड्रेगन (D) मेफ्लावर

35. 1651 में मुगलों द्वारा बंगाल में किस स्थान पर ईस्ट इंडिया कंपनी को व्यापार करने और फैक्ट्री बनाने की अनुमति दी गई थी ?
(A) कलकत्ता (B) कासिम बाज़ार
(C) सिंगूर (D) बर्दवान

36. अंग्रेजों ने निम्नलिखित स्थानों पर जिस क्रम में अपने व्यापार केंद्र स्थापित किए, उनका सही कालानुक्रम है–
(A) कलकत्ता, बंबई, मद्रास, सूरत
(B) बंबई, मद्रास, सूरत, कलकत्ता
(C) सूरत, मद्रास, बंबई, कलकत्ता
(D) सूरत, मद्रास, कलकत्ता, बंबई

37. बंगाल का पहला गवर्नर जनरल कौन था ?
(A) रॉबर्ट क्लाइव (B) वारेन हेस्टिंग्स
(C) विलियम बेंटिक (D) कॉर्नवालिस

38. अल्बुकर्क ने गोवा को 1510 ई. में किससे छीना था ?
(A) राजा जमोरिन से
(B) बीजापुर के सुल्तान से
(C) फ्रांस से
(D) इंग्लैण्ड से

39. भारत के समुद्री मार्ग की खोज किसने की ?
(A) कोलम्बस (B) मैंगल्स
(C) वास्कोडिगामा (D) टॉमस मूर

40. पुर्तगाली व्यापारिक कम्पनी के भारत आगमन का सर्व प्रमुख उद्देश्य था–
(A) काली मिर्च व अन्य मसालों के व्यापार पर एकाधिकार प्राप्त करना
(B) धर्मान्तरण करना
(C) राज्यस्थापित करना
(D) इनमें से कोई नहीं

41. कानपुर के गदर का नेतृत्व किसने किया था ?
(A) तात्या टोपे
(B) रानी लक्ष्मीबाई
(C) बेगम हजरत महल
(D) नाना साहब

42. निम्न में से किस घटना ने इंग्लैंड के सम्राट को भारतीय प्रशासन को अपने अधीन कर लेने के लिए प्रेरित किया था ?
(A) प्लासी का युद्ध
(B) बक्सर का युद्ध
(C) हिंसक युद्ध
(D) सिपाहियों का विद्रोह

43. निम्नलिखित में से किसने, 1857 के विद्रोह के कारणों का विश्लेषण करते हुए अंग्रेजों तथा मुसलमानों के बीच मेल-मिलाप की वकालत की ?
(A) सैयद अहमद बरेलवी
(B) शाह वलीउल्लाह
(C) सैयद अहमद खां
(D) सैयद अमीर अली

44. 'द इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस' नामक पुस्तक के लेखक कौन थे ?
(A) कृष्ण वर्मा (B) मैडम कामा
(C) बी. जी. तिलक (D) वी.डी. सावरकर

45. किसने अंग्रेजों के विरुद्ध 1857 ई. के संघर्ष में भाग नहीं लिया था ?
(A) तात्यां टोपे (B) टीपू सुल्तान
(C) रानी लक्ष्मीबाई (D) नाना साहब

46. निम्न में से कौन 1857 के गदर से सम्बन्धित नहीं है ?
(A) नाना साहब
(B) मंगल पांडे
(C) चंद्रशेखर आज़ाद
(D) रानी लक्ष्मीबाई

47. बहादुर शाह था—
(A) अंतिम लोदी शासक
(B) शेरशाह सूरी का उत्तराधिकारी
(C) अंतिम मुगल शासक
(D) मराठा शासक शिवाजी का उत्तराधिकारी

48. मुण्डाओं ने विद्रोह खड़ा किया—
(A) 1885 में (B) 1888 में
(C) 1890 में (D) 1895 में

49. 1908 के 'छोटानागपुर काश्त अधिनियम' ने रोक लगाई—
(A) वन-उत्पाद के स्वतंत्र उपयोग पर
(B) वनों को जलाने पर
(C) बेठबेगारी पर
(D) खूँटकटी भूमि व्यवस्था पर

50. किसके द्वारा मंदिरों में प्रवेश के अधिकार की माँग की प्रस्तुति के कारण 1899 में तिरुनेवल्ली में भयंकर दंगे हुए थे ?
(A) ओकालिंग (B) नाडार
(C) महार (D) पल्ली

51. अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो–ओरिएंटल कॉलेज' की स्थापना किसने की थी ?
(A) मोहम्मद अली जिन्ना
(B) मोहम्मद अली
(C) शौकत अली
(D) सैयद अहमद खां

52. सैयद अहमद खां के विषय में क्या सत्य नहीं है ?
(A) उन्होंने अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज प्रारंभ किया।
(B) वह मुस्लिम लीग के एक नेता थे।
(C) वह अलीगढ़ आंदोलन के एक जन्मदाता थे।
(D) वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का विरोध करते थे।

53. स्वतन्त्रता-पूर्व अवधि में ब्रिटिश सरकार द्वारा भ. ारत में आधुनिक शिक्षा के प्रसार का मुख्य उद्देश्य था—
(A) छोटे प्रशासनिक पदों पर नियुक्ति हेतु शिक्षित भारतीयों की आवश्यकता
(B) भारतीय संस्कृति को प्रोत्साहित करना
(C) भारतीय लोगों को आधुनिक बनाना, जिससे वे राजनीतिक जिम्मेदारी में भाग ले सकें
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

54. आधुनिक शिक्षा के सन्दर्भ में शिक्षा का माध्यम को लेकर उठे प्राच्य-आंग्ल विवाद का अंत मैकाले के प्रपत्र (1835) से हुआ। इसके अनुसार किस भाषा को भारत में शिक्षा का माध्यम स्वीकार किया गया ?
(A) हिन्दी (B) उर्दू
(C) संस्कृत (D) अंग्रेजी

55. किसने 1911 में प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क एवं अनिवार्य बनाने वाला विधेयक इंपीरियल लेगिस्लेटिव कौंसिल में प्रस्तुत किया, जिसे 'प्राथ. मिक शिक्षा का मैग्नाकार्टा' कहा गया ?
(A) गोपाल कृष्ण गोखले
(B) लाला लाजपत राय
(C) महात्मा गाँधी
(D) सुभाष चन्द्र बोस

56. शिक्षा से सम्बन्धित आयोग/समिति की पहचान करें—
1. हर्टोग समिति (1929)
2. लिण्डसे आयोग (1929)
3. सप्रू समिति (1934)
4. सार्जेण्ट योजना (1944)
(A) 1, 2 एवं 3 (B) 1, 2 एवं 4
(C) 1, 3 एवं 4 (D) 1, 2, 3 एवं 4

57. किस सिद्धान्त का यह अर्थ था कि शिक्षा समाज के उच्च वर्ग को दी जाये और इस वर्ग से छन-छन कर शिक्षा का प्रभाव जनसाधारण तक पहुँचे ?
(A) अधोमुखी निस्यंदन सिद्धान्त
(B) ऊर्ध्वमुखी निस्यंदन सिद्धान्त
(C) अधोमुखी शुद्धीकरण सिद्धान्त
(D) ऊर्ध्वमुखी शुद्धीकरण सिद्धान्त

58. 'भारत में आधुनिक शिक्षा का जन्मदाता' किसे कहा जाता है ?
(A) चार्ल्स ग्रांट (B) मार्शमैन
(C) विलियम जोन्स (D) जॉन मार्शल

59. हिन्दू कॉलेज, कलकत्ता (1817), जो कि पाश्चात्य पद्धति पर उच्च शिक्षा देने का प्रथम कॉलेज था, जिसका धार्मिक शिक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं था, की स्थापना किसने की ?
(A) डेविड हेयर (B) विलियम जोन्स
(C) मैकाले (D) जान मार्शल

60. भारत में अंग्रेजी शिक्षा किसके द्वारा लागू की गई थी ?
(A) वारेन हेस्टिंग्स (B) लॉर्ड रिपन
(C) लॉर्ड डलहौजी (D) विलियम बैंटिंक

61. निम्नलिखित में से किस अधिनियम के द्वारा बिना मुकदमा और दोष-सिद्धि के ही विधि के न्यायालय में किसी भी व्यक्ति को कैद करने का प्राधिकार ब्रिटिश सरकार को दिया गया था ?
(A) वर्ष 1919 का रॉलेट अधिनियम
(B) वर्ष 1935 का भारत सरकार अधिनियम
(C) वर्ष 1909 का भारत परिषद् अधिनियम
(D) वर्ष 1919 का भारत सरकार अधिनियम

62. गांधीजी ने 'सांप्रदायिक पुरस्कार' का विरोध क्यों किया ?
(A) सांप्रदायिक पक्षपात
(B) हिंदू समाज में मतभेद उत्पन्न कर देना
(C) भारत की आर्थिक दुर्दशा
(D) हस्तशिल्प का विनाश

63. ए. ओ. ह्यूम के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है ?
(A) उसने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की।
(B) उसने कांग्रेस के दो सत्रों की अध्यक्षता की।
(C) वह आर्निथोलॉजिस्ट था।
(D) वह भारतीय सिविल सेवा का सदस्य था।

64. कांग्रेस का 1906 का अधिवेशन, जिसमें स्वराज्य को लक्ष्य घोषित किया गया था, कहाँ पर हुआ था ?
(A) बम्बई (B) कलकत्ता
(C) लखनऊ (D) मद्रास

65. निम्नलिखित कांग्रेसी नेताओं में से किसको 'महान वृद्ध पुरुष (Grand Old Man of India) कहा जाता था ?
(A) महात्मा गाँधी
(B) दादाभाई नौरोजी
(C) बालगंगाधर तिलक
(D) मदनमोहन मालवीय

66. नरम दल और गरम दल के बीच फूट कहाँ और किस वर्ष में पड़ी थी ?
(A) सूरत अधिवेशन, 1907 ई.
(B) बंबई अधिवेशन, 1885 ई.
(C) कलकत्ता अधिवेशन, 1886 ई.
(D) नागपुर अधिवेशन, 1920 ई.

67. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के किस अधिवेशन में कांग्रेस और मुस्लिम लीग का ऐतिहासिक मिलन हुआ था ?

(A) सूरत (B) बंबई

(C) कलकत्ता (D) लखनऊ

68. 'पूर्ण स्वराज्य' की शपथ कांग्रेस के किस अधिवेशन में ली गई थी ?

(A) कलकत्ता (B) लाहौर

(C) इलाहाबाद (D) मद्रास

69. भारतीय तिरंगे का पहली बार, जवाहरलाल नेहरू ने कहाँ पर ध्वजारोहण किया था ?

(A) 1947 में लाल किले की प्राचीर से

(B) 1929 में लाहौर में रावी के तट पर

(C) जब भारत 1950 में प्रजातांत्रिक गणतंत्र बन गया

(D) जब 1935 में भारत सरकार अधिनियम पारित किया गया।

70. 1940-46 के बीच कांग्रेस के अध्यक्ष निम्न-लिखित में से कौन थे ?

(A) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

(B) मौलाना आजाद

(C) पट्टाभि सीतारमैया

(D) जे.वी. कृपलानी

उत्तरमाला

1. (B) **2.** (C) **3.** (B) **4.** (D) **5.** (A)
6. (C) **7.** (C) **8.** (A) **9.** (C) **10.** (A)
11. (B) **12.** (B) **13.** (B) **14.** (C) **15.** (C)
16. (A) **17.** (B) **18.** (D) **19.** (D) **20.** (A)
21. (A) **22.** (B) **23.** (B) **24.** (C) **25.** (D)
26. (B) **27.** (A) **28.** (A) **29.** (B) **30.** (C)
31. (A) **32.** (C) **33.** (A) **34.** (C) **35.** (B)
36. (C) **37.** (B) **38.** (B) **39.** (C) **40.** (A)
41. (D) **42.** (D) **43.** (C) **44.** (D) **45.** (B)
46. (C) **47.** (C) **48.** (D) **49.** (C) **50.** (B)
51. (D) **52.** (B) **53.** (A) **54.** (D) **55.** (A)
56. (D) **57.** (A) **58.** (A) **59.** (A) **60.** (D)
61. (A) **62.** (B) **63.** (B) **64.** (B) **65.** (B)
66. (A) **67.** (D) **68.** (B) **69.** (B) **70.** (B)

❑❑

राजस्थान शिक्षक पात्रता (6-8) परीक्षा, 2011

हल प्रश्न-पत्र

सामाजिक अध्ययन

1. भारतीय समाज की प्रमुख विशेषता है–
The main characteristic of the Indian society is
(A) अनेकता में एकता/Unity in diversity
(B) अशिक्षा/Illiteracy
(C) स्वावलम्बन/Self-sufficiency
(D) प्रादेशिकता/Regionalism

1. (A)
- भारतीय समाज एक बहुलवादी समाज है। जिसमें एक जटिल सामाजिक व्यवस्था है।
- स्वतन्त्रता के बाद, सांस्कृतिक समानता, भाषायी पहचान और अन्य के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की कई माँगें भारत के विभिन्न हिस्सों से सामने आई।
- भारतीय समाज की मुख्य विशेषताएँ–
  - बहु-जातीय समाज
  - बहु भाषीय समाज
  - विविधता में एकता
  - जनजाति
  - परिवार
  - समानता प्रणाली

2. नगरीकरण परिणाम है–
Urbanization is the result of :
(A) शैक्षिक विकास का/Educational development
(B) ग्रामीण विकास का/Rural development
(C) ग्रामों से नगरों की ओर जनसंख्या पलायन का/Migration of population from villages to cities
(D) कृषि विकास का/Agricultural development

2. (C)
- शहरीकरण को शहरों में मानव आबादी की बढ़ती एकाग्रता, यानी मौजूदा शहरी क्षेत्र में आबादी के प्रवास के परिणाम स्वरूप शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण या प्राकृतिक भूमि की भौतिक वृद्धि के रूप में परिभाषित करना।
- शहरीकरण का सबसे महत्वपूर्ण कारण ग्रामीण-शहरी प्रवास है।
- शहरों और कस्बों में जीवन के लिए जिम्मेदार कई सामाजिक लाभ हैं।
- रोजगार के अवसर।
- आधुनीकरण और बदली हुई जीवन शैली।

3. क्षेत्रीयतावाद मुख्य कारण है–
Regionalism is the main cause of
(A) गरीबी का/Poverty
(B) सामाजिक तनावों का/Social tensions
(C) बेरोजगारी का/Unempolyment
(D) वैश्वीकरण का/Globalisation

3. (C)
- क्षेत्रीयवाद का अर्थ है किसी विशेष क्षेत्र या राज्य का प्रेम जो पूरे देश को वरीयता देता है।
- विवाद या सामाजिक तनाव का मुख्य कारण क्षेत्रीयवाद है।
- क्षेत्रवाद एक विचारधारा है, जिसका सम्बन्ध ऐसे क्षेत्र से होता है जो धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक या सांस्कृतिक कारणों से अपने पृथक अस्तित्व के लिए जागृत होती है या ऐसे क्षेत्र की पृथकता को बनाए रखने के लिए प्रयासरत रहती हैं।

4. सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को विषय-वस्तु के साथ-साथ ज्ञान होना चाहिए–
Apart from subject contents, a social study teacher should have knowledge of
(A) शिक्षा के उद्देश्यों का/Objectives of teaching
(B) शिक्षण विधियों का/Methods of teaching
(C) शिक्षण तकनीक का/Techniques of teaching
(D) इनमें से सभी/All of these

4. (D)
- सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को विषय–वस्तु के साथ–साथ शिक्षा के उद्देश्यों का शिक्षण विधियों का, शिक्षण तकनीक का ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि एक अध्यापक का उद्देश्य, शिक्षा के उद्देश्य को पूरा करना है,जिसके लिए वह शिक्षण विधियों का प्रयोग करता है व शिक्षण विधियों को समृद्ध करने के लिए शिक्षण तकनीक का प्रयोग आवश्यक है। अतः विकल्प (D) सही होगा।

5. भारत में गरीबी के लिए कौन-सा कारण नहीं है?
Which is not a cause of poverty in India?
(A) बेरोजगारी/Unemployment
(B) तीव्र जनसंख्या वृद्धि/Rapid growth of population
(C) शिक्षा/Education
(D) वृहत परिवार/Large size of family

5. (C)
- गरीबी एक ऐसी स्थिति है, जिसमें किसी व्यक्ति या समुदाय के पास न्यूनतम जीवन स्तर के लिए वित्तीय संसाधनों और आवश्यक चीजों का अभाव होता है।
- गरीबी के कारण निम्न हैं–
  - जनसंख्या विस्फोट
  - बेरोजगारी
  - परिवार का बड़ा आकार

  उपरोक्त विकल्पों में शिक्षा गरीबी का कारण नहीं है, जबकि अन्य 3 विकल्प इसके प्रमुख कारण हैं।

6. किस हड़प्पाकालीन इमारत को सर जॉन मार्शल ने विश्व का एक अद्‌भुत निर्माण कहा ?
Which Harappan building was considered unique in its built in the world by Sir John Marshall ?
(A) वृहत् स्नानागार/The Great Bath
(B) अन्नागार/Granary
(C) सभा भवन/Assembly Hall
(D) दुर्ग महल/Fort Palace

6. (A)
- सिन्धु घाटी सभ्यता एक 'कांस्य युगीन' सभ्यता थी, जिसे सर्वप्रथम 1921 में हड़प्पा नामक पुरास्थल के रूप में पहचाना।
- सभ्यता के सर्वाधिक स्थल गुजरात में।
- सार्वजनिक स्नानागार मोहनजोदड़ो में मिला है।
- जल कुंड के पेंदें को डामर द्वारा जलरोधी बनाया गया था।
- सर मार्शल जॉन ने इसे विश्व का अद्‌भुत निर्माण कहा है।

7. 'भारत में एकता में अनेकता और अनेकता में एकता है।' यह कथन किसका है ?
"In India there is unity in diversity and diversity in unity." Whose statement is this ?
(A) ए. एल. बाशम का/A. L. Basham
(B) वी. ए. स्मिथ का/V. A. Smith

(C) मैक्स मूलर का/Max Muller
(D) जवाहरलाल नेहरू का/Jawaharlal Nehru

7. (B) अनेकता में एकता शब्द अंनत विविधता की उपस्थिति के बावजूद एकजुटता या अखण्डता की स्थिति से सम्बन्धित है।
- बी.ए. स्मिथ एक ब्रिटिश इतिहासकार हैं जिन्होंने भारत को विविधता का देश कहा है।
- उन्होंने कहा, ''भारत में अनेकता में एकता और एकता में अनेकता है।''
- उन्होंने समुद्रगुप्त को ''भारत का नेपोलियन'' कहा।
- उन्होंने '1904' में भारत का प्रारम्भिक इतिहास नामक पाठ्य–पुस्तक तैयार की।

8. निम्न में से किस सैन्धव स्थल से 'अग्नि कुण्ड' के साक्ष्य मिले हैं ?
From which Indus site the evidence of 'Fire pit' is found ?
(A) हड़प्पा/Harappa
(B) मोहनजोदड़ो/Mohenjodaro
(C) लोथल/Lothal
(D) कालीबंगा/Kalibanga

8. (C) सिन्धु घाटी सभ्यता (3300-1700 ई. पू.) विश्व की प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओं में से एक प्रमुख सभ्यता थी, यह हड़प्पा सभ्यता और सिन्धु सरस्वती के नाम से भी जानी जाती है।
- इस सभ्यता की खोज दयाराम साहनी ने की।
- मोहनजोदड़ो से एक नर्तकी की कांस्य की मूर्ति मिली है।
- लोथल से 'अग्निकुंड' के साक्ष्य मिले हैं।

9. हिन्द-यूनानी शासकों के बारे में जानकारी का मुख्य स्रोत क्या है ?
What is the main source of information about Indo-Greek rulers ?
(A) यात्रियों का वृत्तान्त/Travellers' account
(B) सिक्के/Coins
(C) बौद्ध साहित्य/Buddhist literature
(D) जैन साहित्य/Jain literature

9. (B) भारतीय-यूनानी साम्राज्य या यूनानी-हिन्द साम्राज्य, जिसे ऐतिहासिक रूप से यवन साम्राज्य के रूप में जाना जाता है।
- हिन्द यूनानियों के बारे में पुरातात्विक साक्षा की उत्कृष्ट कृतियों में से एक सिक्के हैं।
- भारत में कई दर्जन हिन्द-यूनानी शासकों के सिक्के पाये जाते हैं। उनके सिक्कों में से एक अर्ध मूर्ति और बैठा हेराक्लेस दिखता है।

10. गीता है–
Geeta is :
(A) वेद/Veda
(B) स्वतन्त्र महाकाव्य/Independent Epic
(C) रामायण का एक भाग/A part of Ramayana
(D) महाभारत का एक भाग/A part of Mahabharata

10. (D) महाभारत युद्ध आरम्भ होने से ठीक पहले भगवान कृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया वह श्रीमद्भगवद्गीता के नाम से प्रसिद्ध है।
- यह महाभारत का अंग है।
- गीता में 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं।
- गीता की गणना प्रस्थानवयी में की जाती है, जिसमें उपनिषद् और ब्रह्मसूत्र भी सम्मिलित है।

11. गुप्त काल में सुदूर पश्चिम में प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था–
The famous trade centre of Far West during the Gupta period was :
(A) विदिशा/Vidisa
(B) पुरुषपुर/Purushpur
(C) अहिच्छत्र/Ahichhatra
(D) पैठन/Paithan

11. (D) गुप्त साम्राज्य प्राचीन भारतीय साम्राज्यों में से एक था।
- महत्वपूर्ण बंदरगाह शहर ब्रिगु कहा, कल्याण और सिंध थे, जो रोमनों के साथ थोक व्यापार केन्द्र थे।
- पश्चिम में नासिक, पैठण, पाटलिपुत्र, बनारस अन्य प्रमुख व्यापार केन्द्र था।
- उज्जैन एक प्रमुख वाणिज्यिक केन्द्र बन गया था और यह दक्षिणी और उत्तरी भारत से जुड़ा हुआ था।

12. भारत का राष्ट्रीय चिह्न लिया गया है–
The National emblem of India has beeen taken from :
(A) सांची स्तम्भ से/The pillar of Sanchi
(B) सारनाथ स्तम्भ से/The pillar of Sarnath
(C) इलाहाबाद स्तम्भ से/The pillar of allahabad
(D) लुम्बिनी स्तम्भ से/The pillar of Lumbini

12. (B) अशोक स्तम्भ भारत का राष्ट्रीय चिह्न अशोक स्तम्भ सारनाथ से लिया गया है।
- 26 जनवरी, 1950 में इसे अंगीकृत किया गया।
- अशोक स्तम्भ पर 'सत्यमेव जयते' लिखा है जो मुण्डक उपनिषद से लिया गया है।
- भारत का सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार– भारत रत्न।

13. 'लोग घरों में ताला नहीं लगाते थे।' फाह्यान ने किस शासक के बारे में ऐसा लिखा है ?
'People did not lock their houses.' About which ruler has Fa-hien written this?
(A) रामगुप्त/Ramgupta
(B) चन्द्रगुप्त I/Chandragupta I
(C) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य/Chandragupta Vikramaditya
(D) समुद्रगुप्त/Samudragupta

13. (C) चीनी यात्री फाह्यान ने चन्द्रगुप्त द्वितीय के राज्यकाल में सन् 400-411 के बीच भारत का भ्रमण किया था।
- उसका जन्म चीन के ग्राम वु–यंग में हुआ था।
- भारत में वह मथुरा एवं सुण्डीक गया।
- उसने विक्रमादित्य के शासन में लिखा कि लोग घरों में ताला नहीं लगाते थे।

14. महाबलीपुरम् के प्रसिद्ध मंदिर किस शासक के शासन के अन्तर्गत बने ?
The famous temples of Mahabalipuram were built during the reign of
(A) पल्लव/PallavaS
(B) चोल/Cholas
(C) चालुक्य/Chalukyas
(D) काकतीय/Kakatiyas

14. (A) महाबलीपुरम् भारत के तमिलनाडु राज्य के चेंगलपट्टु जिले में स्थित एक शहर है।
- यह मन्दिरों का शहर राज्य की राजधानी चेन्नई से 55 किलोमीटर दूर बंगाल की खाड़ी के तटस्थ है।
- सातवीं शताब्दी में यह शहर पल्लव राजाओं की राजधानी था।
- पल्लव वंश के अन्तिम शासक अपराजित थे।

15. भारतीय इतिहास में पहली बार लोगों के जन्म एवं मृत्यु का पंजीयन किस काल में किया गया?
For the first time, in which period of Indian History was the registration of birth and death of people introduced ?
(A) महाजनपद काल/The Age of Mahajanapadas
(B) गुप्त काल/The Gupta period

(C) कुषाण काल/The Kushan period
(D) मौर्य काल/The Mauryan period

15. (D) भारतीय इतिहास में पहली बार लोगों के जन्म एवं मृत्यु का पंजीयन मौर्यकाल में किया। मौर्य प्रशासन में विभिन्न प्रशासनिक कार्यों के लिए 6 समितियों का गठन किया गया था, जिनमें से तृतीय समिति का कार्य राज्य में अधिवास करने वाले लोगों के जन्म व मृत्यु का लेखा–जोखा रखना था।

16. शेख सलीम चिश्ती का मबकरा कहाँ स्थित है ?
The tomb of Sheikh Salim Chisti is located at
(A) आगरा में/Agra
(B) दिल्ली में/Delhi
(C) फतेहपुर सीकरी में/Fatehpur Sikri
(D) अजमेर में/Ajmer

16. (C) शेख सलीम चिश्ती के मकबरे 16वीं सदी के आरम्भ में निर्मित एक सुन्दर और भव्य संरचना है।
- प्रसिद्ध मुगल सम्राट अकबर ने बेटा होने की भविष्यवाणी करने वाले सूफी सन्त सलीम चिश्ती को श्रृद्धांजलि के रूप में इस मकबरे का निर्माण करवाया था।
- यह फतेहपुर सीकरी में स्थित है।

17. 'नूहे सिपिहर' के रचनाकार हैं–
The author of 'Nuh-i-Sipihar' is :
(A) अमीर खुसरो/Amir Khusrau
(B) मलिक मोहम्मद जायसी/Malik Moh. Jaisee
(C) दारा शिकोह/Dara Shikoh
(D) शेख निजामुद्दीन औलिया/Sheikh Nizamuddin Auliya

17. (A) नूह–सिपेहर अमीर खुसरो द्वारा लिखित एक उत्कृष्ट कृति है।
- इस कृति में कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी के समय की सामाजिक स्थिति के विषय में जानकारी मिलती है।
- इस पुस्तक के द्वारा खिलजी कालीन भारत की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

तुगलकनामा, आशिका, खजाइन–उल फुतूह, मिफता–उल–फुतूह किरान–उस–सादेन इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

18. दक्षिणी भारत में चिश्ती सिलसिले का प्रमुख केन्द्र था–
The chief centre of Chisti School in South India was
(A) गुलबर्गा/Gulbarga
(B) गोलकुण्डा/Golkonda
(C) बीजापुर/Bijapur
(D) बीदर/Bidar

18. (A) भारत में चिश्ती परम्परा के प्रथम संत शेख उस्मान के शिष्य ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती थे।
- मोइनुद्दीन चिश्ती ने अजमेर को अपना केन्द्र (खानकाह) बनाया।
- दक्षिण भारत में चिश्ती सिलसिले का प्रारम्भ करने का श्रेय निजामुद्दीन औलिया के शिष्य 'शेख बुरहानुद्दीन गरीब' को जाता है।
- इन्होंने गुलबर्गा को अपने प्रचार-प्रसार का केन्द्र बनाया।

19. सन्त दादू की मृत्यु किस स्थल पर हुई ?
Thge place where Saint Dadu died is
(A) सांभर/Sambhar
(B) आम्बेर/Amber
(C) नाराणा/Narana
(D) पुष्कर/Pushkar

19. (C) दादूदयाल मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन के प्रमुख सन्त थे।
- इसका जन्म विक्रम संवत् 1601 में फाल्गुन शुक्ला अष्टमी को अहमदाबाद में हुआ था।
- दादू दयाल की मृत्यु जेठ वदी अष्टमी शनिवार संवत् 1660 को हुई।
- इनकी मृत्यु अजमेर के निकट नराणा नामक गाँव में हुई।

20. सन्त जाम्भोजी का जन्म कहाँ हुआ था ?
Where Saint Jambhoji was born ?
(A) पीपासर/Pipasar
(B) गागरोन/Gagron
(C) जैतारण/Jaitaran
(D) नागौर/Nagaur

20. (A) गुरू जम्भेश्वर विश्नोई सम्प्रदाय के संस्थापक थे।
- ये जम्मोजी के नाम से भी जाने जाते हैं।
- इन्होंने विक्रमी संवत् 1542 (सन् 1485) को विश्नोई पंथ की स्थापना की।
- इनका जन्म राजस्थान के नागौर परगने के पीपासर गाँव में एक राजपूत परिवार में विक्रमी संवत् 1508 (सन् 1451) भादवा वदी अष्टमी को अर्धरात्रि कृतिका नक्षत्र में हुआ था।

21. 'दस्तक' शब्द से क्या तात्पर्य है ?
The meaning of the word 'Dastak' is
(A) गुलामी/Slavery
(B) फैक्टरी/Factory
(C) बन्दरगाह/Port
(D) शुल्क मुक्त व्यापार/Duty-free trade

21. (D) 18वीं शताब्दी में 'दस्तक' शब्द का प्रयोग 'शुल्क मुक्त व्यापार' के लिए पार पत्र के रूप में किया जाता था।
- यह बंगाल में एक कर मुक्त व्यापार के लिए मुगल सम्राट 'फारुख सियार फरमान' द्वारा अकेले ईस्ट इण्डिया कम्पनी को स्वीकृत एक व्यापार परमिट था।
- मुगल सरकार को राजस्व की हानि हो रही थी।
- निजी कम्पनियों ने भी दस्तक दिखाकर मुक्त व्यापार के अधिकार का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

22. अकबर के चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण (1567-68) के समय वहाँ का शासक कौन था ?
Who was the ruler of Chittorgarh during the invasion (1567-68) of Akbar ?
(A) महाराणा प्रताप/Maharana Pratap
(B) महाराणा उदय सिंह/Maharana Udai Singh
(C) जयमल/Jaimal
(D) महाराणा अमर सिंह/Maharana Amar Singh

22. (B) अकबर के आक्रमण के समय चित्तौड़गढ़ के शासक महाराणा उदय सिंह थे।
- महाराणा उदय सिंह (1522-1572) मेवाड़ राजवंश के 12वें शासक थे।
- चित्तौड़गढ़ शहर बेराच नदी और गंभीरी नदी के तट पर स्थित है।
- इसमें अकबर की सेना ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग में जयमल के नेतृत्व वाले 8000 राजपूतों और 40,000 किसानों की घेराबन्दी कर ली।

23. किस मुगल बादशाह के काल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है ?
Which of the following Mughal emperor's reign was known as the golden period of Hindi literature ?
(A) औरंगजेब/Aurangzeb
(B) अकबर/Akbar
(C) जहाँगीर/Jahangir
(D) शाहजहाँ/Shah Jahan

23. (A) अकबर के शासनकाल में विभिन्न कलाओं का विकास हुआ।
- अकबर ने साहित्यिक प्रगति की ओर विशेष ध्यान दिया।
- जैन विद्वान पद्म सुन्दर ने अकबरशाही श्रृंगार दर्पण और जैन आचार्य सिद्धचन्द्र ने भानुचन्द्र ग्रन्थ लिखे।

- इस प्रकार अकबर का काल हिन्दी और साहित्य संस्कृत की उन्नति की दृष्टि से स्वर्णिम युग था।

24. कौन-से फ्रान्सीसी यात्री ने छह बार भारत की यात्रा की ?
The French traveller who visited India for six times was
(A) मनूची/Menucci
(B) बर्नियर/Bernier
(C) थेवनोट/Thavenot
(D) टैवरनियर/Tavernir

24. (D) एक यात्री और व्यापारी जीन-बैप्टिस्ट टैवर्नियर ने 1630-68 के बीच छः बार भारत का दौरा किया।
- इन्हें 116 कैरेट के हीरे की खोज करने के लिए जाना जाता है।
- इन्होंने ''ट्रेवल्स इन इण्डिया'' पुस्तक लिखी।
- फ्रेकोइस वर्नियर एक फ्रांसीसी चिकित्सक यात्री थे।

25. आइन-ए-अकबरी में अबुल फजल ने मनसबदारों की कितनी श्रेणियों का उल्लेख किया है ?
How many ranks of Mansabdars have been mentioned by Abul Fazl in his Ain-e-Akbari ?
(A) 22 (B) 33
(C) 44 (D) 66

25. (D) आइन-ए-अकबरी एक 16वीं शताब्दी का ब्यौरेवार ग्रन्थ है। इसकी रचना अकबर के ही एक नवरतन दरबारी अबुल फजल ने की थी।
- इसमें अकबर के दरबार उसके प्रशासन के बारे में चर्चा की गयी है।
- मनसबदार सेना के सेनापति और उच्च नागरिक होते हैं।
- उन्होंने 66 मनसबदारों के पदों का उल्लेख किया है।

26. भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम (1857) का कानपुर में नेतृत्व किसने किया था ?
Who was the leader of First War of Independence (1857) at Kanpur ?
(A) तांत्या टोपे/Tantya Tope
(B) लक्ष्मीबाई/Laxmi Bai
(C) नाना साहब/Nana Sahib
(D) कुँवर सिंह/Kunwar Singh

26. (C) नाना साहेब सन् 1857 के भारतीय स्वतन्त्रता के प्रथम संग्राम के शिल्पकार थे।
- स्वतन्त्रता संग्राम में नाना साहेब ने कानपुर में अंग्रेजों के विरुद्ध नेतृत्व किया।
- नाना साहेब (धोंड पन्त) ने सन् 1824 में वेणुग्राम निवासी माधवनारायण राव के घर जन्म लिया था।
- कुंवर सिंह ने 23 अप्रैल, 1858 में, जगदीशपुर के पास अन्तिम लड़ाई लड़ी।

27. 1857 के दौरान लिखित पुस्तक 'माझा प्रवास' के लेखक हैं ?
Who is the author of 'Majha Pravas' written during 1857 ?
(A) विष्णुभट्ट गोडसे/Vishnubhatt Godse
(B) सीताराम पाण्डेय/Sitaram Pandey
(C) नारगेट/Narget
(D) मंगल पाण्डेय/Mangal Pandey

27. (A) 1857 की क्रान्ति का सजीव चित्रण भारत की दो किताबों में हुआ है। इसमें पण्डित विष्णु भट्ट गोड्से द्वारा मराठी में लिखित 'माझा प्रवास' एक मात्र लाइव रिपोर्टिंग आधारित पुस्तक है।
- 1857 की क्रान्ति का दूसरा जीवंत चित्रण वीर सावरकर द्वारा लिखित 1857 का स्वातंत्रय समर में है।
- सावरकर ने ब्रिटेन में रहकर इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी व नेशनल म्यूजियम लाइब्रेरी में बैठकर इस पुस्तक के लिए ब्रिटिश सरकार के दस्तावेजों व ब्रिटिश लेखकों की पुस्तक का अध्ययन किया।

28. महान नागा महिला गिंडाल्यू को 'रानी' की उपाधि किसने दी थी ?
Who has given the title of 'Rani' to Gindalau, the great Naga female leader ?
(A) रविन्द्रनाथ टैगोर/Rabindranath Tagore
(B) महात्मा गाँधी/Mahatma Gandhi
(C) जवाहरलाल नेहरू/Jawaharlal Nehru
(D) सुभाष चन्द्र बोस/Subhash Chandra Bose

28. (C) रानी गिडालू या रानी गाइदिन्ल्यू भारत की नागा आध्यात्मिक एवं राजनीतिज्ञ नेत्री थीं।
- इन्होंने भारत में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह का नेतृत्व किया।
- भारत सरकार द्वारा समाज सेवा के क्षेत्र में सन् 1982 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।
- सन् 1937 में जवाहर लाल नेहरू उनसे शिलाँग जेल में मिले और उनकी रिहाई का प्रयास करने का वचन दिया, उन्होंने ही गाइदिन्ल्यू को 'रानी' की उपाधि की।

29. महात्मा गाँधी ने अपनी आत्मकथा किस भाषा में लिखी ?
In which language has Mahatma Gandhi written his autobiography ?
(A) हिन्दी/Hindi
(B) मराठी/Marathi
(C) गुजराती/Gujarati
(D) अंग्रेजी/English

29. (C) 'सत्य के प्रयोग' महात्मा गाँधी द्वारा लिखी वह पुस्तक है, जिसे उनकी आत्मकथा का दर्जा हासिल है।
- बापू ने यह पुस्तक मूल रूप से गुजराती में लिखी थी।
- यह किताब दुनिया की सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली किताबों में से एक है।
- गाँधीजी ने 29 नवम्बर, 1925 को इस किताब को लिखना शुरू किया था और 3 फरवरी, 1929 को यह किताब पूरी हुई।

30. ब्रिटिश संसद ने किस वर्ष कानून पास कर ईस्ट इंडिया कम्पनी के सारे अधिकार छीन लिये ?
In which year did British Parliament pass a law through which has taken overall the rights from East India Company ?
(A) 1858 (B) 1859
(C) 1860 (D) 1861

30. (A) ब्रिटिश संसद ने 1858 में पिट्स इण्डिया अधिनियम, द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी के सारे अधिकार छीन लिए।
- 1857 के विद्रोह ने प्रशासन में कम्पनी की सीमा को उजागर कर दिया।
- विद्रोह ने कम्पनी द्वारा कब्जा किये गए क्षेत्र पर अधिकार के विभाजन की माँग के रूप में अवसर प्रदान किया।
- यह परिषद् प्रकृति में सिर्फ सलाहकार थीं।

31. भारतीय संविधान लागू किया गया—
The Constitution of India was adopted on
(A) 15 अगस्त, 1947 को/15th August, 1947
(B) 26 जनवरी, 1950 को/26th January, 1950
(C) 26 जनवरी, 1949 को/26th January, 1949
(D) 26 जुलाई, 1950 को/26th July, 1950

31. (B) भारत का संविधान, भारत का सर्वोच्च विधान है।
- संविधान सभा द्वारा 26 नवम्बर, 1949 को पारित हुआ तथा 26 जनवरी, 1950 से प्रभावी हुआ।
- भारत का संविधान विश्व की किसी भी गणतांत्रिक देश का सबसे लम्बा लिखित संविधान है।
- भारतीय संविधान लिखने वाली सभा में 299 सदस्य थे, जिसके अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे।

32. भारतीय संविधान भाग-4, अनुच्छेद 51-ए में नागरिकों के कितने मूल कर्त्तव्य वर्णित हैं ?
How many fundamental duties have been mentioned in the Constitution of India Part 4, Article 51-A ?
(A) 10 (B) 12
(C) 15 (D) 11

32. (D) संविधान के 42वें संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा संविधान के भाग 4 के पश्चात् एक नया भाग 4A जो जोड़ा गया है, जिसके द्वारा पहली बार संविधान में नागरिकों के लिए मूल कर्त्तव्यों और अनुच्छेद 51A को समाविष्ट किया गया है।
- वर्तमान में अनुच्छेद 51(A) के तहत वर्णित 11 मौलिक कर्त्तव्य हैं, जिनमें से 10 को 42वें संशोधन के माध्यम से जोड़ा गया था। जबकि 11वें मौलिक कर्त्तव्यों को वर्ष 2002 में 86वें संविधान संशोधन के जरिये संविधान में शामिल किया गया था।
- भारतीय संविधान में मौलिक कर्त्तव्यों की अवधारणा तत्कालीन USSR के संविधान से प्रेरित है।

33. संविधान निर्मात्री सभा की पहली बैठक कब आयोजित की गई थी ?
When was the first meeting of Constituent assembly held ?
(A) 15 अगस्त, 1947/15th August, 1947
(B) 26 नवम्बर, 1949/26th November, 1949
(C) 9 दिसम्बर, 1946/9th December, 1946
(D) 26 जनवरी, 1930/26th January, 1930

33. (C) भारत की संविधान सभा का चुनाव भारतीय संविधान की रचना के लिए किया गया था।
- ब्रिटेन से स्वतन्त्र होने के बाद संविधान सभा के सदस्य ही प्रथम संसद के सदस्य बने।
- संविधान निर्मात्री सभा की पहली बैठक 9 दिसम्बर, 1946 को आयोजित हुई थी।
- भीमराव अम्बेडकर को निर्मात्री समिति का अध्यक्ष चुना गया था।

34. भारतीय संविधान में 44वें संशोधन के पश्चात् मूल अधिकारों की संख्या है–
In the Constitution of India the number of Fundamental rights after 44th Amendment is
(A) 6 (B) 7
(C) 8 (D) 5

34. (A) संविधान के भाग III में सन्निहित मूल अधिकार, सभी भारतीयों के लिए नागरिक अधिकार सुनिश्चित करते हैं।
- संविधान द्वारा मूल रूप से सात मूल अधिकार प्रदान किये गये थे।
- समानता का अधिकार
- स्वतन्त्रता का अधिकार
- शोषण के विरुद्ध अधिकार
- धर्म, संस्कृति एवं शिक्षा की स्वतन्त्रता का अधिकार
- सम्पत्ति का अधिकार
- संवैधानिक उपचारों का अधिकार
- हालांकि सम्पत्ति के अधिकार को 1978 में 44वें संशोधन द्वारा संविधान के तृतीय भाग से हटा दिया गया था।
- अब मूल अधिकारों की संख्या 6 है।

35. भारतीय संविधान की कौन-सी विशेषता नहीं है ?
Which is not a characteristic of the Constitution of India ?
(A) प्रजातान्त्रिक पद्धति/Democratic system
(B) मूल अधिकार एवं कर्त्तव्य/Fundamental rights and duties
(C) प्रत्येक नागरिक को रोजगार की सुरक्षा/Employment guarantee to every citizen
(D) स्वतन्त्र न्यायपालिका/Independent judiciary

35. (C) भारत के संविधान की कुछ विशेषताएँ निम्न हैं–
- संघ और राज्यों दोनों के लिए एकल संविधान
- कठोरता और लचीलापन
- धर्म निरपेक्ष प्रदेश
- एकल नागरिकता
- लोकतान्त्रिक व्यवस्था
- मौलिक अधिकार और कर्त्तव्य
- स्वतन्त्र न्यायपालिका

36. राजस्थान से लोकसभा के लिए निर्वाचित सदस्यों की संख्या है–
The number of Lok Sabha members elected from Rajasthan is
(A) 21 (B) 26
(C) 30 (D) 25

36. (D) लोकसभा, भारतीय संसद का निचला सदन है, भारतीय संसद का ऊपरी सदन राज्यसभा है।
- भारत के प्रत्येक राज्य को उसकी जनसंख्या के आधार पर लोकसभा सदस्य मिलते हैं।
- लोकसभा में सबसे ज्यादा सीट उत्तर प्रदेश में 80 हैं।
- राजस्थान राज्य में लोकसभा की सीटों की संख्या 25 हैं।

37. भारत का राष्ट्रपति चुना जाता है–
The President of India is elected by
(A) भारत के नागरिकों द्वारा/The people of India
(B) संसद के दोनों सदनों एवं राज्य विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों द्वारा/Elected members of both the houses of Parliament and State Legislative assemblies
(C) प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद् के सदस्यों द्वारा/The Prime Minister and Council of Ministers
(D) समस्त मुख्यमंत्रियों द्वारा/All the Chief Ministers

37. (B) भारत के राष्ट्रपति, भारत गणराज्य के कार्यपालक अध्यक्ष होते हैं।
- अनुच्छेद 53 के अनुसार संघ की कार्यपालक शक्ति उसमें निहित है।
- भारत के राष्ट्रपति का चुनाव अनुच्छेद 55 के अनुसार आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के एकल संक्रमणीय मत पद्धति द्वारा होता है।
- राष्ट्रपति के निर्वाचन सम्बन्धी किसी भी विवाद में निर्णय लेने का अधिकार उच्चतम न्यायालय को है।

38. भारत का सर्वोच्च सेनापति कौन है ?
Who is the Supreme Commander-in-Chief of India ?
(A) प्रमुख सेनाध्यक्ष/The Chief of Army Staff
(B) मुख्य न्यायाधीश/The Chief Justice
(C) राष्ट्रपति/The President
(D) प्रधानमंत्री/The Prime Minister

38. (C) भारतीय सशस्त्र सेनाएँ भारत की तथा इसके प्रत्येक भाग की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उत्तरदायी हैं।
- भारतीय शस्त्र सेनाओं की सर्वोच्च कमान भारत के राष्ट्रपति के पास है।

- भारतीय सेना के प्रमुख कमांडर भारत के राष्ट्रपति हैं।

39. भारत में सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति करता है
The Chief Justice of the Supreme Court of India is appointed by
(A) उप-राष्ट्रपति/The Vice-President
(B) राष्ट्रपति/The President
(C) प्रधानमंत्री/The Prime Minister
(D) राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री/The President and Prime Minister

39. (C) सर्वोच्च न्यायालय के गठन के बारे में प्रावधान संविधान के अनुच्छेद 124 (2) में दिया गया है।
- मूल संविधान में मुख्य न्यायधीश की संख्या 1 व अन्य न्यायधीशों की संख्या 7 है।
- वर्तमान में सर्वोच्च न्यायालय में कुल न्यायाधीशों की संख्या 31 है।
- सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायधीश की नियुक्ति तथा अन्य न्यायधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है।

40. राज्यसभा का सभापति कौन होता है ?
Who is the Speaker of Rajya Sabha ?
(A) उप-राष्ट्रपति/The Vice-President
(B) विपक्ष का नेता/The Leader of opposition
(C) गृह मंत्री/The Home Minister
(D) राज्यसभा के सदस्यों द्वारा निर्वाचित व्यक्ति/The person elected by the members of Rajya Sabha

40. (A) राज्य सभा भारतीय लोकतन्त्र की ऊपरी प्रतिनिधि सभा है।
- भारत के उपराष्ट्रपति राज्यसभा के सभापति होते हैं।
- वर्तमान उपराष्ट्रपति बैंकेया नायडू।
- राज्यसभा का पहला सत्र 13 मई, 1952 में प्रारंभ हुआ था।
- वर्तमान समय में मल्लिकार्जुन खड़गे राज्यसभा के विपक्ष नेता हैं।

41. पृथ्वी का सबसे बड़ा महाद्वीप है–
The largest continent of the world is
(A) अफ्रीका/Africa
(B) उत्तरी अमेरिका/North America
(C) एशिया/Asia
(D) अन्टार्कटिका/Antarctica

41. (A) महाद्वीप एक विस्तृत जमीन का फैलाव है, जो पृथ्वी पर समुद्र से अलग दिखाई देता है।
- पृथ्वी के जो 7 सबसे बड़े ठोस सतह के टुकड़े हैं उन्हें महाद्वीपीय कहा गया है।
- एशिया
- अफ्रीका
- दक्षिणी अमेरिका
- अंटार्कटिका
- यूरोप
- ऑस्ट्रेलिया

सबसे बड़ा महाद्वीप एशिया तथा सबसे छोटा महाद्वीप ऑस्ट्रेलिया है।

42. 'U' आकार की घाटी निर्मित होती है–
'U' shaped valley is formed by
(A) नदियों द्वारा/rivers
(B) हिमानी द्वारा/glaciers
(C) हवाओं द्वारा/winds
(D) भूमिगत जल द्वारा/underground water

42. (B)
- U आकार की घाटी का निर्माण हिमनदी द्वारा होता है और इसका नामकरण अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर U के आधार पर हुआ है।
- अपरदन के कारण इस प्रकार की घाटी का निर्माण होता है।
- उत्तरी अमेरिका में माउण्ट हुड के इलाके में एक यू–आकार की घाटी पायी जाती है।

43. परतें किन चट्टानों में होती हैं ?
In which rocks are layers formed ?
(A) आग्नेय/Igneous
(B) रूपान्तरित/Metamorphic
(C) अवसादी/Sedimentary
(D) इनमें से सभी/All of these

43. (C)
- धरातल के अन्दर स्थित संगठित पदार्थ जिसका निर्माण भौतिकी तथा रासायनिक तत्वों के संयोग से होता है।

चट्टानें तीन प्रकार की होती हैं–
1. आग्नेय
2. अवसादी
3. कायान्तरित/रूपान्तरित।

अवसादी चट्टान–इन चट्टानों का निर्माण अवसादों के जमाव से होता है। इसमें अवसादों की कई परतें पायी जाती हैं जिस कारण इन्हें परतदार चट्टानें कहा जाता है।
उदाहरण–बालू का पत्थर चूना पत्थर, कोयला, जिप्सम, डोलामाइट।

44. वायुमण्डल की सबसे निचली परत है–
The lowest layer of atmosphere is
(A) समतापमण्डल/Stratosphere
(B) क्षोभमण्डल/Troposphere
(C) ओजोनमण्डल/Ozonosphere
(D) आयनमण्डल/Ionosphere

44. (B) पृथ्वी को घेरती हुई जितने स्थान में वायु रहती है उसे वायुमण्डल कहते हैं। वायुमण्डल का घनत्व ऊँचाई के साथ–साथ घटता जाता है। वायुमण्डल को 5 विभिन्न परतों में विभाजित किया गया है।
- क्षोभमण्डल
- समतापमण्डल
- मध्यमण्डल
- तापमण्डल
- बाह्यमण्डल
- क्षोभमण्डल वायुमण्डल की सबसे निचली परत है। सबसे ऊपरी परत बाह्यमण्डल है।

45. विश्व में सर्वाधिक लवणता वाला सागर है–
The sea having maximum salinity in the world is
(A) लाल सागर/Red Sea
(B) अरब सागर/Arabian Sea
(C) मृत सागर/Dead Sea
(D) बाल्टिक सागर/Baltic Sea

45. (C) लवणता पानी में नमक या लवण की मात्रा को कहते हैं।
- मृत सागर को 'साल्ट सी' कहा जाता है।
- यह दक्षिण–पश्चिमी एशिया में इजराइल और जॉर्डन के बीच एक लैंडलॉक नमक झील है।
- मृत सागर में सबसे अधिक लवणता होती है।

46. भारत का कौन-सा प्रदेश प्राचीन गोंडवाना भू-भाग से सम्बन्धित है ?
Which region of India is associated with ancient Gondwana landmass ?
(A) हिमालय/Himalaya
(B) गंगा का मैदान/Ganga Basin
(C) थार मरुस्थल/Thar Desert
(D) दक्षिण का पठार/Decccan Plateau

46. (D) गोंडवाना महाद्वीप एक ऐतिहासिक महाद्वीप था।
- गोंडवाना महाद्वीप का नाम एडुअरड सुएस ने भारत के गोंडबाना क्षेत्र के नाम पर रखा था।
- आज से 13 करोड़ साल पहले गोंडवाना महाद्वीप के टूटने से ऑस्ट्रेलिया

अंटार्कटिका और भारत उपमहाद्वीप का निर्माण हुआ था।

- भारत का हिमाचल प्रदेश प्राचीन गोंडवाना भू–भाग से सम्बन्धित है।

47. सुन्दरी वृक्ष किस प्रकार के वनों में पाया जाता है?

In which type of forest is Sundari tree found?

(A) ज्वारीय वन/Tidal forest
(B) शीतोष्ण वन/Temperate forest
(C) मरुस्थली वन/Desert forest
(D) भूमध्यसागरीय वन/Mediterranean forest

47. (A) मैंग्रोव ज्वारीय वन ज्वार से प्रभावित तटों के क्षेत्रों में पाये जाते हैं।

- सुन्दरी वृक्ष मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल में पाये जाते हैं।
- सुन्दरवन मैंग्रोव दुनिया में ज्वारीय लवण मृदोद्विद मैंग्रोव तक का सबसे बड़ा एकल खण्ड है।
- गंगा नदी के सुन्दरवन डेल्टा में उगने वाला हैलोफाइट पौधा है।

48. उत्तरी भारत में शीतकालीन वर्षा का कारण है–

The cause of winter rainfall in Northern India is

(A) दक्षिणी पश्चिमी मानसून/South Western Monsoon
(B) पश्चिमी चक्रवातीय विक्षोभ/Western Cyclonic disturbances
(C) शीत लहर/Cold wave
(D) इनमें से सभी/All of these

48. (B) उत्तरी मैदानी इलाकों में ठण्ड के मौसम की एक विशिष्ट विशेषता पश्चिम और उत्तर पश्चिम से चक्रवाती विक्षोभ का प्रवाह है।

- पश्चिमी विक्षोभ एक निम्न दबाव प्रणाली के रूप में शुरू होता है। जो अटलाण्टिक महासागर और यूरोप के पास मध्य अक्षांश क्षेत्र में उत्पन्न होती है।
- सर्दियों के मौसम में वारिश विशेष रूप से गेहूँ सहित सभी रबी फसलों के लिए कृषि में मदद करती है, जो सबसे महत्वपूर्ण भारतीय फसलों में है।

49. सिन्द्री किसके उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है ?

Sindri is famous for the production of

(A) पेट्रो-रसायन/Petro-chemical
(B) सूती वस्त्र/Cotton textile
(C) रासायनिक उर्वरक/Chemical fertilizer
(D) सीमेण्ट/Cement

49. (C) सिन्दरी झारखण्ड राज्य के धनबाद जिले के नगरपालिका सीमा के भीतर एक औद्योगिक नगरी है।

- इसकी प्रसिद्धि यहाँ के उर्वरक कारखाने के कारण है। जो सन् 2002 में बन्द कर दिया गया।
- इसके अलावा यहाँ एसोसिएटेड सीमेण्ट कम्पनी (ACC), इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी (ISCO) है, जो स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड द्वारा संचालित है।

50. भाखड़ा-नांगल परियोजना किस नदी पर स्थित है ?

On which river is Bhakra-Nangal Project located ?

(A) सतलज/Satluj (B) गंगा/Ganaga
(C) रावी/Ravi (D) व्यास/Vyas

50. (A) भाखड़ा नागल परियोजना सतलज नदी पर बना है।

- यह बाँध दो बांधों भाखड़ा और नांगल बाँधों से मिलकर बना है।
- भाखड़ा बाँध नागल बाँध से 13 किमी दूर है।
- भाखड़ा बाँध का पानी पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान तथा हिमाचल जैसे राज्यों को मिलता है।

51. राजस्थान में सोयाबीन के प्रमुख उत्पादक जिले हैं–

The main soyabean producing districts of Rajasthan are

(A) गंगानगर–हनुमानगढ़/Ganganagar–Hanumangarh
(B) कोटा–बाराँ/Kota–Baran
(C) बूँदी–टोंक/Bundi–Tonk
(D) जयपुर–दौसा/Jaipur–Dausa

51. (B) सोयाबीन को 20वीं सदी के गोल्डन बीज के रूप में जाना जाता है। मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के बाद राजस्थान तीसरा सबसे प्रमुख सोयाबीन उत्पादक राज्य है।

- राजस्थान के बाराँ और कोटा प्रमुख सोयाबीन उत्पादक जिले हैं।
- राजस्थान का आकार एक अनियमित समान्तर असमचतुर्भुज या समचतुर्भुज जैसा दिखता है।

52. राजस्थान के किस जिले में टंगस्टन का उत्पादन होता है ?

In which district of Rajasthan is Tungsten produced ?

(A) भीलवाड़ा/Bhilwara
(B) उदयपुर/Udaipur
(C) नागौर/Nagaur
(D) जयपुर/Jaipur

52. (C) राजस्थान खनिज की दृष्टि से एक सम्पन्न राज्य है।

- राजस्थान को 'खनिजों का अजायबघर' कहा जाता है।
- टंगस्टन वुलफ्रेमाइट अयस्क से प्राप्त उत्पादक जिला नागौर ताँबा के उत्पादन जिला खेती, अभ्रक का उत्पादक जिला भीलवाड़ा।

53. वर्षा जल संग्रहण लाभदायक है–

Rainwater harvesting is beneficial for

(A) सिंचाई के लिए/Irrigation
(B) कृषि के लिए/Agriculture
(C) जल विद्युत उत्पादन के लिए/Production of hydroelectricity
(D) भूमिगत जल स्तर सुधारने के लिए/Improvement of underground water level

53. (D) वर्षा जल के संग्रहण, भण्डारण, संवहन और शुद्धिकरण द्वारा वर्षा जल के संरक्षण के लिए उपयोग की जाने वाली सरल प्रक्रिया या तकनीक है।

- यह भूमिगत जल स्तर की गुणवत्ता और मात्रा में सुधार करता है।
- यह मिट्टी के कटाव, तूफान के पानी के प्रवाह बाढ़ और उर्वरकों कीटनाशकों, धातुओं और अन्य तलछट के साथ सतही जल के प्रदूषण को कम करता है।
- इसका उपयोग पानी के मुख्य स्रोत के रूप में या कुआँ और नगरपालिका के पानी के बैकअप के स्रोत के रूप में किया जाता है।

54. राजस्थान में राष्ट्रीय राजमार्ग–15 पर स्थित नगर हैं–

In Rajasthan, cities located on National Highway No. 15 are

(A) बीकानेर–नागौर–जोधपुर–पाली/Bikaner–Nagaur–Jodhpur–Pali
(B) गंगानगर–बीकानेर–जैसलमेर–बाड़मेर/Ganganagar–Bikaner–Jaisalmer–Barmer
(C) जयपुर–अजमेर–उदयपुर–डूंगरपुर/Jaipur–Ajmer–Udaipur–Dungarpur
(D) जयपुर–टोंक–बूँदी–कोटा/Jaipur–Tonk–Bundi–Kota

54. (B) राजस्थान राज्य में 1,50,876 किलोमीटर का एक अच्छी तरह से जुड़ा हुआ नेटवर्क है, जो राजस्थान की लम्बाई और चौड़ाई से चलता है।
- राज्य का सबसे प्रसिद्ध राजमार्ग NH8 अजमेर, जयपुर, उदयपुर और चित्तौड़गढ़ जैसे प्रमुख शहरों में शामिल होता है।
- NH15 गुजरात की सीमा से शुरू सांचौर, बाड़मेर, शिव–देवी रोड जैसलमेर, पोखरण–फलौदी–कोलायत–बीकानेर–लूणकरनसर–सूरतगढ़, गंगानगर और पंजाब की सीमा पर समाप्त होता है।

55. अरावली का दूसरा उच्चतम शिखर है–
The second highest peak of Aravali is
(A) जरगा/Jarga
(B) सेर/Ser
(C) तारागढ़/Taragarh
(D) अचलगढ़/Achalgarh

55. (B) अरावली भारत के पश्चिमी भाग राजस्थान में स्थित एक पर्वतमाला है। जिसे राजस्थान में अरावली पर्वत के नाम से भी जाना जाता है।
- अरावली का सर्वोच्च पर्वत शिखर सिरोही जिले में गुरू शिखर 1727 भी जो माउण्ट आबू में है।
- दूसरी ऊँची चोटी सेर–सिरोही (1597 मी.)
- तीसरी ऊँची चोटी दिलवाड़ा–सिरोही (1442 m)

56. 1857 की क्रान्ति के समय कोटा का शासक कौन था ?
Who was the ruler of Kota during 1857 mutiny ?
(A) महाराव राम सिंह I/Maharao Ram Singh I
(B) महाराव राम सिंह II/Maharao Ram Singh II
(C) महाराव माधो सिंह I/Maharao Madho Singh I
(D) महाराव उम्मेद सिंह I/Maharao Ummed Singh I

56. (A) राजस्थान में क्रान्ति का प्रारम्भ नसीराबाद में 28 मई, 1857 को सैनिक विद्रोह से होता है।
- कोटा में क्रान्ति के समय महाराजा रामसिंह (प्रथम) थे।
- राजस्थान में 1857 की क्रान्ति के समय छः सैनिक छावनी थीं–
- नसीराबाद–अजमेर
- ब्यावर–अजमेर
- नीमच–मध्य प्रदेश
- देवली–टोंक
- खैरवाड़ा–उदयपुर
- एरिनपुरा–पाली

57. प्रसिद्ध सालिम सिंह हवेली स्थित है–
The famous Salim Singh Haveli is situated at
(A) नवलगढ़ में/Nawalgarh
(B) मुकन्दगढ़ में/Mukandgarh
(C) पिलानी में/Pilani
(D) जैसलमेर में/Jaisalmer

57. (D) राजस्थान में जैसलमेर की हवेलियों को नगर कहते हैं।
- पत्थरों की कटाई एवं जालियों के लिए प्रसिद्ध हवेलियाँ जैसलमेर की हैं।
- पटवों की हवेली, सालिम सिंह की हवेली–जैसलमेर
- डागा की हवेली, कोठारी की हवेली सोहता की हवेली–बीकानेर
- पुण्य हवेली, पच्चिसा हवेली, लालचन्द ढड्डा की हवेली–जोधपुर।
- पोद्दार की हवेली, भगतों की हवेली, सोने चाँदी की हवेली–झुँझनू।

58. किस जिले में गौगामेढ़ी मेला लगता है ?
In which district is Gogamedi fair held ?
(A) बीकानेर/Bikaner
(B) गंगानगर/Ganganagar
(C) हनुमानगढ़/Hanumangarh
(D) चूरू/Churu

58. (C) गोगामेड़ी भारत के राजस्थान राज्य के हनुमानगढ़ जिले में स्थित एक गाँव है।
- गोगामेड़ी में भाद्रपद माह के कुष्णपक्ष की नवमी को गोगाजी देवता का मेला लगता है।
- यहाँ राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार से लाखों श्रद्धालु आते हैं।
- गोगादेव, गुरुभक्त, वीर योद्धा और प्रतापी राजा थे, वे गुरू गोरखनाथ के परम शिष्य थे।

59. वह किला, जिस पर अंग्रेज जनरल लार्ड लेक ने पाँच बार चढ़ाई की, किन्तु असफल हुआ है–
The fort where British General Lord Lake attacked five times, but failed is
(A) लोहागढ़, भरतपुर/Lohagarh, Bharatpur
(B) बाला किला, अलवर/Bala Fort Alwar
(C) मांडलगढ़, मांडलगढ़/Mandalgarh, Mandalgarh
(D) अचलगढ़, आबू/Achalgarh, Abu

59. (A) लोहागढ़ एक किला था जिसे महाराजा सूरजमल ने राजस्थान के भरतपुर में अपने राज्य की रक्षा के लिए बनवाया था।
- यह वह किला है जहाँ ब्रिटिश जनरल लार्ड लेक ने पाँच बार हमला किया लेकिन असफल रहा।
- किले को नष्ट करने के प्रयासों में ब्रिटिश सेना को हराकर हर बार जाटों ने इसे बचा लिया।

60. मेवाड़ प्रजा मण्डल के प्रथम अध्यक्ष थे–
The first President of Mewar Praja Mandal was
(A) माणिक्य लाल वर्मा/Manikya Lal Verma
(B) बलवंत सिंह मेहता/Balwant Singh Mehta
(C) भूरेलाल बया/Bhurelal Baya
(D) रमेश चन्द्र व्यास/Ramesh Chandra Vyas

60. (B) प्रजामण्डल भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय रियासतों की जनता के संगठन थे।
- मेवाड़ प्रजामण्डल 24 अप्रैल, 1938 को माणिक्य लाल वर्मा द्वारा शुरू किया।
- इसके प्रथम अध्यक्ष–बलवंत सिंह मेहता (उदयपुर में)
- विजय लक्ष्मी पण्डित और जे.पी. कृपलानी ने भाग लिया।

❑❑